॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः ॥

सांवत्सरिक, चातुर्मासिक व पाक्षिक

प्रतिक्रमण-विधि

(राइय-देवसिक सहित)



प्रेरिका
भारत कोकिला शासन प्रभाविका पूज्य प्रवर्तिनीजी
स्व० श्री १०८ श्री विचक्षणश्रीजी महाराज



प्रकाशक एव द्रव्य सहायक
श्री सुखसागर सुवर्ण भंडार
विचक्षण भवन
शिवजीराम भवन
कुन्दीगर भैरों का रास्ता,
जयपुर

प्रकाशक :
श्री पुण्य सुवर्ण ज्ञान पीठ,
विचक्षण भवन,
कुन्दीगरो के भैरोजी का रास्ता,
जौहरी बाजार
जयपुर (राज.)

पुस्तक मिलने का पता—
प्रकाशक :
श्री पुण्य सुवर्ण ज्ञान पीठ,
विचक्षण भवन,
कुन्दीगरो के भैरोजी का रास्ता,
जौहरी बाजार
जयपुर (राज.)



श्री जिनदत्तसूरि मंडल
दादावाडी, विनयनगर
अजमेर ३०५००१

प्रथम आवृत्ति
३०००

मूल्य : छः रुपये

अगस्त, १९८१

मुद्रक :
प्रतापसिंह लूणिया
जॉब प्रिंटिंग प्रेस,
ब्रह्मपुरी, अजमेर।

विचक्षण वचनामृत

※ जब तक 'मम' नही गलता, तब तक 'मगल' प्रारम्भ नही होता।

※ जिसका 'भोजन' बाह्य रूप से नीरस होता है, उसका 'अन्तर' पौष्टिक, सरस और स्वास्थ्य-वर्द्धक होता है, आत्मकल्याणी होता है।

※ जो 'दुर्गति' की ओर ले जाये वही अपना 'दुश्मन' है, जो उसने 'बचावे' और सही दिशा निर्देश दे, वही अपना 'मित्र' है।

※ जहाँ मंगल की ओर बढ़ने हेतु 'परिस्थिति' न बदले वहाँ दृढ़ता-पूर्वक 'प्रकृति' बदलनी चाहिये—इसके लिये मन पर अनुशासन स्थापित करना होगा।

※ अन्तर का 'अलगाव' आनन्द का हेतु, मंगल का कारण, आत्म सन्तोष का सेतु बनता है।

※ जीवन में कटु क्षणो को 'सहना' सीखो 'कहना' नही।

※ प्रतिकूलता एवं संकटो का समता व आत्मबल से सामना करने से व्यक्ति महान् बनता है।

※ एक समाधिमरण अनेक असमाधिमरण को मिटाता है।

समर्पण

जैन शासन की महान विभूति, विश्वप्रेम प्रचारिका,
समन्वय साधिका, आत्म कल्याणी, वीर शासन प्रभाविका,
बाल ब्रह्मचारिणी, गुरुवर्या प्रवर्तिनी जी

श्री १०८ श्री विचक्षण श्रीजी महाराज सा०

आपका अवर्णनीय उपकार आत्म चैतन्यकारी, उपदेश,
जन्ममरण से मुक्त होने की सद्‌शिक्षा एवं मानव मात्र के लिये
अविरल मांगलिक आशीर्वचन एवं कल्याण भावना
हम सबका मार्गदर्शन करती रही है।

आज वह महान् विभूति हमारे मध्य नहीं है, परन्तु उनकी
चिरवांछित कृति, जिसके द्वारा समाज का हर वर्ग,
उच्च अफसर, शिक्षित नव्य पीढ़ी एवं आत्म कल्याण इच्छुक
मानव पावनतम पर्व तिथियों में प्रतिक्रमण कर
पुण्य अर्जित कर।
आज प्रस्तुत है, गुरुवर्या की पावन स्मृति को समर्पित है।
भविक जीव इससे लाभान्वित हों
स्वर्गात्मा के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करें
यही भावना है।

श्रावन पूर्णिमा
२०३८
अजमेर खरतरगच्छ उपाश्रय

भवदीया
(आर्या श्री) अविचल श्री
प्रधान विचक्षण मण्डल

प्रासंगिक

अनंत काल से अनेक योनियों मे परिभ्रमग करते हुए आत्मा को अनंत पुण्य के उदय से मानव जन्म, आर्य भूमि, जैन कुल आदि सर्व सामग्री प्राप्त होती है लेकिन यह प्राप्त होने के वाद भी मनुष्य प्राप्त सामग्री को प्रमोद के कारण उपेक्षा कर देता है और पांच इन्द्रियो के तेइस विषयों में लुब्ध होकर अपना जन्म निरर्थक गंवा देता है। अगाध समुद्र में पानी का बिन्दु डाल दिया परन्तु उस बिन्दु का कोई अस्तित्व नही रहता। इसी प्रकार अनंत ससार में पुण्य के उदय से मनुष्य जन्म आदि जो सामग्री मिली वह भी उस बिन्दु के समान अनंत संसार में समा गई और उसका कोई अस्तित्व नही रहा। प्रमाद में पड़े हुए संसारी जीवों की इस प्रकार की चेष्टा देखकर महान् अध्यात्म योगी श्री आनंदघनजी महाराज ने प्रमादी संसारी जीवों के प्रति करुणा दृष्टि से प्रेरित होकर कहा है कि—

'परम निधान प्रकट मुख आगले, जगत ओलघी जाय जिनेश्वर।
ज्योति विना जुओ जगदर्शीनो, अधोअंध पलाय जिनेश्वर॥

हमारे अनत उपगारी जिनेश्वर भगवंतों ने जगत् के जीवो के प्रति करुणा दृष्टि से प्रेरित होकर, मोक्ष मार्ग की प्राप्ति के साधनभूत परमनिधान जगत् के सामने रख दिया, फिर भी आत्मिक सुखों को देने वाले प्रतिक्रमणादि क्रिया रूप अमृत छोड़कर मृगजल जैसे क्षणिक सुखों की प्राप्ति के लिए सारे संसार को लांघ लिया। लेकिन उनकी दशा अधोअंध पलाय जैसी हुई।

तीर्थंकर भगवतों का अनत उपकार हमारे ऊपर है। दिन और रात्रि मे लगे सम्पूर्ण पापों का पालन करने के लिए महाप्रभु ने छे आवश्यक जिसमे रहे हुए हैं ऐसे प्रतिक्रमण को उभयकाल करने के लिए कहा है। जैसे कि पक्खी सूत्र मे कहा है कि "नमो तेहि खमासमणाण जेसि इम वाइय छव्विह भावस्सय भगवत। तजहा समाइय[1], चउवीसत्थो[2], वदणय[3], पडिक्कमण[4], काउस्सग्गो[5], पच्चक्खाण[6] सव्वेहि य एएयम्मि छव्विहे आवस्सए भगवते कासुसे सवत्थे सगथे सुन्निजुसिए ससग हसिए। जे गुणा वा भावा अरिहते हि भगवते हि पन्नत्ता वा परुपिया वा॥"

अर्थ—नमस्कार हो उन क्षमाक्षमणो को जिन्होंने इनकी (आवश्यक की) रचना की है। वे छै प्रकार के आवश्यक इस प्रकार हैं—

१ सामायिक, २ चतुर्विशति स्तव(लोगस्स), ३ वादणा, ४ प्रतिक्रमण (लगे हुए दोषो की निन्दा है जिसमे ऐसा वदितुसूत्र), ५ कायोत्सग व ६ प्रत्याख्यान। ये छै प्रकार के आवश्यक "ज वाइय पढिय परिवट्टिय पुच्छिय अणुप्पेहिय अणुपालिय त दुक्ख क्खायाए कम्म क्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए ससार तारण तारणाए।"

अर्थ—जिन्होंने पढा हो, दूसरे को पढ़ाया हो, परावर्ता हो, मूल सूत्र को याद किया हो, सन्देह मिटाने के लिए पूछा हो, अर्थ सभाला हो, शुद्ध पाला हो, वह सब दुःख क्षय के लिए, कर्म क्षय के लिए, मोक्ष के लिए, बोधिलाभ के लिए, ससार से पार उतारने के लिए होगा।

इस प्रकार से प्रतिक्रमण सूत्र जिसकी स्तुति श्रुत केवली भगवंतों ने की है, पापभीरू आत्मा को उभयकाल करना आवश्यक है।

जैसे कि शरीर के पोषण के लिए षटरस भोजन की आवश्यकता है वैसे ही आत्मा की पुष्टि के लिए छः आवश्यक की आवश्यकता है इसीलिए केवली भगवंतों ने उसका नाम आवश्यक सूत्र रखा है।

एकेन्द्रिय से लेकर पंचेद्रिय तक के जीवों को मन, वचन और काया से दुःख दिया हो, उन पापों का प्रायश्चित प्रतिक्रमण से होता है। इससे अपनी आत्मा मे लघुता और भद्रिकता का वास होता है। फलस्वरूप सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है और संसार परिमित होता है।

प्रतिदिन का प्रतिक्रमण यह ऐसी उत्तम भाव मंगल क्रिया है कि जिसमें मुग्ध होकर उल्लसित चित्त से यदि आत्मा उनका आस्वादन करे तो कर्मों के ढेर के ढेर क्षण में नाश हो जाते हैं। यदि व्याक्षिप्त चित्तरहित प्रतिक्रमण करे तो अन्यथा नहीं।

हमने यह पुस्तक जैन समाज के रत्न अजमेर के सुश्रावक श्रीमान् रामलालजी अमरचंदजी सा. लूणिया को अजमेर में ही छपवाने का अनुरोध किया और उन्होंने सहर्ष इस कार्य को स्वीकार किया। जॉब प्रिंटिंग प्रेस वाले सुश्रावक श्रीमान् जीतमलजी प्रतापसिंहजी लूणिया ने अन्य छपाई कार्य में व्यस्त होने पर भी

गच्छ के प्रति भक्ति से प्रेरित हो पुस्तक छापने का सहयोग दिया। प्रूफ सशोधन का कार्य श्री जिनदत्तसूरि मण्डल के प्रधान कार्यकर्त्ता श्रीमान् चादमलजी सा सीपाणी ने स्वीकार किया। लेकिन फिर भी आखरीप्रूफ सशोधन करने के लिए मेरे को जयपुर चातुर्मास होने से वहा भेजते थे। जयपुर मे भी जहा तक समय मिलता रहा वहा तक प्रूफ सशोधन करता रहा। बाद मे उपधान तप की आराधना कराने मे समय का अभाव रहा, अत कच्छ माण्डवी स्थित मेरे परम विद्वान मित्र श्री ईश्वरलाल भाई ने मुझे प्रूफ सशोधन कार्य मे सहयोग दिया।

इस तरह उपरोक्त महानुभावो के सहयोग से यह पुस्तक तैयार हुई। भव्य आत्मा इस पुस्तक का सुन्दर प्रकार से सदुपयोग कर अपनी आत्मा का कल्याण करें यही शुभ भावना है।

श्री जिनदत्तसूरिजी निर्वाण स्थल,
दादावाडी, अजमेर

गणि श्री बुद्धिमुनिजी महाराज के शिष्य
जयानन्द मुनि

श्री गुरुदेव स्तवन

(कव्वाली)

क्या हैं अपूर्व दर्शन, गुरुदेवजी तुम्हारे।
दुःख दूर कीजिये सब, हम भक्त हैं तुम्हारे ॥टेर॥
गुरु के बिना जगत में, है कौन मार्गदर्शक ॥
आया शरण में स्वामी, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥१॥
चिंतामणी से बढकर, मनच्छितार्थ दानी।
सानी न और जगमें, गुरुदेवजी तुम्हारी ॥२॥
हरि पूज्य जैन शासन, पावन प्रकाशकारी।
चाहूँ सदैव दर्शन, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥३॥

अजमेर दादावाडी मे प्रतिष्ठित

प पू प्रत्यक्ष प्रभावक जगम युग प्रधान दादा साहब



श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म सा ☐ श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म सा

विश्वप्रेमप्रचारिका, समन्वयसाधिका
अध्यात्मरस निमग्ना, शासन प्रभाविका, प्रवर्तिनीजी,

स्व. श्री विचक्षणश्रीजी महाराज का जीवन वृत्त

जन्म और मरण, सयोग और वियोग, यह नियति का अटल नियम है। उत्पत्ति के साथ ही विनाश का जन्म हो जाता है। कोई भी ऐसा प्रयोग, मन्त्र, तन्त्र किंवा औषध नही जिसके द्वारा इस क्षण विनश्वर शरीर को अमरत्व प्रदान किया जा सके। जन्म के साथ ही मरण की क्रिया चालू हो जाती है जो आज जन्मा है वह देर-अवेर मरेगा अवश्य। जिस शरीर को तीर्थंकर, चक्रवर्ती, सम्राट, पीर, पैगम्बर, अवतार जैसी शक्ति भी अमरत्व प्रदान करने मे अशक्त रही। इस नश्वर शरीर को स्थायित्व देना किसी की भी शक्ति से परे की बात है। हम देखते हैं यह शरीर बालक, किशोर, युवा होकर वृद्धत्व की ओर अग्रसर होते-होते सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाता है और चिता की भेंट कर दिया जाता है। सजन विसर्जन, उत्पत्ति-विनाश यह एक ऐसा नियम है जिसके चलते सारा परिश्रम व्यर्थ सिद्ध हो जाता है। विधि के इस नियम मे परिवर्तन करने की क्षमता किसी में न थी, न है, और न होगी।

ऐसी विनश्वर देह से जिन्होंने भी अमरत्व की साधना साधी, उन्होंने अपने आपको धन्य बनाया ही किन्तु अन्य प्राणियों के लिए भी वे साधना का सशक्त उदाहरण छोड़ जाते हैं। उनका जीवन अन्धकाराच्छन्न घोर अमावस्या की रजनी में आलोक भरने वाला ज्योतिपुन्ज बनकर युगों युगों तक भूली भटकी मानवता का मार्गदर्शन करता है। उनकी सानिध्यता पाने वाले, उनके नाम के साथ अपना नाम संलग्न कराने वाले, उनके युग मे जन्म लेने वाले, सभी भाग्यशाली होते हैं। वे ही युगप्रधान अपने युग का नेतृत्व करते हैं तथा संत महात्माओं की श्रेणी में भी वे ही गिने जाते हैं।

मरण में अमरत्व का दर्शन करवाने वाली, असत् में से सत् का स्वाद लेने वाली साधनाशील, उच्चकोटि की उज्जवल संत थी—हमारी परमाराध्य—साध्वी शिरोमणि, महत्तरा प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म० सा०। आपका व्यवहार पक्ष जितना उज्जवल उच्च कोटि का रहा उतना ही बल्कि उससे भी अधिक उच्च कोटि का उज्जवल पक्ष था आपका अध्यात्म जीवन, साधना पक्ष।

रुपया बाजार में तभी चलता है जबकि उसके दोनों पक्ष, दोनो पहलू सही हों। सरकार निर्णित छाप से युक्त हो—यदि जरासी भी कमी हो तो उसकी बाजार में एक नए पैसे जितनी भी कीमत नहीं होती। इसी प्रकार साधनाशील संत का जीवन किंवा जैन मुनि का जीवन, जिसके अध्यात्म और व्यवहार दोनों पक्षों समान समुन्नत हों वे लोकपूज्य बनते है।

जन्म और दीक्षा का सम्बन्ध

भारतीय धरातल पर प्रत्येक युग मे सन्त का उदय सुलभ रहा है। सन्त का जीवन स्वय की आत्मा के विकास का प्रतीक तो है ही किन्तु सन्त हजारो का मार्ग दर्शक भी वनता है। उसके विकसित जीवन का प्रभाव उसके निकट निवास करने वालो पर भी यथा पात्रता पडता है। उनके जीवन का हर क्षण व उसे प्राप्त हर क्षण स्वान्त सुखाय व जन हिताय होता है। ऐसे ही सन्तो की श्रेणी में स्थान बनाने वाली श्री विचक्षणश्रीजी महाराज थे जिन्होने अपने जीवन काल की प्रत्येक प्रक्रियायें साधक जीवन की अभिव्यक्ति दी।

ऐसी महान् आत्मा को बल देने का सोभाग्य श्रीमती रूपादेवी को मिला एव मूथा कुल को गौरवान्वित करने का अवसर पिता मिश्रीमलजी को मिला। मात्र ११ वर्ष की उम्र मे ये माता रूपादेवी के साथ श्री जतनश्रीजी म० सा० के कर कमलो से दीक्षित बनी व शिष्या-साध्वी शिरोमणि श्री स्वणश्रीजो म० सा० दोनो की कहलाई। इस बीच वैराग्य का बीज अकुरित होने को अवसर जयपुर नगरी मे तपोमूर्ति श्री स्वणश्रीजी० म० सा० के दर्शन के क्षणो मे ही प्राप्त हुआ था। जिसको चार वर्ष की अवधि में बहुत ही पल्लवित पुष्पित रूप में परिजनो ने देखा। इनके मन को वदलने के अनेक प्रयत्न हुए उनमे इनके दादाजी का विशेष परिश्रम था क्योकि एक मात्र पोती का वैरागी जीवन की कल्पना से ही उनका मन विकल हो उठता था। प्रयत्न की

पराकाष्टा का आलम्बन सरकारी स्तर पर लिया, पर वहां भी निर्णायक उनके मन को प्रभावित करने की अपेक्षा स्वयं प्रभावित होकर इन्ही के पक्ष में निर्णय दिया ।

आर्यारत्न हमारी गुरुवर्या श्री विचक्षण श्री जी म० सा० का जीवन कितना साधना प्रेरक प्रगतिशील, स्व-पर उपक्रमी था, इसका आप आपके समस्त जीवन का अवलोकन करके सहज ही अनुमान लगा सकते हैं ।

वालक-वय जिस समय खाने पहनने की भी सुधि नहीं होती उस वय में आपने त्याग वैराग्य की वाते की । मात्र वारह साल की उम्र में घर बार स्वजन, स्नेहियो का अटूट प्यार छोड़कर दीक्षित वनी । रंगीन कल्पनाओं में, यौवन के उन्माद में, बेभान वनाने वाली उन्नीस वर्ष की अपरिपक्व वय में आपने शासन की वागडोर सम्भाली । संघ के नेतृत्व जैसा गुरुतर भार कन्धों पर वहन किया । शिष्याओं के नेतृत्व जैसी जिम्मेदारी उठाई और खूब निभाई । यौवन का जोश जिनका स्व-पर कल्याण में ही काम आया ।

भारत के कौने कौने में आपने उग्र विहार किया । सांसारिक मातु श्री विज्ञान श्रीजी म० सा० वृद्धत्व की ओर बढ़ रही थी फिर साथ रह आपको प्रेरणा देती रहती । शासन का राग आपकी रग रग में समाया था और उसीकी प्रभावना के लिए आपने न सोने की सुध ली और न ही की आराम की चिन्ता ।

समाज के कतिपय व्यक्तियो की दयनीय दशा को देख आपका अन्तमन दयार्द्र हो गया। आपने अपने प्रवचनो के माध्यम से प्रसुप्त मानवता को झकझोरा, सोते हुए को जगाया, भूलो को माग बताया, भटको को दिशा निर्देश दिया। अपनी पीयूषमय वाणी से झकृतवीरण के स्वरो ने समाज को जागृत किया और सिमट गई बिखरी हुई शक्तियाँ और भर गई हृदय मे पटी दरारें, जो असहाय थे उनको महायता दिलवाई। उस अमृतवाणी से ससार से घबराये प्राणियों को तृप्त किया। प्रेम, सगठन, परोपकार का बिगुल चारो ओर स्थान २ पर बजाया। उस वशी मे साम्प्रदायिकता की धुन न थी, वह जाति पाति से दूर समन्वयता के स्वरो से भरपूर थी।

भगवान् महावीर के नाम पर आप प्रत्येक परिस्थिति से जूझ पडती और सफलता पाकर ही दम लेती। शासन सेवा कार्यों मे न समय पर खाया न समय पर पीया और न ही आराम किया। हर सम्प्रदाय के व्यक्ति आपके प्रवचनों को श्रद्धा से श्रवण करते। फलस्वरूप स्थान स्थान पर आपको पदवियों से अलकृत किया गया। जयपुर श्री सघ ने आपको व्याख्यान भारती, मदसौर श्री सघ ने आपको विश्व प्रेम प्रचारिका तथा खाचरोद सघ ने समन्वय साधिका से विभूषित किया। सूरि सम्राट विजयवल्लभसूरिजी ने आपको जैन कोकिला ही कह दिया। अमरावती श्री सघ ने शासन प्रभाविका पद से सुशोभित किया। जैन शब्द पर तो क्या

जन जन के प्रति आपके हृदय मे प्रेम का सागर उमड़ पड़ता था। 'महावीर का प्यारा वह मेरा प्यारा' यह तो आपका मूल मंत्र था और उसी वीर के प्यारे के लिए आपके प्राण तक न्यौछावर थे।

एक घर की चिन्ता मे व्यक्ति परेशान हो जाते हैं तो जिनको हर घर की चिन्ता थी उनकी क्या हालत होगी। आपने समाज हित मे कई संस्थाओं का निर्माण करवाया। कई ऐसे व्यक्ति जिनका कोई आधार नहीं था। उनकी आधार आप थीं—दीन दुखी, गरीब अनाथ आपकी शरण में सुखपूर्वक जीवनयापन योग्य सम्बल पाते थे। आपके द्वार से कभी कोई खाली निराश नहीं लौटा। समुदाय यानी साध्वी संघ का नेतृत्व आपने खूब निभाया। आपकी निश्रा में दीक्षित वर्तमान में लगभग ४३ साध्वीजी हैं। अपनी दीक्षित शिष्याओं को काफी सुयोग्य, शिक्षित, व्यवहार कुशल बनाया। जो कई समुदायों में देश के कई भागों में अच्छा काम कर रही हैं।

चाहे कैसा भी व्यक्ति क्यों न आ जाये आपकी निभाने की कला कमाल की ही थी। कई प्रकृति भद्र, कई चिड़चिड़े, कई सीधे साधे आपकी शरण में आकर चिन्तामुक्त बनते थे।

कर्त्तव्यबोध भी आपका बेमिसाल था। कोई भी बीमार हो, वृद्ध हो, अशक्त हो आप उनको भरसक आराम पहुंचाती थी। भारत के कौने-कौने में आपका नाम गूँज उठा था।

आपकी शासन सेवा का शोर चारो ओर था। आपके मीठे व्यक्तित्व, अलौकिक प्रतिभा ने सर्वत्र आपको प्रशसा के फूल अर्पण करवाये। सिर आखों पर बैठाया। व्यवहार पक्ष को आपने खूब सम्भाला, खूब मांजा, चमकाया उन्नत किया तथा खूब वाहवाही लूटी। मान सम्मान का पार नही था। अब आपकी उत्तरावस्था का समय शुरू हुआ। अध्यात्म का पहलू उजागर होने का समय आया। आप रायपुर का चातुर्मास करके दादा मणिधारी अष्टम शताब्दी पर दिल्ली पधारीं, वहा से पैदल सघ के साथ आप हस्तिनापुर पधारी। वहा आप लगभग तीन मास विराजी। ये तीन मास आपकी आत्म साधना के मास रहे। आपकी भावना यहा ही साधना पूर्ण चातुर्मास करने की रही। पर दिल्ली सघ के अपरिहार्य आग्रह ने दिल्ली की ओर प्रयाण करवाया। होनी ने अपना रूप दिखाया। दिल्ली पहुँचते पहुचते गाजियाबाद के पास सांसारिक मातुश्री विज्ञानश्रीजी म० सा० पर लकवे ने आक्रमण किया। इस हेतु आप चार साल दिल्ली विराजी। तथा जयपुर श्री सघ की विनम्र विनती को मान देकर आपने साध्वीजी श्री अविचलश्रीजी, मणिप्रभाश्रीजी, मुक्तिप्रभाश्रीजी, विजय प्रभाश्रीजी, निरजनाश्रीजी, भाग्ययशाश्रीजी का चतु मासार्थ जयपुर भेजा। श्रद्धेयजी की सेवा मन-तन से इतनी व्यवस्थित हुई कि देखने वाले विस्मय-विमुग्ध थे। अन्तिम समय मे इतनी साधना कराई, ऐसा आत्मबल भरा कि सघ आश्चर्य विमूढ था।

दिल्ली के स्थिरवास की अवधि में आपने अपने उज्जवल मान महत्ता दिलाने वाले व्यवहार पक्ष को समेटना शुरू किया। आपके अपने शब्दों में दुकानदार प्रातः काल अपनी दुकान जमाता है, माल सजाता है, पूरा दिन तनतोड़ परिश्रम करता है, किन्तु ज्योंहो संध्या होने को होती है, वह अपना सारा सामान, बोरियां बिस्तर बांधकर घर जाने की तैयारी में लग जाता है। ग्राहक आता है तो कहता है। भाई देर हो रहा है अब घर जाने का समय हो गया है, मेरा घर वड़ा दूर है, रात हो जायगी तो मार्ग मे चोर लुटेरों का अलग भय है। बस इसी कथनानुसार आपने भी अपना व्यापार समेटना शुरू किया, व्यवहार निभाने के साथ साथ अन्तरंग अध्यात्म साधना की गति अति तीव्र कर दी। रात्रि में १२-१ बजे तक आपका जाप चलता रहता, दिन में स्वाध्याय, आगन्तुकों को आत्मज्ञान का उपदेश चलता। व्यर्थं बातें पहले ही जीवन में नहीवत् थी अब तो सर्वथा ही समाप्त हो गई। भाषा का उपयोग केवल वीतराग वाणी की प्रभावना बांटने मे ही होता। सभा, सोसायटी, व्याख्यान सभाएें ये तो दिल्ली में रोजमर्रा के काम थे, उनमें आपने जाना बंद कर दिया। प्रायः सभी में आपका शिष्या वर्ग निपुणश्रीजी, विनिताश्रीजी, तिलकश्रीजी, विज्येन्द्रश्रीजी, चन्द्रप्रभाश्रीजी, सुरंजनाश्रीजी आदि पहुँचता।

पूज्य विज्ञानश्रीजी म० सा० के स्वर्गवास पश्चात् आपने जयपुर की सड़क पर पांव बढ़ाये। पर शरीर ने साथ नहीं दिया। गोड़ों एव कमर ने चलने से इनकार कर दिया।

येन केन प्रकारेण आपने दिल्ली और जयपुर की दूरी पार की। आप अब तो पूरी-पूरी सावधान बन गई। जयपुर का चातुर्मास पूर्ण कर आप दादा जिन कुशलसूरि गुरुदेव की छत्र छाया मे मालपुरा पधारी। मालपुरा का चातुर्मास एकान्त आत्मसाधना का चातुर्मास रहा। साधनाकालीन जीवन व्यवहार मे चार चाद लगे। आपका सारा समय ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, आत्मचिन्तन में व्यतीत होने लगा। समाज की हलचलो से दूर शातिपूर्ण साधना मे मग्न बनी—मैंने देखा आपकी वर्तमान दिनचर्या मे जमीन आसमान का अन्तर था। अब तो अन्तर मे रट चुपचाप लगी थी मन की विश्रान्ति थी जो माहौल हर चातुर्मास मे बनता था, उसकी थोडी सी झाकी यहा नही थी। मात्र एक घण्टा भरे बाजार में व्याख्यान होता, वह भी आत्मा परमात्मा की बातो मे ही। फिर भी लोग बडे प्रभावित होते। जैन अजैन की भीड से बाजार भर जाता।

इसी चतुर्मास मे हमे पता चला कि आपकी छाती में गाठ है। हाला कि गाठ जयपुर से हो थी, पर कभी जिक्र नही किया। जयपुर से भक्तजन डाक्टर लाये। दौडधूप की। काफी अनुनय विनय की, डाक्टरो ने भय बताया, वेदना का सारा नक्शा सामने रखते हुए बताया, महाराजश्री आप आपरेशन करा लें वरना इतनी भयकर वेदना होगी जिसको सहन करना आपके बूते की बात नही होगी।

यह गाठ कॅसर की है—ऐसी वैसी नही। पर आपका दृढ निश्चयात्मक निर्णय था कि उपचार कराना ही नही।

वेदना को भोगकर ही समाप्त करना है। संघ ने आपको सह-मत करने की कोशिश की। पर आपके दृढ़ निश्चय के सामने सभी नत मस्तक रहे। कहां तो भक्तों के मनसूबे थे लन्दन, अमेरिका के डाक्टरों को बुलाने के और कहां भारत के डाक्टर ही हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। काम कर ही नही पा रहे थे। देह—ममत्व रहित मानस पर भक्तों की मोह मुग्ध प्रार्थना का कुछ भी असर नहीं था—कोमल हृदय आज ऐसो चट्टान बन गया था जिस पर भक्तों की प्रार्थनायें, शिष्याओं के आंसू कुछ भी असर करने में असमर्थ थे। आपका एक ही अटल निर्णय था कि उपचार नहीं कराना और अन्त तक यह निर्णय, निर्णय ही रहा। उग्रतम वेदना में भी शिथि-लता का नाम नहीं आया। भक्त पूरे समय मालपुरा और जयपुर के चक्कर लगाते रहे पर काम न बना, सो न बना।

आपकी साधना में वेग आता गया, ज्वार उमड़ता गया। मालपुरा से आप बिलाड़े की ओर प्रयाण करने हेतु जयपुर पधारी। आपका लक्ष्य अब साधना भूमियों पर ही रहने का बन गया था। जयपुर के भक्तों ने मार्ग रोका, आगे नही जाने देंगे। सबके मन में भय था। कैंसर जैसी भयंकर जानलेवा व्याधि और बिलाड़े जैसा गांव, जहां कोई साधन नहीं कोई सुविधा नही। अपने सिरताज को यूं जंगल में कैसे जाने दें। आग्रह ने सीमोलंघन किया, आप जयपुर मजबूरन रुकीं, रुकी क्या रुकना पड़ा भक्तो के वश भगवान् आए। आपने शर्त रखी, आप लोग कभी भी उपचार

के लिए मुझे विवश नहीं करेंगे। अब आप जयपुर विराजीं जो विराजी रह गई।

आपकी साधना निखरती गई, दूर दूर से भक्तो की टोलिया उमड़ने लगी एव जयपुर सघ तन, मन, धन से सेवा मे लगा। आपके लगातार तीन चतुर्मास जयपुर हुए जिसमे दो शहर मे, अन्तिम एक दादावाडी मे।

व्याधि का रूप उग्र से उग्र तम होता गया, आपका आन्तरिक रूप निखरता गया। अतर में प्रभु नाम की धुन, आत्मदेव की आराधना मे समस्त समय व्यतीत होने लगा। गाठ बढने लगी। छोटे तरबूज जितनी बडी गाठ तनाव से भरपूर, ताम्रवर्णी रग उसके ऊपर एक टेढी-मेढी पके आम जितनी और गाठ। उस गाठ पर छालानुमा कई व्रणा, व्याधि का भरपूर जोर था। इधर समता, शान्ति, सहनशीलता की सीमा नही थी। रात रात भर नीद नहीं आती। खाना-पीना छूटने लगा, अन्न तो सर्वथा आपने बन्द ही कर दिया। जो भी व्यथा थी भयकर थी, पर आपने उसे शान्ति के साथ भोगने की ठान ली थी। एक ही लक्ष्य था—आत्मज्ञान द्वारा इस उपसर्ग-परीषह पर विजय पाना। वेदना, समता और शान्ति के सामने नत हो रही थी। गाठ अब फूटेगी, तब फूटेगी, चल रहा था। भीतर फूटेगी या बाहर कोई पता नहीं था। डाक्टरों के अनुमान गलत पड रहे थे वे कहते थे, शीघ्र फूटेगी, लेकिन छह महीने निकल गए।

कुमारी हेमलता को भावना मे वेग आया दीक्षा लेनी है तो देर क्यों? पू० महाराज सा० के हाथो ही दीक्षित

होना है। उतावलापन आया भावना ने जोर मारा मां पिताजी-पाचों भाई, भुआ, बहन, वहनोई जो अपने मत वाले थे—एकत्र हुए और एक दिसम्बर को दीक्षा का निर्णय हुआ। कुमारी सरला की भी भावना सफल और दोनों को दीक्षा बड़ी धूमधाम से उल्लास पूर्ण वातावरण में निपटी। आप श्री शुरू से अन्त तक दीक्षा उत्सव मे शामिल रही। पूरी क्रिया आपने कराई, आशोर्वाद स्वरूप दस मिनिट भाषण भी दिया। जनता समा नही रही थी। दादावाडी के सामने पूरी सडक मानव मेदिनी से भरी थी।

आपश्री उस दिन नीचे पधार कर ऊपर गई उसके बाद उतरने का सवाल ही न रहा। मानो व्याधि भी दीक्षा को प्रतीक्षा में कुछ रुकी थी। उसी दिन शाम को कमर पर जोरदार हमला हुआ। कमर के दर्द ने आपको विवश बनाया। इधर से उधर हो पाना भी मुश्किल हो गया। पर समता में कोई फर्क नही। उपचार की बात नहीं।

यों तो गांठ नवम्बर में फूट गई थी पर अब घाव बढ़ने लगा। १२ दिसम्बर को घाव में से खून की धाराये वहने लगी। गहरा ताजा खून जमीन पर वह रहा था। सेवार्थी देखने वाले, हम परेशान थे, घबड़ा रहे थे। गुपचुप डाक्टर महेता को फोन करवाया, वे तुरन्त आये। हमारे मन में आशा थो अब अवश्य उपचार की इजाजत मिलेगी। पर कहां, वहां तो वही शान्ति, वही इन्कार एवं आग्रह डाक्टर को क्यों बुलाया गया। खून का प्रवाह चला सो चला पूरा महीना

खून बहते बहते गुजरा परन्तु चेहरे पर एक शिक तक नही आई। "यह तो होना ही था। नया क्या होन है।" खून जाने के समय पट्टे पर शान्त भाव से ऐसे विराजी रहती मानो जाने वाला खून आपके शरीर का होकर कोई दीवार से बह रहा हो। जिसे आप शान्ति भाव से देखते रहे। जिनके लिए जीवन और मरण एक रूप बन चुका था। उनको खून से क्या फर्क पड़ता। एक दो व्यक्ति तो खून का रूप देखकर बेहोश भी हो गये। पर आप जिनके शरीर का खून जा रहा था, शान्त भाव मे पूरी सफाई अपने स्वय के निर्देशन मे मुनि धर्मानुसार करवाती परठवाती। ऐसे समय भी आने वालो को धर्म लाभ देना, उपदेश देना बराबर चालू था। पूरा दिन रात्रि मे १२ बजे तक भजन, धुन, जाप एव स्वाध्याय चालू रहता। पूरा दिन व रात्रि १२ बजे तक एक भक्ति भरा सभा बधा था।

हम लोग पूछते महाराज सा आपको पीडा नही होती। "होती है तो होने दो। शरीर अपना काम करता है, मैं अपना काम करती हूँ। यह तो होना ही था फिर घबडाने से क्या लाभ। आजाओ भाई कम राज आ जाओ, सब इसी भव मे पधार जाओ आगे बाकी मत रहना सारा कर्जा चुका लेना। अभी तो मैं देने की स्थिति मे हूँ ले जाओ सारा कर्जा ले जाओ" आदि कई वाक्य बोलती रहती।

कभी कभी भावना वश आद्रता होने से आने वालो को उपदेश के दो शब्द नही कह पाने का कष्ट था, "आने वाले

खाली जाते हैं—भाई दो शब्द दो इनको" बोलो—विचारो, कितना धन व्यय करते हैं, श्रम करते हैं, समय खर्च करते हैं तब कहीं यहां आते है, खाली मत भेजो, 'दर्शन की अन्तराय मत दो, आने दो मुझे कोई परेशानी नहीं" । परेशानी आने वाले ने उठाई है । "भावना मत तोड़ो" आदि अनेकों वाक्य आप के मुखार विन्द से निकलते, पीड़ा का ध्यान नहीं पर आने वालों का पूरा पूरा ध्यान स्नेह था ।

खून शरीर से सारा निकल चुका था । तन बदन में जलन होना स्वाभाविक था । कभी भी जरा भी अभिव्यक्ति नही की ।

इधर शहर शहर से, गांव-गांव से, प्रान्त-प्रान्त से भक्तों के टोले उमडे रहते थे । जयपुर संघ की भक्ति अपना अलग कमाल दिखा रही थी । भक्तों के खान-पान रहन-सहन की ऐसी व्यवस्था थी कि देखते ही बनता था ।

व्याधि ने गरदन पकड़ी रात दिन चौवीसों घन्टे नीचा सिर किये बैठी रहती । इधर कमर झुकी हुई थी । न सीधी बैठ सकती न लेट सकती । सिर किसी न किसी शिष्या के हाथ पर टिका होता । इस स्थिति में लगभग चार मास व्यतीत हुए । घाव गहरा होता गया । नसे खुलती गई, खून निरन्तर जाता रहा । सारा बदन सफेद पड़ गया ।

डाक्टर ने कहा महाराजजी आपरेशन करा लें । आपके घाव मे इतनी भारी दुर्गन्ध हो जायगी कि आपके पास खड़ा

होना तो दूर, मकान मे रहना कठिन हो जायेगा। आपने उत्तर दिया "समय पर देखेंगे अभी तो जैसा चलता है चलने दो।"

अन्त तक घाव रिसता रहा, खून मवाद आती थी, पर गध का नाम ही नही था।

मल्लम पट्टी घाव की, ड्रेसिंग घोना किरण बाई खजान्ची व मधु जैन ही करती थी। उन्होंने नस की ट्रेनिंग ली हुई थी। रात दिन जब भी जरूरत पडती वे एक पाव हाजिर थी। बडी शान्ति स्थिरता से घाव धोती पट्टी लगाती।

समय अपना काम करता गया आप अपना काम करती रही। समता के सामने विषमता का ठहरना भारी हो गया। वह बेचारी सिर पर पाव रखकर ही भागी सो भागी ही रह गई, लौट कर सामने भी न देखा।

एक दिन डाक्टर मेहता आये। पूछा महाराज सा कुछ कहना है। अरे अब तो मैं जीत गई, वास्तव मे आपकी जीत थी विषमता पर समता थी, व्याधी पर समाधि थी, भारी जीत थी। समता शान्ति की जीत के नगारे गूज उठे। विषमता को करारी हार थी।

ऐसे साधक को पाकर साधना धन्य थी, आराधना भाग्यशाली बनी थी व्याधि मे कमी का तो काम ही नही वरन बढती ही गई।

१८ अप्रेल, ८० को प्रात दस बजे आप पूज्य साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी की गोद में सिर टिका कर अर्ध लेटने की

अवस्था में थी। आर्य श्री मनोहरश्रीजी सीमंधर स्वामी का स्तवन सुना रही थी। मंजुलाश्रीजी विनिताश्रीजी आदि सभी साध्वीजी खड़ी थी भजन प्रार्थना चालू थी। वे अपना सिर ऊंचा करके उनकी ओर देखने लगी। धीरे से बोली—अहो-२ श्री सद्गुरु वाली प्रार्थना बोलो। प्रार्थना हुई, आपने पुनः देखा और बोली "आज मैं" पूरा वाक्य शरीर अशक्ति वश नहीं बोल पाई। आज मैं का अर्थ था मैं आज जा रही हूं। किसी ने पूछा दूध लेंगे—अरे बहुत पीया यह दूध, अब तो अमृत पिलाओ।

तीन मास से लगातार शारीरिक स्थिति बिगड़ी हुई चल रही थी। हम लोग दस महीने से वहां ही टिके थे– दो चार दिन की बात डाक्टर तीन मास से बराबर कर रहे थे। साढे ग्यारह बजे स्वांस की गति में तेजी आई। ११-४५ मिनिट पर सम्पूर्ण शिष्या मंडल पू. प्र. अविचलश्रीजी, विज्येन्द्रश्रीजी मनोहरश्रीजी सुदर्शनाश्रीजी, मजुंलाश्रीजी, आदि एव भक्तगण उपस्थित हो गये। अंतिम समय की आराधना त्याग प्रत्याखान करवाया। नवकार मंत्र की ध्वनि एव सीमंधर स्वामी की शरण की धुन प्रारंभ कर दी। अतिम साधना करते हुए स्वर्गवास हो गया। ११-५५ पर आपने नश्वर शरीर का त्याग कर प्रयाण किया। संघ निराधार खडा था। शिष्या परिवार जो पूरा का पूरा चातुर्मास से यहाँ ही विराजमान था। निराश, हताश, उदास अश्रु सिक्त नयनों से खडा था। पिंजरा पड़ा था– चह चहाने वाला पक्षी उड़ गया। बगीचा लगा था, पर बगीचे का माली आज चिर-गाढ निद्रा में सो गया था।

भक्तगण खडे बिलख रहे थे पर भगवान् सिधार गये थे। वातावरण मे गहरी करुणा व्याप्त थी। शोकाकुल जनमेदिनी उमड पडी। तार-फोन पर खबर गयी। मद्रास, बम्बई, इन्दौर, दिल्ली आदि अनेको स्थानो से भक्त गण कार, ट्रेन, प्लेन, से भागे आये पर हाथ मलने के सिवाय क्या बचा था यो भभी प्राय हर महीने १५ दिन मे आत ही थे।

दूसरे दिन प्रात वीर शासन सेविका, मार्गदर्शक, त्यागी प्र म सा हमारे भाग्यविधाता, की अर्थी उठी। मोहनबाडी की ओर चली, कलेजा फट रहा था। सबके दिल चूर चूर हो रहे थे, दादाबाडी जिसमे सदा मेला लगा रहा व १८ मास तक हलचल रही, वह अति वीरान थी, सूनसान थी। सभी कुछ था। सभी थे, पर जिससे आबाद थे वह एक प्राणी नही था तो कुछ भी नही था।

मोहनबाडी मे अग्नि सस्कार हुआ। चन्दन और नारियल का पार नही था। जनता का तो कहना ही क्या ? आपकी अन्तिम यात्रा मे हर वर्ग का जैन समाज सम्मिलित हुआ। काफी लम्बा भजन कीर्तन करता जुलूस चला। बोली लगाने की आपने मना की थी। अत खरतरगच्छ महासघ के अध्यक्ष ने अग्नि सस्कार किया। चिता की लपटें आसमान को छू रहीं थी। देखते ही देखते हमारे भाग्य विधाता का पार्थिव शरीर भस्म होकर भूमि मे मिल गया। दूसरे दिन तो चिता मे राख ही न मिली। लोग सारी राख बटोर कर ले गये।

दूसरे दिन शोक सभा मनाई गई, शोक सभा मे स्मारक की बात हुई। मोहनबाडी मे जहाँ काफी जमीन है, विचक्षण

कालोनी बसाना एवं सुन्दर समाधि बनाना। आदर्श नगर में स्कूल भवन का निर्माण कराना एव नवीन उपाश्रय भवन जो बारह लाख की लागत से बना, उसका नाम विचक्षण भवन रखना तय हुआ। वीर बालिका विद्यालय में, विचक्षण वाचनालय चालू करना—अजमेर में या अन्यत्र वृद्धाश्रम की स्थापना करना। इस प्रकार आपका जीवन आपके अनुरूप रहा व मरण भी आपकी शान के अनुरूप रहा।

आपका जीवन धन्य बना एवं अध्यात्म पक्ष उज्जवल रखने वाला समाज में समन्वयित-व्यवहार, आपकी स्मृति अमर बना गया।

श्री सघ को आपने भरपूर धर्म स्नेह दिया और संघ ने भी आपको भरपूर भक्ति दी।

लेखिका :

भंवरबाई 'भ्रमर' रामपुरिया, खुजनेर

अर्हम्

श्रीस्तम्भनपार्श्वनाथाय नमः ।

श्रीखरतरगच्छीय श्रावकों का

श्री प्रतिक्रमण-सूत्र

विधि-सहित ।

प्राभातिक सामायिक लेने की विधि ।

सब से प्रथम श्रावक और श्राविका पडिलेहण किये हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, पट्टा प्रमुख उच्च स्थान की प्रमार्जना करके ठवणी, स्थापनाचार्यजी, पुस्तक, माला आदि की स्थापना करे। बाद में कटासना, मुँहपत्ति, चरवला पास में ले सामायिक करने की जगह पूज कर बैठे, बाद बांये हाथ में मुँहपत्ति लेकर मुंह के सामने रखे और सीधा हाथ स्थापन की हुई पुस्तक आदि के सामने करके तीन नवकार गिने—

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं ।
णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं ।

णमो लोए सव्वसाहूणं ।

एसो पंचणमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो ।

मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

(इस प्रकार तीन नवकार गिने । यदि प्रतिष्ठित स्थापनाचार्यजी हो तो तेरह बोल से स्थापनाजी की पड़िलेहणा करे—)

(१) शुद्ध स्वरूप धारे, (२) ज्ञान, (३) दर्शन, (४) चारित्र, (५) सहित सद्दहणा-शुद्धि, (६) प्ररूपणा-शुद्धि, (७) दर्शन-शुद्धि, (८) सहित पांच आचार पाले, (९) पलावे (१०) अनुमोदे, (११) मनोगुप्ति, (१२) वचन-गुप्ति, (१३) कायागुप्ति आदरे ।

(पीछे चरवला मुंहपत्ति हाथ में लेकर गुरुजी को या स्थापना-चार्यजी को खडे हो कर वन्दन करे—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि ।

(इस प्रकार दो खमासमण देना, पीछे खड़े ही रहकर)

इच्छकार भगवन् ! सुहराई, सुहदेवसि सुख–तप शरीर निराबाध सुख–संयम–यात्रा निर्वहते हो जी ? स्वामि साता है जी ?

फिर खमासमण देना

१ अरिहंत के १२ गुण, सिद्ध भगवान् के ८ गुण, आचार्य महाराज के ३६ गुण, उपाध्याय महाराज के २५ गुण, साधु महाराज के २७ गुण, सब मिलाने से १०८ गुण होते हैं, और नवकारवाली मे १०८ मणके होते हैं । माला जपने से पंचपरमेष्ठि के गुणो का स्मरण होता है ।

(ऐसा कहकर, नीचे बैठकर, दाहिने हाथ को चरवले पर या नीचे रखकर, मस्तक नीचे नमाकर नीचे का सूत्र[1] बोले—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओ ह अब्भितरहं राइअखामेउ ? इच्छ, खामेमि राइअ। ज किंचि अपत्तिअ, परिपत्तिअ भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे सलावे उच्चासणे समासणे अतरभासाए उवरिभासाए, ज किंचि मज्झ विणयपरिहीण, सुहुम वा बायर वा, तुब्भे जाणह, अह न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(इस प्रकार बोल कर पीछे नीचे लिखे अनुसार बोलना—)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(ऐसा बोल कर मुहपत्ति की पडिलेहणा नीचे लिखे पच्चीस बोल मन मे बोलते हुए करे—)

१ सूत्र अर्थ साचो सद्दहूं, २ सम्यक्त्वमोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय, ४ मिश्र–मोहनीय परिहरु। ५ काम–राग, ६ स्नेह राग, ७ दृष्टि–राग परिहरु।

---

१ त्यागी और क्रियावान् गुरुवदन करने योग्य हैं, पासत्था (शिथिलाचारी) गुरु को वदन करने से कर्मो की निर्जरा नहीं होती केवल कायक्लेश और कर्मबन्धन होता है। आगम मे कहा है—"पासत्थाई वदमाणस्स नेव कित्ती न निज्जरा होइ कायकिलेस एमेव कुणई तह कम्मवध च"।

(ये सात बोल मुंहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये।)

१. ज्ञान-विराधना, २ दर्शन-विराधना, ३ चारित्र-विराधना परिहरुं। ४ मनो-गुप्ति, ५ वचन-गुप्ति, ६ काय-गुप्ति आदरुं। ७ मनो-दंड, ८ वचन-दंड, ९ काय-दंड परिहरुं।

(ये नो बोल दाहिने हाथ की पडिलेहण के समय कहना चाहिए—)

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरुं, ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरुं। ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरुं।

(अब नीचे लिखे पच्चीस बोलों से अंग की पडिलेहणा करें अर्थात् जिस अंग का नाम आवे उसी अंग को मुंहपत्ति से स्पर्श करें—)

१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ये तीन निलाडें मस्तके परिहरुं। १ ऋद्धिगारव, २ रसगारव ३ सातागारव ये तीन मुखे परिहरुं। १ मायाशल्य, २ नियाणशल्य, मिथ्यादंशन-शल्य ये तीन हृदये परिहरुं। १ क्रोध, २ मान, ये दोनों दाहिने कंधे परिहरुं। १ माया २ लोभ ये दोनों बायें कंधे परिहरुं। १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ये तीन बायें हाथ परिहरुं। १ भय २ शोक ३ दुगंछा ये तीन दाहिने हाथ परिहरुं। १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय ये तीन बांयें चरण परिहरुं

१ वायुकाय, २ वनस्पतिकाय, ३ त्रसकाय ये तीन दाहिने चरण परिहरु ।

(इस प्रकार मुहपत्ति की पडिलेहण करे। पीछे खडे होकर।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहु ? 'इच्छं' ।। इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' ।। इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(अब यहाँ हाथ जोड मस्तक नीचे नमा कर तीन नवकार गिने।)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच-णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! पसाय करी सामायिक दण्ड उच्चरावोजी'। ऐसा कह कर स्वयं तीन बार 'करेमि भंते' उच्चरे। यदि गुरु महाराज या कोई बड़े हों तो वे तीन बार उच्चरावें।)

करेमि भंते। सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए

काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? 'इच्छं' इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया । एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं बिसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं, दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं णमुक्का-

रेण न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहाँ एक लोगस्स या चार नवकार का कायोत्सर्ग करें।[1] पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहे—)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(फिर खमासमण दे कर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

---

१ इरियावहिय में अठारह लाख चोवीस हजार एक सो बीस (१८२४१२०) मिच्छा मि दुक्कडं की संख्या है।

ह्याए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणो संदिसाहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि : इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणो ठाउं 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि : इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। सज्झाय संदिसाहूँ ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि : इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि।

(इस प्रकार खमासमण देकर आठ नवकार गिने। शीत काल मे वस्त्र की आवश्यकता हो तो—)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पंगुरण संदिसाहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-

हिग्राए मत्यएग वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पगुरण पडिग्गाहु ? 'इच्छं' ।

(इस प्रकार दो खमासमण देकर वस्त्र ग्रहण करे । पीछे दो घड़ी (४८ मिनिट) स्वाध्याय ध्यान करे या प्रतिक्रमण करे ।

॥ इति सामयिक लेने की विधि ॥



राइय-प्रतिक्रमण विधि ।

(प्रथम पूर्वोक्त रीति से सामायिक ले कर पीछे—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करु ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कह कर बायां घुटना ऊँचा करके नीचे लिखे अनुसार) "जयउ सामिय०" बोलना ।)

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण । भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागयसंपइअ, वंदु जिण सव्वेवि ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ जिणवर बीस मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्स दुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥२॥ सत्ताणवइ सहस्सा लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । चउसय छायासीया, तिअ-

---

१ पौषध मे रहे हुए श्रावक कुसुमिण दुसुमिण का कायोत्सर्ग करके पीछे चैत्यवन्दन करते है ।

लोए चेइअ वंदे ॥३। वंदे नवकोडिसयं पणवीसं कोडि सयल तेवन्ना । अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपु डरीयाणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं॥४॥अभयदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं,सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खयमव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि यलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू,भरहेरवय-महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणाओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगल-कल्लाणआवासं ॥१॥ विसहर-फुलिगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स-गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ, पणामो वि बहुफलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपाय-वब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ! ॥५॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इच्छामि खमासमणो । वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण–दुसुमिण–राइयपायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? "इच्छं" कुसुमिण--दुसुमिण–राइयपायच्छित्तविसो–हणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं; वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेण न पारेमि, ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(यहाँ चार लोगस्स या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना। कायोत्सर्ग पारके नीचे मुजब प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहते कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वदे, सभवमभिणदण च सुमइ च। पउमप्पह सुपास, जिण च चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअल-सिज्जस-वासुपुज्ज च विमलमणत च जिण धम्म सति च वदामि ॥३॥ कुथु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमि-जिण च। वदामि रिट्ठ-नेमि, पास तह वद्धमाण च ॥४॥ एव मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्तिय वदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि, 'आचार्यजीमिश्र' ॥१॥

इच्छामि खमासमणो! वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-

आए मत्थएण वंदामि 'उपाध्यायजीमिश्र' ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि 'वर्तमान गुरु मिश्र' ॥३॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुमिश्र" ।

(इसके वाद दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, गोडाली आसन से वैठ कर, मस्तक नमा कर, बायें हाथ से मुंहपत्ति मुख के आगे रखकर सव्वस्सवि० बोले ।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चितिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं, ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडि-हयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं। बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-

मणत-मक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ—नाम-धेयं ठाणं सपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले। सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥१०॥

(१ सामायिकावश्यक)
(अब खडे हो कर बोलना)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए, काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचितिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,

जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि॥

(चारित्र विशुद्ध निमित्त यहाँ एक लोगस्स या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना, पीछे कायोत्सर्ग पार कर "लोगस्स०" कहना।)

[२ चतुर्विंशतिस्तवावश्यक]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरय-मला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जमाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-सचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-सचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-सचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दर्शनविशुद्धि के निमित्त एक "लोगस्स" या चार नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे नीचे मुजब "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना ।)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायईसडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स, सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वदे, पप्फोडिय मोहजालस्स ॥२॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणव-नरिंदगणच्चि-यस्स धम्मस्स सार-मुवलब्भ करे पमायं ? ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देव नागसु-

वन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिचए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(ज्ञानविशुद्धि निमित्त कायोत्सर्ग में 'आजूणा चउप्रहर रात्रिसम्बन्धी" इत्यादि आलोयणा का चितवन करें। यदि न आता हो तो आठ नवकार का कायोत्सर्ग करें। पीछे नीचे माफिक "सिद्धाणं बुद्धाणं" कहें।)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपर-गयाणं। लोअग्गमु-वगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे

महावीर ॥२॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

[३ वंदनावश्यक]

(इसके बाद प्रमार्जन पूर्वक बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहण करें, पीछे नीचे लिखे अनुसार दो बार वांदणा देवे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइवइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

आए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसिहि अहोकायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइवइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइयं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

[४ प्रतिक्रमणावश्यक]

(फिर खड़े होकर बोलना)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राइअं आलोउं? 'इच्छं'। आलोएमि जो मे राइयो अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्णं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्णं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

आजुणा चार प्रहर रात्रि में मैंने जिन जीवोंकी विराधना की होय, सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख

तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति-काय चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। कुल चौरासी लाख जीवायोनियों में से किसी जीव का मैंने हनन किया, कराया, या करते हुए का अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन काया से मिच्छा मि दुक्कड ॥ ॥

पहले प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पाचवा परिग्रह, छठा क्रोध, सातवा मान, आठवा माया, नवां लोभ, दशवा राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवा कलह, तेरहवा अभ्याख्यान, चौदहवा पैशुन्य, पंद्रहवा रति-अरति, सोलवा पर-परिवाद, सत्तरहवा माया मृषावाद, अठारवा मिथ्यात्व-शल्य, इन अठारह पाप स्थानों मे से किसी का मैंने सेवन किया, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन, काया से मिच्छा मि दुक्कड।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देव-गुरु धर्म की आशातना की हो, पन्नरह कर्मादानों की आसेवना की हो, राज-कथा, देश-कथा स्त्री-कथा, भक्त-कथा की हो, और जो कोई पाप पर निंदावि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए अनुमोदन किया हो सो सब मन, वचन, काया करके, रात्रि अतिचार आलोयण

करके पडिक्कमणा में आलोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(नीचे बैठके दाहिना हाथ चरवले या आसन पर रख कर बोलना।)

सव्वस्स वि राइअ दुच्चितिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! 'इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अब दाहिना घुटना ऊँचा करके 'भगवन् सूत्र पढू" 'इच्छं कह कर तीन बार 'नवकार', तीन बार 'करेमि भंते' और इच्छामि पडिक्क०' कह कर 'वंदित्तु सूत्र' बोले।)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरिआणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। ऐसो पंचणमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते! सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए

सामाइए, तिण्ह गुत्तीण चउण्ह कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाण तिण्ह गुणव्वयाण चउण्ह सिक्खावयाण बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

॥ वंदित्तुसूत्र ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे अ पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य, परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलगपाणाइवाय-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइ-

आरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा-रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूड-लेहे अ । बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ, आयरि-अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे-राइअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदार-गमणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो आणुव्वए पं-चमम्मि, आयरिअमप्पससत्थंम्मि । परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरियं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमंम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंम्मि अ मंसम्मि अ पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोग-परीभोगे, बीयम्मिगुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अप्पोलिदुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२१॥ इंगालीवणसाडी,-भाडो फोडो सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरसकेसविसविसयं ॥२२॥ एवं

खुजतपिल्लए, कम्म निल्लछण च दवदाण। सरदहतलायसोस, असईपोस च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्यग्गिमुसलजतग—तण-कट्ठे मतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअ सव्वं ॥२४॥ न्हाणुव्वट्टणवन्नग-विलेवणे सद्दरूवरस-गधे। वत्यासण आभरणे, पडिक्कमे राइअ सव्व ॥२५॥ कदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरणभोगअइरित्ते। दडम्मि अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ सथारुच्चारविही—पमाय तह चेव भोअणाभोए। पोसह-, विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्सजएसु अणुकपा। रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु सविभागो, न कओ तवचरणकरण-जुत्तेसु। सते फासुअदाणे, त निंदे त च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए, परलोए, जीविअ मरणे अ आससपओगे। पच-विहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसि-अस्स स व्वस्स वयाइआरस्स! ॥३४॥ वदणवयसिक्खागा,

खेसुसन्नाकसा यदंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइयारो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बन्धो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं ज । खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइय निंदिअगुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ-वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स—अब्भुट्ठिओमि-आरा-हणाए, विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउ-वीसजिणविणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्म दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाण करणे, किच्चाणमकरणे-पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंछिउ सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहो काय कायसंफासं। खमणिज्जो मे किलामो। अप्पकिलंताण बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं राइआए, आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो काय कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, राइ

वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तितीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब "अब्भुठ्ठिओमि०" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगाकर पढ़े)

अब्भुट्ठिओ सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ हं अब्भिंतर-राइअं खामेउं । 'इच्छं', खामेमि राइअं । जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर-भासाए, उवरि-भासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदणा देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे । राइ-वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च

मे ? खामेमि खमासमणो ! राइअ वइक्कमं । आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण राइआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालि-आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीह अहोकाय कायसफास । खमणिज्जो मे किलामो । अप्पकिलताण बहु-सुभेण भे राइअ वइक्कता ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअ वइक्कम्म पडिक्कमामि खमासमणाण, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छो-वयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(अब मस्तक पर अंजलि लगा कर बोलना ।)

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स

समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहियनियचित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठाइउं काउसग्गं । जो मे राइओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स, सावग-धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

"श्रीमहावीर स्वामी छैमासी तप चितवन निमित्त करेमि काउस्सग्ग"

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं, छीएणं जमाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(कायोत्सर्ग मे श्रीमहावीरस्वामीकृत छैमासी तप का चितवन करना। छै लोगस्स या चोवीस नवकार गिनना और जो पच्चक्खाण करना हो वह मन मे धार कर कायोत्सर्ग पारणा)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासु पुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं

दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

[६ पच्चक्खाण आवश्यक]

(अब छटे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहणा, फिर नीचे अनुसार दो वांदणा देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छो-वयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं काय-संफासं । खमणिज्जो भे । किलामो । अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए,

मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ सकल–तीर्थ–नमस्कार ॥

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणे-ध्वंस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वन्दे ॥१॥ वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वखारे कूटनन्दी श्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते। चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वन्दे ॥२॥ श्रीशैलेविन्ध्यशृङ्गे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले। सह्याद्रौ उज्जयन्ते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥३॥ आघाटे मेवपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वन्दे ॥४॥ श्रीमाले मालवे मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके

सिंहले केरले वा । हालारे कोशले वा विगलितसलिले जङ्गलेवा वमाले, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहंतत्रचैत्यानि वन्दे ॥५॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे सुगतजनपदे सत्यप्रयागे तिलङ्गे, गौडे चौडे मुरण्डे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे । आर्द्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे,श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥६॥ चम्पायां चन्द्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां,कौशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम् । नाशिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥७॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखर-ह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे । ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥८॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कौण्डले मानुषाङ्के । इक्षूकारेऽञ्जनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतु कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम् । तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारी ॥१०॥

(पीछे)

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसायकरी पच्चक्खाण कराओजी"

(ऐसा कह कर गुरुमुख से या वृद्ध सार्धमिक के मुख से या स्वय स्थापनाचार्य के सामने अपनी इच्छानुसार नमुक्कारसहिअ आदि का पच्चक्खाण कर ले)

जो सज्जन चौदह नियम स्मरण नही करते उनके लिये नमुक्कारसहिअ का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअ मुट्ठिसहिअ पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहार-असण, पाण, खाइम, साइम, अन्नत्थ-णाभोगेण, सहसागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तिया-गारेण वोसिरामि ।

जो सज्जन चौदह नियम प्रतिदिन स्मरण करते हैं उनके लिये नमुक्कारसहिअ का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअ मुट्ठि-सहिअ पच्चक्खामि चउ-व्विहंपि आहार-असण,पाण खाइमं,साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्व समाहि-वत्तिआगारेण, विगइओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, लेवा-लेवेणं,गिहत्थससट्ठेण उक्खित्त-विवेगेण,पडुच्च-मक्खिएण, पारिट्ठावणियागा रेण,महत्तरागारेण, देसावगासिय उव भोग-परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्त-रागारेण सव्व-समाहि-वत्तियागारेण वोसिरामि ।

(पोरिसी का पच्चक्खाण करना हो तो 'नवकारसहिअं' के स्थान पर 'पोरिसो' कहो। और उपवास एकासनादि पच्चक्खाण करना हो तो एक साथ पीछे लिखे हैं, वहां देख लें—)

इच्छामो अणुसंट्ठि नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः ॥

(यहां पर स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हों तो संसारदावानल' नीचे अनुसार कहें—)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम्। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदवीनीरपूराभिरामं जीवाऽहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३॥

अगर पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो नीचे मुताबिक 'परसमयतिमिरतरणिं' की तीन गाथा कहे—)

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम्। रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥१॥ निरुद्धसंसारविहारकारि-दुरन्तभावारिगणा निकामम्। निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २॥

सन्देहकारिकुनयागमरूढगूढ समोहपङ्कहरणामलवारिपूरम् । ससारसागरसमुत्तरणोरुनाव, वीरागम परमसिद्धिकर नमामि ॥३॥

नमुत्थुणअरिहताणभगवताण,, आइगराण तित्थयराण सय सबुद्धाण पुरिसुत्तमाण, पुरिस-सीहाण पुरिस-वर-पुंड-रीआण पुरीस-वर गधहत्थीण, लोगुत्तमाण लोग नाहाण, लोग-हिआण लोग-पईवाण, लोग-पज्जोअगराण, अभय-दयाण चक्खु-दयाण मग्ग-दयाण सरण-दयाण बोहिदयाण, धम्म-दयाण, धम्म-देसयाण धम्म-नायगाण, धम्म-सारहीण धम्म-वर–चाउरत–चक्कवट्टीण, अप्पडिहय–वर–नाण–दसणधराण, विअट्ट-छउमाण, जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण सव्वन्नूण सव्वदरिसीण सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाहमपुण-राविति सिद्धिगइ-नामेधेय, ठाण सपत्ताण । नमो जिणाण जिअभयाण ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले । सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥

(अब खडे होकर बोलना)

अरिहतचेइआण करेमि काउस्सग्ग, वदण-वत्तियाए, पूअण-वत्तियाए, सक्कार-वत्तियाए सम्माण-वत्तियाए, बोहि-लाभ वत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं जंभाइ-एणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-स्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्य." कहकर प्रथम स्तुति कहना—)

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नन्द। नव करतनु निरुपम, नील वरण सुखकन्द॥ अहि लंछन सेवित, पउमावई धरणिंद। प्रह उठी प्रणमुं, नितप्रति पास जिणंद॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-

मुत्तम दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहतचेइयाण करेमि काउस्सग्ग वदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण खासिएण, छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अग-सचालेहिं सुहुमेहिं खेल-सचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-सचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।

(एक नवकार का कायोत्सग करके दूसरी स्तुति कहना—)

कुलगिरि वेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम। मानुषोत्तर नदो रुचक कुंडल सुखठाम। भुवणेसर व्यतर, जोइस विमाणी नाम। वर्ते ने जिनवर, पूरो मुझ मन-काम ॥२॥

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-सडे अ जबुदीवे अ। भरहेरवय-विदेहे धम्माइगरे नमसामि ॥१॥
तम-तिमिर-पडल-विद्ध,—सणस्स सुर गण-नरिंद-महियस्स।

सीसाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥२॥ जाई-जरामरण-सोग-पणासणस्स । कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहा-वहस्स॥ को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स। धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे। देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए,पूअण-वत्तिआए,सक्कार-वत्तिआए,सम्माण-वत्तिआए,बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥५॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं-वाय-निसग्गेणं,भमलीए,पित्त-मुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का कायोत्सर्ग करके तीसरी स्तुति कहना)

जिहां अंग इग्यारे: बार उपांग छ छेद। दस पयन्नादाखया, मूल सूत्र चउ भेद॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त। सांभली सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥३॥

सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाण परपरगयाण । लोअग्गमुव-गयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाण ॥१॥ जो देवाणवि देवो, ज देवा पजली नमसति । त देवदेव-महिअ, सिरसा वदे महा-वीर ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्ध-माणस्स । ससारसागराओ, तारेइ नर व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाण निसीहिया जस्स । त धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वदिआ जिणवरा चउव्वीस । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥ ५ ॥

वेयावच्च-गराण सति-गराण, सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराण करेमि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ-ऊससिएण नीससिएण खासिएण, छीएण जभा-इएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहु-मेहिं अग-सचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-सचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-सचा-लेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण भगवताण नमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(एक नवकार का कायोत्सग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्य" कह कर चौथी स्तुति कहना—)

चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिय-वर-नाण-दंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं । नमो जिणाणं । जिअभयाणं । जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि-अलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

श्री सीमंधर—जिन—स्तवन

श्री सीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लालरे । परमपुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लालरे ॥ श्री० ॥१॥ केवलज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनन्त लालरे । भासक लोकालोक नो, ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लालरे ॥श्री०॥२॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लालरे । पद पंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लालरे ॥श्री०॥३॥ चरण-कमल पिंजर वसे, मुझ-मन-हंस नितमेव लालरे ।

चरण शरण मोहि आसरो, भव भय देवाधिदेव 'लालरे ।।श्री०।।४।। सवत अढार सत्यासीये, उत्तम मास आसाढ लालरे । सुद दसमी सुभ वासरे, बीकानेर मझार लालरे ।।श्री०।।५।। अधम उद्धारण छो तुम्हे, दूर हरो भवदु ख लालरे । कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लालरे ।।श्री०।।६।।

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ 'मम तुह पभावओ भयव ! । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल-सिद्धी ।।१।। लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण पूआ परत्थकरण च । सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखडा ।।२।।

अरिहतचेइआण करेमि काउस्सग्ग वदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएण, छीएणं, जभाइएण, उड्डुएण, वाय-निसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहि अग-सचालेहि, सुहुमेहि खेल-सचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठि-सचालेहि एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेण, झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(यहाँ एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य." कह कर श्री सीमंधरजी की स्तुति कहें।)

महीमंडणं पुण्णसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं। महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥१॥

(पीछे नीचे लिखे तीन खमासमणपूर्वक सिद्धाचलजी के सामने मुख करके सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन करें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं ॥

सिद्धाचल सेवु सदा, सहु तीरथ सिरदार।
सोरठ देश सोहामणो, तिहां ए गिरिवर सार ॥१॥
तीन भुवन विच एहवो, तीरथ कोई न होय।
सीमंधर वयणे करी, शेत्रुंज माहातम जोय ॥२॥
श्रीयुगादि जिनराजजी, समवसर्या इण ठाम।
तेहथी ए तीरथ वडो, अविचल सुखनो धाम ॥३॥
कार्तिक पूनम दश क्रोडसुं ए, द्राविड वारिखिल्ल जाण;
सिद्धिवधू रंगे वर्या, कृपाचंद मन आण ॥४॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं

सय-सबुद्धाण पुरिसुत्तमाण, पुरिस-सीहाण पुरिस-वर-पुंड-रीआणं, पुरिस-वर गंधहत्थीण, लोगुत्तमाण, लोगना-हाण, लोग-हिआण लोग-पईवाण लोग-पज्जोअगराण अभय-दयाण चक्खु-दयाण मग्ग-दयाण सरण-दयाण बोहि दयाणं, धम्म-दयाण धम्म-देसयाण, धम्म-नायगाण धम्म-सारहीणं धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीण, अप्पडि-हय-वर-नाण दसणधराण वियट्टछउमाण, जिणाण, जावयाण तिन्नाणं तारयाण बुद्धाण बोहयाण मुत्ताण मोअगाण सव्वन्नूण सव्वदरिसीण सिवमयलमरु अमणतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगई-नामधेय ठाण संपत्ताण । नमो जिणाण जिअभयाण जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरि-अलोए अ । सव्वाइ ताइ वदे, इह संतो तत्थ सताइ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाण ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ।

श्री पुंडरीक, गणधर नमु पुंडरगिरि सिणगार लालरे । पाच करोड मुनि परिवर्या, कीधो अणसण सार

लालरे ॥पुंड०॥१॥ आदिसर जिन उपविसे, ए तीरथ परसाद लालरे । सिव कमला तुमे पामशो, सहु मेहा विखवाद लालरे ॥पुंड०॥२॥ तीरथपतिमां हुं अछुं, प्रथम तीरथ इम जाण लालरे । प्रथम सिद्ध सिद्धाचले, तुम थास्यो महिराण लालरे ॥पुंड०॥३॥ मुनी आणा आदरी संलेखना चित्त लाय लालरे । चेत्री दिन सिवपुर लह्या, घाती कर्म खपाय लालरे ॥पुंड०॥४॥ यात्रा विधिसुं कीजिये, जिनजी दियो उपदेश लालरे । कृपाचंद गिरिराजनी, चाहे सेवा हमेश लालरे ॥पुंड०॥५॥

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल-सिद्धी ॥१॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण-पूआ परत्थकरणं च । सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणंउड्डुएणं वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज

मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताण भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि, ताव काय, ठाणेण मोणेण झाणेण, अप्पाण वोसिरामि।

(यहाँ एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य" कह कर श्रीसिद्धाचलजी की स्तुति कहना।)

पुंडरिकगिरि महिमा, आगममां परसिद्ध।
विमला चल भेटो, लहीये अविचल रिद्ध।
पंचम गति पहोता, मुनिवर कोडाकोड।
इण तीरथे आवी, कर्म विपातक छोड।

॥ इति राइय प्रतिक्रमण विधि संपूर्ण ॥

अथ पडिलेहन विधिः ।।

(अब स्थिरता हो तो नीचे लिखी विधि के अनुसार पडिलेहन करें। और स्थिरता न हो तो दृष्टि पडिलेहन अवश्य करें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहन संदिसाहुं ? 'इच्छं' ।।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहन करुं ? 'इच्छं' ।।

(यहां मुहपत्ति की पडिलेहन करना, पीछे पूर्वोक्त दो खमासमण फिर देकर धोती, दुपट्टा आदि की पडिलेहन करें। पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहन पडिलेहाओजी ।

(ऐसा बोलकर स्थापनाचार्यजी को पडिलेहन करें। पीछे—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ।।

(ऐसा कह कर यहाँ मुँहपत्ति पडिलेहना करे। पीछे—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसाह भगवन् ! उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं ।।

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहन करुं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कह कर कवल, वस्त्र आदि सब की पडिलेहन करें। पीछे पोषधशाला की प्रमार्जना करके काजा (कचरा) निरवद्य भूमि पर रख कर नीचे लिखे अनुसार इरियावहिय करें।)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्कमामि ? 'इच्छं'। इच्छामि पडिक्कमिउ, इरियावहिआए, विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया—एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया; ठाणाओ ठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

तस्स उत्तरी-करणेण, पायच्छित्त-करणेणं विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेण पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण, खासीएण, छीएणं जभाइएण, उड्डुएण वाय-निसग्गेण, भमलीए पित्त-मुच्छाए,

सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं-दिट्ठ-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना । पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सीज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए-अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया-जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिव-रमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

अथ सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसी-हिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहु ? 'इच्छं'।

(यहा सामायिक पारने के लिये मुंहपत्ति पडिलेहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारू ? 'यथाशक्ति'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि ? 'तहत्ति'

(ऐसा कहकर आधा अंग झुका कर 'तीन नवकार' गिनें। पीछे घुटने टेक कर, सिर झुका कर, दाहिना हाथ नीचे स्थापन करके नीचे मुताबिक 'भयव दसण्णभद्दो' बोल)—

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो, थूलभद्द वइरो य। सफली-कयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥१॥ साहूण वंदणेण, नासइ पाव असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईण ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय असुहं वायाए भासिय

किंचि । असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ।।४।। सामाइयपोसह संठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ।।५।।

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, इन बत्तीस दूषण में जो कोई दूषण लगा हो, उन सबका मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

।। इति सामायिक पारने की विधि ।।

इति प्राभातिक सामायिक-प्रतिक्रमण-विधिः सम्पूर्णः ।।

अथ सध्याकालीन सामायिक विधि

(दिन के अन्तिम प्रहर मे पौषधशाला आदि मे अथवा गृह के किसी एकान्त स्थान मे जा कर, उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहन करें। देरी हो गई हो तो दृष्टि पडिलेहन करें। साधुजी न हो तो तीन नवकार गिनकर स्थापना करें। पीछे स्थापनाचायजी के सामने बैठकर, भूमि प्रमाजन कर, बायी ओर आसन रखके और बायें हाथ मे मुँहपत्ति लेकर नीचे का पाठ कहे)—

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि ! इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहु ? 'इच्छ' ॥

(ऐसा कह कर मुँहपत्ति पडिलेहना, पीछे—)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि ! इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक सदिसाहु ? 'इच्छ'।

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ! इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? 'इच्छ' ॥

(खडे होकर तीन नवकार गिनें पीछे, "इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पसाय करी सामायिक दडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर तीन बार "करेमि भते" उच्चरे।)

करेमि भंते ! सामाइअं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

(यह तीन बार कहना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि। 'इच्छं'। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिया—एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया; ठाणाओ ठाणं संकामिया; जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वाय-निसग्गेणं, भमलीए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठि-सचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण, मोणेण, झाणेण, अप्पाण वोसिरामि।

(यहा एक लोगस्स या चार नवकार का कायोत्सग करना पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहते कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वदे, सभवमभिणदण च सुमइ च। पउमप्पह सुपास, जिण च चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदत, सीअलसिज्जस-वासुपुज्ज च। विमलमणत च जिण, धम्म सति च वदामि ॥३॥ कुथु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च। वदामि रिट्ठनेमि, पास तह वद्धमाण च ॥४॥ एव मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्तियवदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागर-वरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि! इच्छाकारेण सदिसह भगवन्! पच्चक्खाण लेवा मुहपत्ति पडिलेहु? इच्छ॥

(अब नीचे बैठकर मुँहपत्ति पडिलेहन करें और दो बार वांदणा दें। यदि चउविहार उपवास हो तो मुंहपत्ति नहीं पडिलेहना और वांदणा भी नही देना, परन्तु तिविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति पडिलेहे और वांदणा नही दें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्प-किलंताणं बहु-सुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ताभे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं। आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं। पडिक्कमामि। खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए

कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! "इच्छकारि भगवन् पसायकरि पच्चक्खाण करानाजी"।

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना।)

(१) चउव्विहाहार पच्चक्खाण।

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

(२) दुविहाहार पच्चक्खाण[1]।

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरइ।

(एकासणा, आयंबिल, तिविहार उपवास आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना—)

---

१ खरतरगच्छ की परम्परा में दुविहार के पच्चक्खाण में अन्य पानी के सिवाय और कुछ भी पीने की छूट नहीं है, और रात्रि में त्रिविहार के पच्चक्खाण भी नहीं होते।

(३) पाणहार पच्चक्खाण—

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं; महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

(नियम चितारने वाले देशावगासिय का पच्चक्खाण करे।)

(४) देसावगासिय पच्चक्खाण—

देसावगासियं भोगं–परिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि !

(अब खड़े खड़े आठ नवकार गिन कर पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणो संदिसाहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? 'इच्छं'।

(अब आसन बिछा कर बैठें और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोलकर वस्त्र ग्रहण करें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पगुरण संदिसाहुं ? 'इच्छं' !

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पगुरण पडिग्गहुं ? 'इच्छं'।

पीछे दो घड़ी [४८ मिनट] स्वाध्याय करें या प्रतिक्रमण करें।)

इति सन्ध्याकालीन-सामायिक विधि ॥



दैवसिक-प्रतिक्रमण-विधि

(पहले विधिपूर्वक सामायिक लेकर तीन खमासमण देना-)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । चैत्य-वंदन करूं ? 'इच्छं' ।

(बायाँ घुटना खड़ा कर जयतिहुअण का चैत्यवन्दन करें ।)

जय तिहुअण-वर-कप्परुक्ख, जय जिण धन्नंतरि । जय तिहुअण-कल्लाण-कोस, दुरियक्करि केसरि ! तिहुअण-जण-अविलंघिआण, भुवण-त्तय- सामिअ । कुणसु सुहाइं जिणेस पास, थंभणयपुर-ट्ठिअ ॥१॥ तइ समरंत लहंति झत्ति, वर-पुत्त-कलत्ताइ । धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण, जण भुंजइ रज्जइ । पिक्खइ मुक्ख असंख-सुक्ख, तुह पास पसाइण । इअ तिहुअण वर-कप्प-रुक्ख, सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥जरजज्जर परिजुण्ण-कण्ण, नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण । चक्खु-क्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिय सूलिण ॥ तुह जिण सरण-रसायणेण, लहु हुंति पुणण्णव । जय-धन्नन्तरि पास महवि, तुह रोग-हरो भव ॥३॥ विज्जा-जोइस-मंत-तंत-सिद्धिउ अपयत्तिण । भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तओ वि, जण होइ पवित्तउ । तं तिहुअण कल्लाण कोस, तुह पास निरुत्तउ ॥४॥

खुद्द-पउद्दाइ मंत-तंत-जंताइ विसुत्ताइ । चर-थिर-गरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउ-वग्गवि गंजइ । दुत्थिय-सत्थ अणत्थ-घत्थ, नित्थारइ दय करि । दुरियइं हरउ स पास-देउ, दुरिय क्करि-केसरि ॥५॥ जइ तुह रुविण कि णिवि पेय-पाइण वेलवियउ । तुवि जाणउ जिणपास तुम्हि, हउ अंगीकिरिउ । इय मह इच्छिउ जं न होइ, सा तुह ओहावणु । रक्खतह निय-किति रणेय, जुज्जइ अवहीरणु ॥ ६ ॥ एह महारिय जत्त देव,इहु न्हवण-महूसउ । जं अणलिय-गुण-गहण तुम्ह,मुणि-जण-अणिसिद्धउ॥एम पसीअ-सुपास-नाह थंभणय-पुर-ट्ठिय । इय मुणिवरु सिरि-अभयदेउ, विन्नवइ अणिंदिय ॥ ७ ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय-सुह-फलय, जय समत्थ-परमत्थ जाणय जय जय गुरु-गरिम गुरु । जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पास जिण, भवियह भीम-भवत्थु भय अवणिताणंतगुण, तुज्झ ति सञ्झ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-यराणं सय-संबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं पुरिस-वर पुंडरीआणं पुरीस-वर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोग-हिआणं लोग-पईवाणं लोग-पज्जोअगराणं, अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरण-दयाणं बोहि-दयाणं, धम्म-दयाणं धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं,धम्म-सारहीणं,धम्म-वर-चाउरंत-

चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं विअट्ट-छउ-माणं जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसोणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं। नमो जियाणं जिअ-भयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

(अब खडे होकर बोलना)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहि-लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभा-इएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं; भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं, खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-स्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा-ध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर पहली स्तुति कहना–)

सूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नन्दन, त्रिशलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लछंन, सात हाथ

तनु मान । दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं; वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए- अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए,सक्कार-वत्तिआए,सम्माण-वत्तिआए,बोहि-लाभ-वत्तिआए,निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए,मेहाए, धिईए, धारणाए,अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए,ठामि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग कर दूसरी स्तुति करना)

सुर नरवर किन्नर, वंदित पद अरविंद। कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद॥ भवियणने तारे, प्रवहण सम निशदिश। चोवीस जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस॥२॥

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ संडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुर-गण-नरिंद-महियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फो-डिअ-मोहजालस्स॥२॥ जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स। कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स॥ को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स। धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं?॥३॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे। देवं-नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए॥ लोगो जत्थ पइ-ट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ॥४॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए॥ पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं॥५॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेण, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-सचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-सचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग कर तीसरी स्तुति कहना)

अरथें करि आगम, भाख्या श्री भगवंत। गणधर ते गुंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनन्त॥ सुरगुरु पण महिमा, कही न शके एकन्त। समरू सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र-सिद्धान्त॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,उड्डुएणं,वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी स्तुति कहना)

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष। सहु संकट चूरे पूरे आश अशेष ।। अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद। जंपे गुणगण इम, श्रीजिनलाभसूरींद ।।४।।

(अब नीचे बैठ कर बांया घुटना खड़ा कर बोलना।)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयं-संबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं पुरिस-वर-पुंडरीआणं पुरिस-वर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोग-हिआणं लोग-पईवाणं लोग-पज्जोअगराणं, अभय-दयाणं चक्खु-दयाणं मग्ग-दयाणं सरण-दयाणं बोहि-दयाणं, धम्म-दयाणं धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं धम्म-सारहीणं धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं,

अप्पडिहय-वर-नाण-दसणधराण विअट्ट-छउमाण, जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताणं मोअगाण, सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताण। नमो जिणाण जिअ-भयाण। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सलिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(यहाँ चार एक एक खमासमण' देकर बोलना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्यएण वन्दामि 'आचार्यजी मिथ' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्यएण वंदामि 'उपाध्यायजी मिश्र' ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्यएण वंदामि 'आचार्यजी मिथ' ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्यएण वंदामि 'सर्वसाधुजी मिश्र' ॥ ४ ॥

(ऐसा कह कर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, बांया हाथ मुँहपत्ती सहित मुख के आगे रख कर सिर झुका कर 'सव्वस्सवि' का पाठ बोलना।)

सव्वस्सवि देवसिअ, दुच्चितिअ, दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खड़े होकर बोलना ।)

(१ सामायिक आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव-नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं । जो मे देवसिओ अईयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ उस्सुत्तो, उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचितिओ अणायारो, अणिच्छि-अव्वो असावग-पाउग्गो नाणे, दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्ह मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तारी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं विसल्ली-करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए,

पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं, अग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥

('आजुणा चार प्रहर दिवस' का पाठ मन मे चिन्तन करे या आठ नवकार का कायोत्सग कर पीछे प्रगट लोगस्स कहे ।)

(२ चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए-अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(३ वंदन आवश्यक)

(अब नीचे बैठे कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहन कर नीचे लिखे अनुसार दो वार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो । अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं। आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण—दुक्कडाए वय—दुक्कडाए काय—दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व—कालिआए सव्व—मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो । अप्प—किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं। पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए

कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व–कालिग्राए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खड़े होकर बोलना)

(४ प्रतिक्रमण आवश्यक)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिग्र आलोउ ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे देवसिग्रो अइग्रारो कम्रो, काइग्रो वाइग्रो माणसिग्रो उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाग्रो दुव्विचिंतिग्रो अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दसणे चरित्ता–चरित्ते सुए समाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आलोयण पाठ ।

आजुणा चार प्रहर दिवस मे मैंने जिन जीवो की विराधना की हो, सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख, तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पचेंद्रिय, चवदह लाख मनुष्य ।

एवं कुल चौरासी[1] लाख जीवायोनि में से किसी जीव का मैने हनन किया, कराया, या करते हुए का अनुमोदन किया वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पहले प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवां

---

१ चौरासी लाख जीवायोनी वर्णादि मूलभेद, कुलभेद

सात लाख	पृथ्वीकाय	२०००	३५०	७ लाख
सात लाख	अप्काय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	तेउकाय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	वायुकाय	२०००	३५०	७ ,,
दश लाख	प्र० वनस्पति,	२०००	५००	१० ,,
चौदह लाख	सा० वनस्पति,	२०००	७००	१४ ,,
दो लाख	वेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	तेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	चौरिन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
चार लाख	देवता	२०००	२००	४ ,,
चार लाख	नारकी	२०००	२००	४ ,,
चार लाख	तिर्यंच पं.	२०००	२००	४ ,,
चौदह लाख	मनुष्य	२०००	७००	१४ ,,

प्रथम (५) पांच वर्ण है, उन्हे (२) दो गंध से गुणने से १० हुए, उन्हे (५) पांच रस से गुणने से ५० हुए, उन्हें (८) स्पर्श से गुणने से ४०० हुए, उन्हे (५ आकृति) पांच संस्थान से गुणने वे २००० हुए, उन्हें (३५० ध्रुवाक) तीनसौ पचास पृथ्वीकाय के मूल भेद से गुणने के वाद पृथ्वीकाय की कुल (७००००० सात लाख) जीवायोनी होती है। इसी प्रकार अन्य भी समझना। इति चौरासी लाख जीवायोनी भेद।

मान, आठवा माया, नवमा लोभ, दसवां राग, ग्यारहवा द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवा अभ्याख्यान, चौदहवा पैशुन्य, पन्द्रहवा रति-अरति, सोलहवा पर-परिवाद, सत्तहवा माया-मृषावाद, अठारहवा मिथ्यात्व-शल्य; इन अठारह पापस्थानों मे से किसी जीव का मैंने सेवन किया, कराया, करते हुए का अनुमोदन किया वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देव-गुरु-धर्म की आशातना की हो, पन्नरह कर्मादानों की आसेवना की हो, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्त-कथा की हो, और जो कोई पाप पर-निंदादि पाप किया हो, कराया हो, करते का अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन, काया करके, दैवसिक-अतिचार आलोयण करके, पडिक्कमणा मे आलोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(नीचे बैठ कर दाहिना हाथ चरवले वा आसन पर रख कर सव्वस्सवि बोलना ।)

सव्वस्सवि देवसिअदुच्चितिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'इच्छं' । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब दाहिना घुटना खड़ा करके 'भगवन् ! वंदित्तु सूत्र भणुं ? 'इच्छं' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार, तीन बार 'करेमि भंते०' और इच्छामि ठामि० कह कर वंदित्तु० कहे।)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाण च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु (श्रावक प्रतिक्रमण) सूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि

पडिक्कमिउ, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, त निंदे त च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरभे। कारावणे, अ करणे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥३॥ ज बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्येहिं। रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्व ॥ ५ ॥ सका कख विगिच्छा, पसस तह सथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥ ६ ॥ छक्कायसमारभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव त निंदे ॥ ७ ॥ पचण्हमणुव्वयाण, गुणव्वयाण च तिण्हमइयारे। सिक्खाण च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्ये, इत्य पमायप्पसगेण ॥ ९ ॥ वह बध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्ये, इत्य पमायप्पसगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सा-रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिय सव्व ॥ १२ ॥ तइए अणुव्यम्मि, थूलगपरदव्वहरण-विरईओ। आयरिअमप्पसत्ये, इत्य पमायप्पसगेण ॥ १३ ॥

तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जम्मि अ मसम्मि अ पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ उवभोगपरीभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥ इंगालीवणसाडी। भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत-लक्ख-रसकेसविसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण–कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्मे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥ न्हाणुव्वट्टणवन्नग-विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभारणे, पडिक्मे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरणभोगअइ-

रित्ते । दढम्मि अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइय-वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही-पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । सते फासुअदाणे, त निंदे त च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आससपओगे । पचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्नाकसायदडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पाव समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बधो, जेण न निद्ध धस कुणइ ॥ ३६ ॥ त पि हु सपडि-क्कमण, सप्परिआव सउत्तरगुण च । खिप्प उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगय,

मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स-अब्भुट्ठिओमि आरा-हणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वन्दे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सूअं च धम्मो अ । सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥

एवमह आलोइअ, निंदिय गरहिय दुगछिअ सम्म । तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिणे चउव्वीस ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि अहोकाय कायसफास । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प-किलताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअ वइक्कम । आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निस्सीहि अहोकाय कायसफास । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प किलंताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअ वइक्कम पडिक्कमामि । खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं

किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(इसके बाद स्थापनाचार्यजी को या गुरु महाराज हो तो उनको घुटने टेक कर सिर झुकाकर 'अब्भुट्ठिओ' खमावें ।)

अब्भुट्ठिओ (गुरु क्षामणा) सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओहं अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं । इच्छं, खामेमि देवसिअं । जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर-भासाए, उवरि-भासाए, जं किंचि मज्झ विणय- परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर दो वांदणा देवे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि । अहोकायं काय-संफासं । खमणिज्जो मे किलामो । अप्प-किलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता मे ? जावणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं । आवस्सिआए

पडिक्कमामि। खमासमणाण देवसिम्राए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिम्राए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए म्रासायणाए जो मे म्रइम्रारो कम्रो तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि म्रप्पाण वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसी-हिम्राए। म्रणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि म्रहोकाय काय-सफास। खमणिज्जो भे किलामो। म्रप्प-किलताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो? जत्ता भे? जवणिज्ज च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिम्र वइक्कम पडिक्कमामि। खमासमणाण देवसिम्राए म्रासायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिम्राए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए म्रासायणाए जो मे म्रइयारो कम्रो तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि म्रप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खड़े होकर बोलना ।)

म्रायरिम्र-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे म्र। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस समणसंघस्स, भगवम्रो म्रजलि करिम्र सीसे। सव्व खमा-

वइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि।।२।। सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।३।।

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए समाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं विसल्ली-करणेणं पावाणं, कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए,

सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स या आठ नवकार का कायोत्सर्ग करना, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना)—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना, पीछे "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना—)

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडलविद्धं सणस्स सुर-गण-नरिंद-महियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाई-जर-मरण-सोग-पणासणस्स कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स। धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे।

देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं । धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुव-सग्ग-वत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणु-प्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥५॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमु क्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना, पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कहना)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं

वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का कायोत्सर्ग करना, पीछे "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कह कर 'सुअदेवया-' की स्तुति कहना)—

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा। श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेष श्रुत-सम्पदम् ॥१॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न

पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।।

(एक नवकार का कायोत्सग करना, पीछे 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य" कह कर 'खित्तदेवया' की स्तुति कहना ।)—

यासा क्षेत्र गता सन्ति, साधव श्रावकादय । जिनाज्ञा साधयन्तस्ता रक्षन्तु क्षेत्र-देवता ।।१।।

णमो अरिहताण । णमो सिद्धाण । णमो आयरियाण । णमो उवज्झायाण । णमो लोए सव्वसाहूण । एसो पच-नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसि पढम हवइ मगल ।।

(पच्चक्खाण आवश्यक)

(अब बैठ कर छट्ठे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहन करना । पीछे दो वादणा देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि अहोकाय कायसफास । खमणिज्जो मे किलामो । अप्प-किलताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअ वइक्कम । आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालि-

तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं। नमो जिणाणं जिअ-भयाणं । जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! स्तवन भणु ? 'इच्छं' । नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(यहां पर बड़ा स्तवन कहें और ग्यारह गाथा से कम कहे तो स्तवन के वाद 'वरकनक' कहें ।)

श्रीचिन्तामणि-पार्श्वजिन-स्तवन ।

भविका श्री जिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ।। भ० ।। जिनप्रतिमा जिन सारिखी जाणो, न करो शंका कांई । आगम वाणीने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ।। भ० ।।१।। जे जिनबिंब-स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहीं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ।। भ० ।।२।। अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक । विविध परे जिनभक्ति करता,

पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहुभक्ते जोता, होय निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्रकुमार रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मझार। ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरति प्रकार रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ पांचमे अङ्गे जिन प्रतिमानो, प्रगटपणे अधिकार। सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ दशमे अङ्गे अहिंसा दाखी, जिनपूजा जिनराज। एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगे। जो जो एहनो अरथ विचारी, छट्ठे ज्ञाता अङ्गे रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम जिन-वर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी। द्रव्य भाव बिहुं भेदे कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो। जिन प्रतिमा देखी नित नवलो। प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥भ०॥१०॥ चिन्तामणिप्रभु पास पसाये, सरधा होजो सवाई। श्रीजिन-लाभ सुगुरु उपदेशे श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥भ०॥११॥इति॥

ॐ वर-कणय सख-विद्दुम-मरगय-घण सन्निह विगय-मोह। सत्तरि-सय जिणाणं, सव्वामर पूइय वंदे-स्वाहा ॥१॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि। श्री आचार्यजी मिश्र। -

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री उपाध्यायजी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री सर्वसाधुजी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं, काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं,' देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं-वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना, पश्चात् कायोत्सर्ग पार कर प्रकट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस–

वासुपुज्ज च विमलमणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु । ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! खुद्दोवद्दव-उड्डावणत्थं-निमित्त करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना, पश्चात् कायोत्सर्ग पार कर प्रकट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं । विसहर-विस-निन्नासं, मंगल–कल्लाण–आवासं ॥१॥ विस-हर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ! ॥५॥

जय वीयराय ! जयगुरु !होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भव-निव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल-सिद्धी ॥१॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण-पूआ-परत्थकरणं च । सुहु-गुरु जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए, मत्थएण वंदामि ॥

सिरिथंभणयट्ठिय–पाससामिणो, सेसतित्थसामीणं । तित्थसमुन्नइ-कारणं- सुरासुराणं व सव्वेसिं ॥१॥ एसि-महं सरणत्थं काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स

सघस्स सुमुन्नयनिमित्त ॥२॥ श्रीथमण पार्श्वनाथजिन आराधणा निमित्त करेमि काउस्सग्ग ।

(अब खड़े होकर बोलना चाहिए)

वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहि लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्ति-आए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढ-माणीए, ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जंभाइएण उड्डुएण, वाय-निसग्गेण भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अग-सचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-सचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेणं न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वदे, सभवमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिणं च चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअलसिज्जस-

वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री चौरासी गच्छ शृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्री जिनदत्तसूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! श्री चौरासी गच्छ शृंगारहार जगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए

सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।१।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।४।। एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।५।। कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

(अब बायां घुटना ऊँचा करके चैत्यवंदन करें ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि

श्राए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्
चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

चउ क्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु । सरस-पियंगु-वण्णु गय-गामिउ, जयउ पासु भुवण-त्तय-सामिउ ॥१॥ जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि-किरणालिद्धउ । नं नव-जलहर-तडिल्लय-लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

अर्हन्तो भगवत इन्द्रमहिता. सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिता आचार्या जिन शासनोन्नतिकरा॰ पूज्या उपाध्यायका. । श्री-सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका, पञ्चैते परमेष्ठिन ः प्रतिदिन कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थ-यराणं सय-संबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं पुरिस-वर-पुण्डरीआणं पुरिस वर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोग-हिआणं लोग पईवाणं लोगपज्जोअगराणं, अभय-दयाणं चक्खु-दयाणं मग्ग-दयाणं सरण-दयाणं बोहि-दयाणं, धम्म-दयाणं धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं धम्म-सारहीणं धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण धराणं, विअट्ट-छउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं,

मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं। नमो जिणाणं, जिअ-भयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम-घण-मुक्कं। विसहर-विस-निन्नासं,मंगल-कल्लाण-आवासं॥ १॥विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। निर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ! ॥५॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं !

भव-निव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल-सिद्धि ॥१॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ गुरु-जण-पूआ परत्थकरण च । सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

लघुशान्ति स्तव

शान्ति शान्ति-निशान्त, शान्त शान्ताऽशिव नमस्कृत्य । स्तोतु शान्तिनिमित्त, मत्र पदै. शान्तये स्तौमि ॥१॥ ओमिति निश्चित वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥ सकलातिशेषक-महा सम्पत्ति-समन्विताय शस्याय । त्रैलोक्य-पूजिताय च नमो नम·शान्ति-देवाय॥ ३॥ सर्वामर सुसमूह-स्वामिक-सम्पूजिताय निजिताय । भुवन-जनपालनोद्यत-तमाय सतत नमस्तस्मै ॥४॥सर्वदुरितौघ नाशन-कराय सर्वाऽशिव-प्रशमनाय। दुष्ट-ग्रह-भूत पिशाच-शाकिनीना प्रमथनाय॥५॥यस्येति-नाम-मत्र-प्रधान वाक्योपयोग-कृततोषा । विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत त शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! अपराजिते ! जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ! ॥७॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र-कल्याण-मङ्गल-प्रददे । साधूना च सदा शिव-सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे ! जीया ॥ ८ ॥ भव्याना कृतसिद्धे ! निवृ त्ति-निर्वाण-जननि ! सत्त्वानाम् । अभय प्रदान-निरते!, नमोऽस्तु स्वस्ति-

प्रदे ! तुभ्यम् ॥९॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि ! । सम्यग्दृष्टीनां धृति–रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥१०॥ जिन-शासन-निरतानां,शान्ति-नतानां च जगति जनतानाम् । श्री-सम्पत्-कीर्ति-यशो–वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥११॥ सलिलानल-विष-विषधर-दुष्ट-ग्रह-राज-रोग-रण-भयतः।राक्षस रिपु-गण-मारी-चौरेति-श्वापदादिभ्यः ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम्॥१३॥भगवति ! गुण-वति ! शिवशान्ति, तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर–पुरस्सरं संस्तुता जया देवी । कुरुते शान्ति नमतां नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्व-सूरि-दर्शित-मंत्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः। सलिलादि-भय-विनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥१६॥ यश्चैनं पठति सदा, श्रृणोति भावयति वा यथायोगम् । स हि शान्ति-पदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं, सर्व-कल्याणकार-णम् । प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥इति॥

(प्रतिक्रमण में दीपक बिजली आदि अग्नि का प्रकाश अपने शरीर पर आ गया हो या वर्षा आदि के पानी की बूँद लग

गई हो इत्यादि कोई दोष लगा हो तो 'इरियावहिय०' तस्स उत्तरी० 'अन्नत्थ०' कह कर एक 'लोगस्स' का कायोत्सर्ग करके प्रगट 'लोगस्स' कह कर पीछे सामायिक पारे।)

सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहु ? 'इच्छं'।

(ऐसा कहके मुंहपत्ति को पडिलेहन करे। पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारु ? 'यथाशक्ति।'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि 'तहत्ति'।

(कह कर आधा अंग भुका कर तीन नवकार गिने। पीछे सिर भुका कर दाहिना हाथ नीचे स्थापन करके 'भयवदसण्णभद्दो' बोले।)

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वयरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं,

नासइ पावं असंकिया भावा । फासुअ-दाणे निज्जर, अभिग्ग हो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो । जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय–असुहं वायाइ भासियं किंचि । असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइयपोसहसंठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसार-फलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, इन बत्तीस दूषणों में जो कोई दूषण लगा हो उन सबका मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

इति दैवसिय–प्रतिक्रमणविधि समाप्तः ॥

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीय पादाब्जतले लुठन्ति ।
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

॥ इति संध्याकालीन-सामायिक-प्रतिक्रमणविधि समाप्तः ॥

॥ अथ पच्चक्खाण-सूत्राणि ॥



१ नवकारसहिअं-पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार–सहिअ मुट्ठि-सहिअ[१] पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहार, असणं, पाणं, खाइम, साईम, अन्नत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्ति-आगारेण, विगईओ पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थससिट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेण, पडुच्च–मक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरा-गारेण, देसावगासियं उवभोगो-परिभोग पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहि–वत्तियागारेण वोसिरइ ॥

---

१ यह पच्चक्खाण उनके लिये है जो प्रतिदिन चौदह नियम स्मरण करते हैं। सर्वत्र पच्चक्खाण में जहा जहा 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' पाठ आते हैं, वहा वहा यदि पच्चक्खाण स्वय बोलता हो तो 'पच्चक्खामि' और 'वोसिरामि' और दूसरा को पच्चक्खाण कराना हो तो 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' बोले। एवं 'लेवालेवेण' से पच आगार साधु के लिये हैं, गृहस्थ लिये नही हैं, इसलिये ये पच आगार गृहस्थ न बोले।

२. नवकारसहिश्रं [1]पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिश्रं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि श्राहारं-श्रसणं, पाणं, खाइमं, साइमं, श्रण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरइ ॥

३. पोरिसी-साड्ढपोरिसो-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिश्रं, पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे, चउव्विहंपि श्राहारं-श्रसणं, पाणं, खाइमं, साइमं; श्रण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,पच्छण्ण-कालेणं, दिसामोहेणं, साहु-वयणेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं; वोसिरइ ॥

४. पुरिमड्ढ-श्रवड्ढ-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं,वा पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं, श्रसणं, पाणं, खाइमं; साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहु वयणेणं, महत्त-रागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

५. एकासण-बिश्रासण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसि वा पच्चक्खाइ,उग्गए सूरे, चउव्विहंपि

---

१. यह पच्चक्खाण जो चौदह नियम स्मरण नही करता है उसके लिये हैं अर्थात् जो श्रावक नियम स्मरण नही करता हो वह नियम का श्रौर देसावगासिक का आगार नही पच्चक्खे ।

आहार-असण, पाण, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छण्णकालेण, दिसा-मोहेण, साहु-वयणेण, सव्व-समाहिवत्तियागारेण, एकासणं बिआसण वा पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहं पि आहार, असण, खाइम, साइम, अण्णत्थ-णाभोगेण, सहसागारेण, सागारिआगारेण आउंटण-पसारेण गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरइ ॥

६. एगलठाण-पच्चक्खाण

पोरिसि साड्ढपोरिसि वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार-असणं, पाणं, खाइम, साइमं, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण पच्छण्णकालेण, दिसा-मोहेण, साहुवयणेण, सव्व-समाहिवत्तियागारेण, एकासण एगट्ठाण पच्चक्खाइ, दुविहं, तिविहं, चउव्विहंपि आहार-असण, खाईम, साइम, अण्णत्थ-णाभोगेण, सहसागारेण, सागारिआगारेण, गुरुअब्भुट्ठाणेण, परिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सव्व-समाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥

७. आयबिल-पच्चक्खाण

पोरिसि साड्ढपोरिसि वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार-असण, पाण, खाइम साइम, अण्णत्थ-

१ यहां पर साधु के लिए एकासण, बिआसण, आयबिल, तीवि और तिविहार उपवास के पच्चक्खाण में छः आगार और होते हैं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा।"

णाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुव-यणेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसिट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं सागरिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठा-वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

८. निव्विगइय—पच्चक्खाण

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ; उग्गए सूरे चउ-व्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अणत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसा-मोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अणत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

९ चउव्विहार-उपवास-पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठ पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहार-असणं, पाणं खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१० तिविहाहार-उपवास-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहार-असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढ अवड्ढ वा पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

११ विगइ-पच्चक्खाण

विगईओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहि-वित्तयागारेणं[1] वोसिरइ ॥

१२. देसावगासिक-पच्चक्खाण।

देसावगासियं, उवभोग परिभोग पच्चक्खाइ, अन्नत्थणा, भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ ११-१२ ये दोना पच्चक्खाण प्रत्येक पच्चक्खाण के अंतिम पद 'वोसिरइ' के पहले और चौदह नियम धारता हो तो उच्चरं। जो चौदह नियम नहीं धारता हो तो ये दोना पच्चक्खाण न उच्चरे।

१३. दत्ति-पच्चक्खाण

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं-असणं पाणं, खाइमं-साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहु-वयणेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं, एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ, तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१४. दिवसचरिम-चउव्विहाहार-पच्चक्खाण

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१५. दिवसचरिम-दुविहाहार-पच्चक्खाण

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१६. पाणहार-पच्चक्खाण

पाणहार दिवस-चरिमं, पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं,

सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेण वोसिरइ ॥

१७ भवचरिम-पच्चक्खाण

भवचरिम पच्चखाइ, तिविह चउव्विहंपि आहार, असणं, पाणं, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहि-वत्तियागारेण वोसिरइ ॥

१८ गंठिसहिअ, मुट्ठिसहिअ और अंगुट्ठसहिअ, आदि अभिग्रह का पच्चक्खाण[1]

गंठिसहिअ मुट्ठिसहिअ वा पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तियागारेण, वोसिरइ ॥

॥ यदंध्रिस्तुति ॥

यदंध्रिनमनादेव, देहिन सति सुस्थिता ।
तस्मै नमोस्तु वीराय, सर्वविघ्नविघातिने ॥१॥

सुरपतिनतचरणयुगान् नाभेयजिनादिजिनपतीन्नौमि ।
यद्वचनपालनपरा, जलाञ्जलिं ददतु दुःखेभ्य ॥२॥

---

१ इस पच्चक्खाण में पांचवां 'चोलपट्टागारेणं' चोलपट्टा का आगार साधु के लिये होता है ।

वदंति वृन्दारुगणाऽग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः ।
गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे, तदंगिनामस्तु मतं तु मुक्तये॥३॥

शक्रः सुरासुरवरैस्सह देवताभिः,
सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः ।
श्रीवर्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् ।
भव्यान् जनान्नवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ

पाक्षिक—चातुर्मासिक-सांवत्सरिक-प्रतिक्रमण विधि ।

—–

दिन के अन्तिम प्रहर मे पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थान मे जाकर प्रथम सामायिक लेने के लिये उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहन करे । पीछे मुनिराज न हो तो उच्च स्थान पर पुस्तक या नवकारवाली आदि रख कर 'तीन नवकार' बोलकर स्थापनाजी स्थापन करे । बाद मे (पृ० २ मे लिखे अनुसार) तीन खमासमण देकर 'इच्छकार भगवान् ! ०' (सुखपृच्छा) पूछ कर 'अब्भुट्ठिओमि' खमाकर श्रीगुरुमहाराज को या स्थापनाचायजी को वदना करे। पीछे स्थापनाचार्य के सामने उकडु आसन (दोनो पर पर) बैठ कर भूमि प्रमार्जन कर बायें ओर आसन रख कर, चरवला मुँहपत्ति हाथ म लेकर (सामायिक लेवे) खमासमण दे—

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुँ ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कह मुँहपत्ति पडिलेहना, पच्चीस बोल कहकर पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !

सामयिक संदिसाहुं ? 'इच्छं' । इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' ॥

(हाथ जोड़ मस्तक नमा कर तीन नवकार गिने, पीछे—)

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी" ॥

(ऐसा बोलकर स्वयं तीन बार 'करेमि भंते' उच्चरे ।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि । इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणासंकमणे, जे मे जीवा विराहिया — एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया,

उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलिए, पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर एक 'लोगस्स' या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना। पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाण लेवा मुहपत्ति पडिलेहुँ? "इच्छं"॥

(अब नीचे बैठ कर मुहपत्ति पड़िलेहे और दो वार वांदणा दें। परंतु चउव्विहाहार उपवास हो तो मुँहपत्ति नही पड़िलेहे और वांदणा भी नही दे। तिव्विहाहार उपवास हो ता मुँहपत्ति पड़िलेहे परन्तु वांदणा नहीं दे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए

मायाए लोभाए, सव्व-कालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गह। निसीहि अहोकाय काय-सफास। खमणिज्जो मे किलामो। अप्प किलताण बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि-खमासमणो! देवसिअ वइक्कम पडिक्कमामि। खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥१॥

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना। तिविहाहार उपवास, आयंबिल, एकासणा आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना)

इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी। पाणहार दिवसचरिम पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं,

सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(पाणी बिलकुल न पीना होवे तो चउव्विहाहार पच्चक्खाण करना ।)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंवि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, मह रागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

(केवल पानी पीना हो तो दुविहार पच्चक्खाण करना)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुँ ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करुं ? 'इच्छं' ॥

(इस प्रकार कह आठ नवकार गिनना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुँ ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाउं ? 'इच्छं'॥

(अब आसन बिछा कर बैठें और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोलकर वस्त्र ग्रहण करें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगुरणो संदिसाहुं ? 'इच्छं'॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगुरणो पडिग्गहुं ? 'इच्छं'॥

(अब नीचे लिखि विधि के अनुसार प्रतिक्रमण करें। प्रथम तीन खमासमण देकर चैत्यवंदन करें अर्थात् 'जय तिहुयण०' बोलें।)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं'॥

जयतिहुअण स्तोत्र॥

जय तिहुअण-वर-कप्परुक्ख, जय जिण धन्नंतरि।
जय तिहुअण-कल्लाण-कोस, दुरियक्करि-केसरि॥
तिहुअणजण-अविलंघिआण, भुवण-त्तय-सामिअ।

कुणसु सुहाइ जिणेस पास, थंभणय-पुरट्ठिअ ॥१॥
तइ समरंत लहंति झत्ति; वर-पुत्त-कलत्तइ ।
धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण, जण भुंजइ रज्जइ ॥
पिक्खइ मुक्ख असंख-सुक्ख, तुह पास पसाइण ।
इअ तिहुअण-वर-कप्प-रुक्ख, सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥
जरजज्जर परिजुण्ण कण्ण, नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण ।
चक्खु-क्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिय सूलिण ॥
तुह जिण सरण-रसायणेण, लहु हुंति पुणण्णव ।
जय धन्नंतरि पास महवि तुह रोग-हरो भव ॥३॥
विज्जा—जोइस—मंत—तंत—सिद्धीउ अपयत्तिण ।
भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि, सिज्झहि तुह नामिण ॥
तुह नामिण अपवित्तओ वि, जण होइ पवित्तउ ।
तं तिहुअण कल्लाण-कोस, तुह पास निरुत्तउ ॥४॥
खुद्द—पउत्तइ मंत—तंत—जंताइ विसुत्तइ ।
चर—थिर—गरल गहुग्ग खग्ग—रिउ वग्ग विगंजइ ॥
दुत्थिय—सत्थ—अणत्थ—घत्थ, नित्थारइ दय करि ।
दुरियइ हरउ स पास—देउ, दुरिय क्करि—केसरि ॥५॥
तुह आणा थंभेइ भीम—दप्पुद्धुर—सुर—वर ।
रक्खस—जक्ख—फणिंद--विंद—चोरानल—जलहर ॥
जल—थल चारि रउद्द—खुद्द—पसु—जोइणि जोइय ।
इय तिहुअण अविलंघिआण, जय पास सुसामिय ॥६॥

पत्थिअ-अत्थ अणत्थ-तत्थ, भत्तिब्भर-निब्भर ।
रोमचचिय-चारु-काय किन्नर-नर-सुर-वर ॥
जसु सेवहि कम-कमल-जुयल, पक्खालियकलिमलु ।
सो भुवण-त्तय-सामि पास, मह मद्दउ रिउ-बलु ॥७॥
जय जोइय-मण-कमल-भसल, भय-पजर कुंजर ।
तिहुअण-जण-आणद-चद, भुवण-त्तय-दिणयर ॥
जय मइ-मेइणि-वारिवाह, जय-जतु-पियामह ।
थभणयट्ठिय पासनाह, नाहत्तण कुण मह ॥८॥
बिहुविह-वन्नु अवन्नु सुन्नु, वन्निउ छप्पन्निहि ।
मुक्ख-धम्म कामत्थ काम, नर निय-निय-सत्थिहि ॥
ज झायहि बहु दरि-सणत्थ, बहु नाम-पसिद्धउ ।
सो जोइय-मण-कमल-भसल, सुहु-पास पवद्धउ ॥९॥
भय-विब्भल रणझणिर-दसण, थरहरिय-सरीरय ।
तरलिय-नयण विसुन्न-सुन्न, गग्गरगिर करुणय ॥
तइ सहसत्ति सरत हुति, नर नासिय-गुरु दर ।
मह विज्झवि सज्झसइ पास, भय-पजर-कुजर ॥१०॥
पइ पासि वियसत-नित्त-पत्तत-पवित्तिय—
बाह-पवाह-पवूढ-रूढ-दुह-दाह सुपुलइय ॥
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाण सुर-नर ।
ईय तिहुअण-आणंद-चद, जय पास जिणेसर ॥११॥
तुह कल्लाण-महेसु घट-टकारवपिल्लिय ।

मा अवहीरय अजुग्गउ वि, मइं पास निरंजण ॥२२॥
हउ बहु-विह-दुहतत्त-गत्तु-तुहु दुह-नासण परु, ।
हउ सुयणह-करुणिक्क-ठाणु तुहु, निरु करुणायरु ॥
हउ जिण पास ! असामि सालु, तुहु तिहुअणसामिय ।
जं अवहीरहि महं झखंत, इय पास न सोहिय ॥२३॥
जुग्गाऽजुग्ग–विभागनाह, न हु जोयहि तुह सम ।
भुवणुवयार-सहाव-भाव-करुणा-रस-सत्ताम ॥
सम-विसमइं किं घणु नियइ, भुवि दाह समंतउ ॥
इय दुहि-बंधव पास-नाह, मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥
नय दीणह दीणयं मुयवि, अन्नु वि किवि जुग्गय ।
जं जोइवि उवयार करहि, उवयार–समुज्जया ।
दीणह दीन निहीणु जेण, तइ नाहिण चत्ताउ ।
तो जुग्गउ अहमेव पास, पालहि मइ चंगउ ॥२५॥
अह अन्नुवि जुग्गय विसेसु किवि मन्नहि दीणह ।
जं पासिवि उवयारु करइ, तुहु नाह समग्गह ।
सुच्चिय किल कल्लाणु जेण, जिण तुम्ह पसीयह ।
किं अन्निण तं चेव देव, मा मइ अवहीरह ॥२६॥
तुह पत्थण न हु होइ विहलु, जिण जाणउ किं पुण ।
हउ दुक्खिय निरु सत्त चत्त, दुक्कहु उस्सु-यमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ, वि जइ लब्भइ ।
सच्चं जं भुक्खिय-वसेण, किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥

तिहुणसामिय ! पासनाह ! मइ अप्पु पयासिउ ।
किज्जउ ज नियरूव-सुरिसु, न मुणउ वहु जपिउ ।
अन्नु न जिण जग्गि तुह समोवि, दक्खिन्नु दयासउ ।
जइ अवगन्नसि तुह जि अहह, कह होसु हयासउ ॥२८॥
जइ तुह रूविण किणवि पेय-पाइण वेलवियउ ।
तुवि जाणउ जिण पास तुम्हि, हउं अगो करिउ ॥
इय मह इच्छिउ ज न होइ, सा तुह ओहावणु ।
रक्खतह निय-किति णेय, जुज्जइ अवहीरणु ॥२६॥
एह महारिय जत्त देव, इहु न्हवण-महूसउ ।
ज अणलिय-गुण-गहण तुम्ह, मुणि-जण अणिसिद्धउ ।
एम पसो असुपासनाह, थभ णयपुरट्ठिय ।
इय मुणिवरु सिरि-अभयदेउ, विन्नवइ अणिंदिय ॥३०॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह-फलय, जय समत्थ-परमत्थ-जाणय जय जय गुरु-गरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थभणयट्ठिय पास-जिण, भवियह भोम-भवुत्थु भव अवणिताणतगुण, तुज्झ ति-सझ नमोऽत्थु ॥१॥

नमुत्थुण अरिहताण, भगवताण, आइगराण तित्थयराणं सयसबुद्धाण-पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण पुरिसवर-पुडरीआण, पुरिस-वर-गधहत्थीण, लोगुत्तमाण लोग-नाहाण लोग-हिआण लोग-पईवाणं लोग-पज्जोअगराण, अभय-दयाणं

चक्खु-दयाणं मग्गदयाणं सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं, धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत–चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय-वरनाणदंसण-धराणं विअट्ट-छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धि-गइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं । जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(अब चरवला मुँहपत्ति लेकर खड़े होकर बोलना ।)

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्य" कह कर पहली स्तुति कहना।)—

द्रँ द्रँ कि धपमप, धुधुमि धोँ धोँ, ध्रसकि धरधपधारव। दोंदोंकि दो दो, द्रागिडदि द्रागिडदिकि, द्रमकि द्रण रण द्रेणव॥ झंझिझेंकि झें झें, झणणरणरण, निजकि निजजनरञ्जनम्। सुरशैलशिखरे, भवतु सुखद पार्श्वजिन-पतिमज्जनम्॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि, केवली॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर-मरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण

वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणोए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छोएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहाँ पर एक नवकार का कायोत्सर्ग करने के बाद दूसरी स्तुति कहना—)

कटरेंगिनि थोंगिनि, किटांत गिगड्दां धुधुकि धुटनट पाटवं ।
गुणगुणण गुणगण, रणकि णें णें, गुणणगुणगणगौरवम् ॥
झञ्झि झेंकि झें झें, झणणरणरण, निजकि निजजन सज्जनाः ।
कलयंति कमला कलितकलमल, मुकलमोश-महे जिनाः ॥२॥

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ । भरहेर-वय-विदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं सणस्स सुर-गण-नरिंद-महियस्य । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाई-जरा-मरण-सोग-पणा-

सणस्स-कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ?॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नदी सया सजमे। देवनाग-सुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुर। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्ग वदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वाय-निसग्गेण भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहि अग सचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-सचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-सचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि॥

(एक नवकार का कायोत्सर्ग करके तीसरी स्तुति कहना।)

ठकि ठ् कि ड् ठ्, ठहि, ठहि, क, ठहि, पट्टास्ता-ड्यते। तललोंकि लोलो त्रेंषि त्रेंषिनि, डेंषि डेंषिनि वाद्यते ॐ ॐ कि ॐ ॐ थोगि थोगिनि, घोगि घोगिनि कलरवे।

जिनमतमनंतं महिम तनुतां, नमति सुरनर मुच्छ्वे ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं-ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी स्तुति कहना)—

खु दाकि खु दा, खुखुद्दि खु दा, खुखुद्दि दो दो अवरे। चाचपट चचपट। रणकि णें णें, डणण डें डें डवरे। इह सरगमपधुनि, निधपमगरस, सससससुर-सेविता। जिन-नाट्यरंगे, कुशलमुनिश, दिशतु शासनदेवता ॥४॥

(अब नीचे बैठकर बाया घुटना खड़ाकर 'नमुत्थुण बोलना)

नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण, आइगराण तित्थयराण सय-संबुद्धाण पुरिसुत्तमाण, पुरिस-सीहाण, पुरिस-वर-पु डरी-आण, पुरिस-वर-गंधहत्थीण, लोगुत्तमाण, लोग-नाहाण, लोग-हिआण लोग-पईवाण लोग-पज्जोअगराण, अभय-दयाण चक्खु-दयाण मग्ग-दयाण सरण-दयाण बोहि दयाण, धम्म दयाण धम्म-देसयाण धम्म-नायगाण धम्म-सारहीण, धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीण, अप्प-डिहय-वर-नाण-दसणधराण विअट्ट-छउमाण, जिणाण-जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण, सव्वन्नूण सव्वदरिसीण सिवमयलमरुअमण-तमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेय ठाणं सपत्ताण। नमो जिणाण जिअभयाण जे अ अईआ। सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले। सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥१॥

(यहां चार बार एक एक 'खमासमण' दे कर 'श्री आचार्यजी मिश्र' आदि एक एक पद कहना जैसे—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि । 'श्री आचार्यजी मिश्र ॥'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि ! 'श्री उपाध्यायजी मिश्र ॥'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए, मत्थएण वंदामि। जंगम युगप्रधान वर्त्तमान आचार्य ······मिश्र ॥'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । 'श्री सर्वसाधु मिश्र ॥'

(ऐसा कह कर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर बायां हाथ मुंहपत्ति सहित मुखके आगे रखकर सिर नीचे झुका कर 'सव्वस्सवि' का पाठ बोलना ।)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चितिअ, दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खडे होकर बोलना)

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं । जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो

अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो उणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए तिण्ह गुत्तीण चउण्ह कसायाण पचण्ह-मणुव्वयाण तिण्ह गुणव्वयाण चउण्ह सिक्खावयाण बारसविहस्स सावगधम्मस्स ज खडिअ ज विराहिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

तस्स उत्तरी-करणेण, पायच्छित्त-करणेण, विसोही-करणेण, विसल्ली-करणेण पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहि अग-सचालेहि, सुहुमेहि खेल-सचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठि-सचालेहि एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहताण भगवताण णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

('आजुणा चार प्रहर दिवस मे' का पाठ मन मे चिन्तन करें या आठ नवकार का कायोत्सग करें, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहे ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वदे, सभवमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिण च

चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(अब नीचे बैठकर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पड़िलेहना कर नीचे मुताबिक दो बार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं। आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए लोभाए, सव्व-कालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्मा-

इक्कमणा ए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि अहोकाय काय सफास । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प-किलताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअ वइक्कम पडिक्कमामि । खमासमणाण देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालियाए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

(अब खडे होकर बोलना ।)

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! देवसिअ आलोउ । इच्छ । आलोएमि जो मे देवसिओ, अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्ह गुत्तीण चउण्ह कसायाण

पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्ह गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं अतिचार आलोऊँजी? 'इच्छं'—

आजुणा चार प्रहर दिवस में मैंने जिन जीवों की विराधना की होय। सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो दो लाख बेइँद्रिय, दो लाख तेईन्द्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। कुल चौरासी लाख जीव-योनियों में से किसी जीव का हनन किया, करवाया, करते हुए का अनुमोदन किया वह सब मन, वचन, काया से मिच्छा मि दुक्कडं।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नववां लोभ, दशवां राग, इग्यारवां द्वेष, बारवां कलह, तेरवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पंद्रहवां रति-अरति सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषावाद, अठारहवां मिथ्यात्वशल्य; इन अठारह पापस्थानों में से किसी का मैंने कोई

सेवन किया, कराया या करते हुए का अनुमोदन किया, वह सब मन, वचन, कायासे मिच्छा मि दुक्कड ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देव-गुरु-धर्म की आशातना की हो, पन्नरह कर्मादानों की आसेवना की हो, राज–कथा, देश-कथा, स्त्री–कथा, भक्त-कथा की हो, और जो कोई पाप परनिन्दा की हो, कराई हो, या करते का अनुमोदन किया हो, सो सब मन-वचन-काया करके दिवस अतिचार आलोयणा करके पडिक्कमण मे आलोउ, तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इच्छ ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

(अत्र नीचे बैठ कर,दाहिना घुटना खडा करके भगवन् सदिसु मुन भणू ? इच्छ', ऐसा कहे । पीछे तीन नवकार और तीन बार 'करेमि भते' कहे ।)

णमो अरिहंताण ।णमो सिद्धाण । णमो आयरिआण । णमो उवज्झायाण । णमो लोए सव्वसाहूण । एसो पच-णमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसि । पढम हवइ मगल ॥

करेमि भंते ! सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणि-च्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाण पंचण्हमणु व्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारस-विहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु—श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्प-सत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अनिओगे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥ ५ ॥ संका कख विगिच्छा, पसस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव त निंदे । ७ ॥ पचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाण च तिण्हमइआरे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवा-यविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥ ९ ॥ वह बध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि परिथूलगअलिअवयणविरईओ । आयरिअम-प्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरण विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥१४॥ चउत्थे अणुव्व-यम्मि, निच्च परदारगमणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणग-वीवाहतिव्वअणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे

देसिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए प,-चमम्मि आयरि-
अमप्पसत्थम्मि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्प-
संगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ
कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं
सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ
तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए
निंदे ॥१९॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-
मल्ले अ। उवभोगपरीभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥
सचित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे ।
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥
इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं
चेव य दंत-लक्खरसकेसविसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपि-
ल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं,
असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे
मंतमूलभेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं
सव्वं ॥२४॥ न्हाणुव्वट्टण वन्नग-विलेवणे सद्दरूवरस-
गंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥
कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरणभोगअइरित्ते । दंडम्मि
अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्प-
णिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइय वितह कए,
पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे, रूवे
अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए

निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही–पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइएसिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आससपओगे। पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होई बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडि–क्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवई निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होई

अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स–अब्भुट्ठिओमि आरा–हणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीस-जिणविणिग्गयकहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाण करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं असद्दहणे अ तहा, विवरीय-परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए, मत्थएण वंदामि। देवसिय आलोइ पडिक्कंता

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय[1] मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए, मत्थएण वंदामि ॥

(यहां पाक्षिक मुहपत्ति पडिलेहना कर बाद में दो वांदणा देना।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं[2] वइक्कम्मं। आवस्सि-आए पडिक्कमामि। खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व कालियाए, सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्मा-इक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

१ चउमासी प्रतिक्रमण में 'चउमासी' और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरी' बोलना चाहिये। २ चउमासी प्रतिक्रमण में 'चउमासीओ' संवच्छरी प्रतिक्रमण में 'संवच्छरी' इस प्रकार बोलना।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहो कायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प किलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिय वइक्कमं । पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालियाए सव्व-मिच्छोवयाराए सवधम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब गुरु कहे कि—"पुण्यवंतो देवसि के स्थान में पाक्खि भणजो, छींक जयणा करजो, मधुरस्वरे पडिकमजो, खांसे तो विशुद्ध खासजो, माडल में सावचेत रहेजो" इस प्रकार गुरु के कहने बाद सब 'तहत्ति' कहे और खडे होकर अब्भुट्ठिओ' खामे ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओ हं अब्भिंतर-पक्खियं[1] खामेउं ? इच्छं, खामेमि

१. चउमासी-प्रतिक्रमण मे "चउमासिअं खामेउं ? इच्छ खामेमि चउमासिअं, चउण्ह मासाण, अट्ठण्ह पक्खाण, वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस प्रकार बोलना, और सवच्छरी प्रतिक्रमण मे सवच्छरिअं खामेउ ? इच्छ, खामेमिसंवच्छरिअ, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राइदिवसाण" इसी तरह बोलना चाहिये ।

पदिखअ, पन्नरसण्ह दिवसाण पन्नरसण्ह राईण, ज किंचि अपत्तिअ पर-पत्तिअ, भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे, आलावे, सलावे, उच्चासणे, समासणे, अतर-मासाए, उवरि-मासाए,ज किंचि मज्झ विणय-परिहीण सुहुम वा बायर वा तुब्भे जाणह, अह न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

(अब खडे होकर बोले)

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पक्खिअ आलोउ ? 'इच्छ' । आलोएमि । जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचितिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो नाणे दसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्ह गुत्तिण चउण्ह कसायाण पचण्हमणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण चउण्हं सिक्खावयाण बारस-विहस्स सावग्गधम्मस्स ज खडिअ ज विराहिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पक्खिय अतिचार आलाउ ? 'इच्छ' ।

(यह कहकर पक्खि अतिचार कहे—)

॥ पाक्षिक अतिचार ॥

नाणम्मि दसणम्मि य,
चरणम्मि तवमि तह य विरियम्मि ॥

आयरणं आयारो,
इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार; वीर्याचार, एवं पचविध आचारमांहि जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर, जाणतां अजांणता, हुओ होय, वह सब मन, वचन, कायाइं करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अथ ज्ञानाचार के आठ अतिचार—"काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्हवणे । वंजण अत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो" ॥२॥ ज्ञान नियमित वक्त में पढ़ा नहीं। अकाल वक्त में पढ़ा । विनय रहित, बहुमान रहित, योगोपधान रहित पढ़ा । ज्ञान जिससे पढा उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा । देववंदन, गुरुवंदन, करते हुए तथा प्रतिक्रमण, सज्झाय पढ़ते या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा । काना मात्रा न्यूनाधिक कही, सूत्र अशुद्ध कहा, अर्थ अशुद्ध किया, अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य कहे । पढ़कर भूला, असज्झाय के समय में थविरावली, प्रतिक्रमण, उपदेशमाला आदि सिद्धान्त पढ़ा । अपवित्र स्थान में पढ़ा, या बिना साफ किये घृणित (खराब) भूमि पर रखा । ज्ञान के उपकरण पाटी, तखती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात, आदि के पैर लगा, थूक लगा, अथवा थूक से अक्षर मिटाया,

ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, या पास मे लिए हुए आहार निहार किया, ज्ञानद्रव्य भक्षण करने वाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सारसभाल न की, उलटा नुकसान किया, ज्ञानवत के ऊपर द्वेष किया, ईर्षा की, तथा अवज्ञा आशातना की, किसी को पढने गुणने मे विघ्न डाला, अपने जानपने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान और केवलज्ञान, इन पाचो ज्ञानो मे श्रद्धा न की। गूंगे तोतले की हँसी की, ज्ञान मे कुतर्क की, ज्ञान की विपरीत प्ररूपणा की। इत्यादि ज्ञानाचार सबधि जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कड।

दर्शनाचार के आठ अतिचार—"निस्सकिय निक्कखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूह थिरोकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥१॥ देव गुरु-धर्म मे नि शक न हुआ, एकात निश्चय न किया। धर्म सबधी फल मे सदेह किया। चारित्रवान् साधु साध्वी की जुगुप्सा निंदा की। मिथ्यात्वियो की पूजा प्रभावना देखकर मूढदृष्टिपना किया। कुचारित्रों को देखकर चारित्र वाले पर भी अभाव हुआ। सघ मे गुणवान की प्रशसा न की। धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया। साधर्मी का हित न चाहा, भक्ति न की, अप-

मान किया, देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य की हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति होने पर भले प्रकार सारसंभाल न की। साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्मबंधन किया। मुखकोश बांधे विना वीतराग देव की पूजा की। धूपदानी, खसकूची, कलश आदि से प्रतिमाजी को ठपका लगाया, जिनबिंब हाथ से गिरा। श्वासोच्छ्वास लेते अवज्ञा आशातना हुई। जिनमंदिर तथा पौषधशाला में थूका, तथा मलश्लेश्म डाला, हंसी मश्करी की, कुतूहल किया। जिनमंदिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाओं में से और गुरु महाराज संबंधी तेंतीस आशातनाओं में से कोई आशातना हुई हो। स्थापनाचार्य हाथ से गिरे हों या उनकी पडिलेहन न की हो। गुरु के वचनको मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

चारित्राचार के आठ अतिचार—"पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो" ॥१॥ इरिया-समिति, भाषा-समिति, एषणा-समिति, आयाण-भंडमत्त-निक्षेपणा-समिति उच्चार-पासवण-खेल-जल-सिंघाण पारिट्ठावणिया समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति ये आठ प्रवचन माता रूप पांच समिति और तीन गुप्ति सामायिक पौषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं। चारित्राचार संबंधी जो कोई

अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कड ।

विशेषत श्रावक धर्मसबधी श्रीसम्यक्त्व मूल बारह व्रत । सम्यक्त्व के पाच अतिचार—'सका कख विगिच्छा०' शका श्री अरिहत प्रभुके बल अतिशय ज्ञानलक्ष्मी गाभीर्यादिगुण शाश्वती प्रतिमा चारित्रवान् के चारित्र मे तथा जिनेश्वरदेव के वचन मे सदेह किया । आकाक्षा—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गोगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रह-पूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, बाली, मातामसानी, आदिक, तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे जुदे देवादिको का प्रभाव देखकर, शरीर मे रोगातक कष्ट आने पर इहलोक परलोक के लिये पूजा मानता की । बौद्ध, साख्यादिक सन्यासी, भगत लिगिये, जोगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्य दर्शनियों के मत्र तत्र के चमत्कार देखकर परमार्थ जाने बिना मोहित हुआ । कुशास्त्र पढा, सुना, श्राद्ध, सवत्सरी, होली, राखडीपूनम (राखी), अजा एकम, प्रेतदूज, गौरी तीज, गणेश चौथ, नागपचमी, स्कदषष्ठी, झीलणा छठ, शीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी, व्रत एकादशी, वामनद्वादशी, वत्सद्वादशी, धनतेरस, अनत-चौदश, शिवरात्री, कालीचउदश, अमावस्या, आदित्यवार, उत्तरायण नोग नोगादि किये कराये करते को भला

माना । पीपल में पानी डाला डलवाया, कुँवा, तालाब, नदी, द्रह, वावड़ी, समुद्र, कुण्ड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान, तथा दान किया, कराया, अनुमोदन किया । ग्रहण, शनिश्चर, माघमास, नवरात्रि का स्नान किया । नवरात्रि व्रत किया । अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये । वितिगिच्छा—धर्मसंबंधी फल में संदेह किया । जिन-वीतराग अरिहत भगवान् धर्म के आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा न की । इहलोक परलोक संबंधी भोगवांछा के लिये पूजा की । रोग आतंक कष्ट के आने पर क्षीण वचन बोला । मानता मानी । महात्मा महासती के आहार पानी आदि की निन्दा की । मिथ्यादृष्टि की पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की । प्रीति की । दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना । मिथ्यात्व को धर्म कहा । इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत सम्बंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

पहले स्थूल प्राणतिपात—विरमणव्रत के पांच अति चार—'वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए ।' द्विपद चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझ लादा । निर्लांछन कर्म—नासिका छिदवाई कर्णछेदन करवाया खस्सी किया । दाना, घास, पानी की समय पर

सार सभाल न की, लेन देन मे किसी के बदले किसी को भूखा रखा, पास खडा होकर मरवाया, कैद करवाया। सडे हुए धान को बिना शोधे काम मे लिया, पिसवाया, धूप मे सुखाया। पानी जयणा से न छाना। ईंधन, लकडी, उपले गोहे आदि बिना देखे बाले। उसमे सर्प, बिच्छु, कानखजूरा, कीडी, मकोडी, सरोला, माकड, जुआ, गिगोडा आदि जीवो का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया। दुखी जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चिंटी (कीडी) मकोडी के अडे नाश किये, लीख फोडी, दीमक, कीडी, मकोडी, घीमेल, कातरा, चूडेल, पतगिया, देडका, अलसीया, ईअल, कूदा, डास, मसा, मगतरा, माखी, टिड्डी, प्रमुख जीव का नाश किया। चील्ह, काग, कबूतर, आदि के रहने की जगह का नाश किया। घोंसले तोडे। चलते फिरते या अन्य कुछ काम काज करते निर्दयपना किया। भली प्रकार जीवरक्षा न की। बिना छाने पानी से स्नानादि कामकाज किया। चारपाई, खटोला, पीढा, पीढो आदि धूप मे रखे। डडे आदि से झडकाये। जीवाकुल—जीवयुक्त जमीन को लीपी। दलते, कूटते लीपते या अन्य कुछ काम काज करते जयणा न की। अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथि का नियम तोडा। धूनी करवाई, इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रत सबधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे

सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

दूसरे स्थूल-मृषावाद विरमण व्रत के पांच अतिचार—'सहसा-रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड-लेहे य ।' सहसात्कार— बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आल-कलंक दिया । स्व-स्त्री संबंधी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसी का मंत्र भेद मर्म प्रकट किया । किसी को दुखी करने के लिये झूठी सलाह दी । झूठा लेख लिखा, झूठी गवाही दी । अमानत में खयानत की । किसी की धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी । कन्या, गौ भूमि संबंधी लेने देने में लड़ते झगड़ते वादविवाद में मोटा झूठ बोला । हाथ पैर आदि की गाली दी । मर्म वचन बोला, इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

तीसरे स्थूल-अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार—'तेनाहडप्पओगे०' घर, बाहिर, खेत, खला में बिना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा आज्ञा बिना अपने काम में ली, चोरी की वस्तु ली, चोर को सहायता दी। राज्य विरुद्ध कार्य किया । अच्छी बुरी, सजीव निर्जीव, नई पुरानी वस्तु का भेल संभेल किया । जकात की चोरी की ।

लेते देते तराजू की डंडी चढ़ाई। अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया, रिश्वत ली। विश्वासघात किया, ठगाई की। हिसाब किताब मे किसी को धोखा दिया। माता पिता पुत्र मित्र स्त्री आदि के साथ ठगाई कर किसी को दिया, अथवा पूंजी अलहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इन्कार किया। पड़ी हुई चीज उठाई। इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं'।

चौथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन-विरमणव्रत के पांच अतिचार— 'अप्परिगहिया इत्तर, अणंग-वीवाह तिव्व-अणुरागे।' परस्त्रीगमन किया अविवाहिता कुमारी विधवा वेश्यादिक से गमन किया। अनंग क्रीडा की। काम आदि की विशेष जाग्रति की, अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि का नियम तोड़ा। स्त्री के अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की। कुविकल्प चिंतवन किया। पराये नाते जोड़े। अति-क्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार स्वप्नस्वप्नान्तर हुआ। कुस्वप्न आया। स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिक से हास्य किया। स्वस्त्री मे [illegible] किया। इत्यादि चौथे स्वदारा संतोष [illegible] [illegible]त संबंधी जो कोई

तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान—इंगालकम्मे, वण-कम्मे, साड़ी-कम्मे, भाड़ी-कम्मे, फोडी-कम्मे ये पांच कर्म । दंत-वाणिज्ज, लक्ख-वाणिज्ज, रस-वाणिज्ज, केस-वाणिज्ज विस-वाणिज्ज ये पांच वाणिज्ज । जंत-पिल्लण-कम्मे, निल्लंछन-कम्मे, दवग्गि-दावणिया, सरदह-तलाव-सोसणया; असइपोसणया, ये पांच सामान्य एवं कुल पंद्रह कर्मादान महाआरंभ किये कराये करते को अच्छा समझा । श्वान, बिल्ली आदि पोषे पाले । महा सावद्य, पापकारी, कठोर काम किया । इत्यादि सातवें भोगोपभोग विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

आठवे अनर्थ-दंड के पांच अतिचार—'कंदप्पे कुक्कुइए ।' कंदर्प—कामाधीन होकर नट विट वेश्या आदि से हास्य खेल, क्रीड़ा कुतूहल किया । स्त्री पुरुष के हावभाव रूप शृंगार संबंधी वार्त्ता की । विषयरस पोषक कथा कही । स्त्री कथा, देव कथा, भक्त कथा, राजकथा ये चार विकथा की, पराई भांजगढ़ की, किसी की चुगलखोरी की, आर्त्त-ध्यान रौद्रध्यान ध्याया । खांडा, कटार, कुसी, कुल्हाड़ी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदि वस्तु दाक्षिण्यता-वश किसी को मांगी दी । पापोपदेश दिया । अष्टमी चतुर्दशी के दिन दलने पीसने का नियम तोड़ा । मूर्खता से, असंबंध

वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, तेल, दूध, दही, गुड, छाछ आदि का भाजन खुला रखा, उसमे जीवादिक का नाश हुआ। बासी मक्खन रखा और तपाया। नहाते धोते, दांतन करते, जीव आकुलित मोरी मे पानी डाला। झूले मे झूला। जूआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर डागर खरीदवाये। कर्कश वचन कहा, किचकिची ली। ताडना तर्जना की। मत्सरता धारण की। श्राप दिया। भैंसा सांड मेढा, मुरगा, कुत्ते आदिक लडवाये, या इनकी लडाई देखी। ऋद्धिमान् की ऋद्धि देख ईर्षा की। मिट्टी, नमक, धान, बिनोले बिना कारण मसले। हरी वनस्पति रौंदी। शस्त्रादिक बनवाये। रागद्वेष के वश से किसी को भला चाहा। किसी को बुरा चाहा। मृत्यु की वाछा की। मैना, तोते, कबूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियो को पींजरे मे डाला इत्यादिक आठवें अनर्थदड विरमणव्रत सबधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कड।

नवमे सामायिकव्रत के पाच अतिचार—'तिविहे दुप्पणिहाणे०' सामायिक मे सकल्प विकल्प किया। चित्त स्थिर न रखा। सावद्य वचन बोला। प्रमार्जन किये बिना शरीर हिलाया, इधर उधर किया। शक्ति होने पर भी सामायिक न की। सामायिक मे खुले मुंह बोला। नींद ली। विकथा की।

घर संबंधी विचार किया। दीपक या विजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा। सचित्त वस्तु का संघटन हुआ। स्त्री, तिर्यंच आदि का निरंतर परस्पर संघट्टन हुआ। मुहपत्ति संघट्टी। सामायिक अधूरा पारा, विना पारे उठा इत्यादि नवमें सामायिकव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

दशवें देसावगासिकव्रत के पांच अतिचार—"आरण-वणे पेसवणे०" आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाई रूवाणुवाई वहियापुग्गलपक्खेवे। नियमित भूमि में बाहर से वस्तु मंगवाई। अपने पास से अन्यत्र भिजवाई। खासने आदि का शब्द करके, रूप दिखा के या कंकर आदि फेंककर अपना होना मालूम किया इत्यादि दशवें देसावकाशिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

ग्यारहवें पौषधोपवासव्रतके पांच अतिचार—"संथारु-च्चार विहि०" अप्पडिलेहिअ, दुप्पडिलेहिअ सिज्जासंथारए। अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि। पौषध लेकर सोने की जगह विना पूंजे प्रमार्जे सोया। स्थंडिल आदि की भूमि भले प्रकार शोधी नहीं। लघुनीति बड़ीनीति

करने या परठते समय "श्रणुजाणह जस्सुग्गहो" न कहा। परठे बाद तीन वार 'वोसिरे' न कहा। जिनमदिर और उपाश्रय मे प्रवेश करते हुए 'निसीहि' और वाहिर निकलते 'श्रावस्सही' तीन वार न कही। वस्त्र आदि उपधि की पडिलेहणा न की। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय का सघट्टन हुआ। सथारा पोरिसी पढनी भुलाई। विना सथारे जमीन पर सोया। पोरिसी मे नींद ली, पारना आदि की चिंता की। समय पर देववदन न किया। प्रतिक्रमण न किया। पौषध देरी से लिया और जल्दी पारा, पर्वतियो को पौषध न लिया इत्यादि ग्यारवें पौषधव्रत सबधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कड।

वारहवें अतिथि सविभाग व्रतके पाच अतिचार-"सचित्ते निक्खिवणे०" सचित्त वस्तु के सघट्टे वाला अकल्पनीय आहार पानी साधु साध्वी को दिया। देने की इच्छा से सदोष वस्तुको निर्दोष कही। देने की इच्छासे पराई वस्तुको अपनी कही। न देने की इच्छासे निर्दोष वस्तुको सदोष कही। न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही। गोचरी के वक्त इधर उधर हो गया। गोचरी का समय टाला। बेवक्त साधु महाराज को प्रार्थना की। आये हुए गुणवान् की भक्ति न की।

शक्ति के होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्र को पड़ता देख मदद न की। दीन दुःखी की अनुकंपा न की इत्यादि बारहवें अतिथि संविभाग व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

संलेषणा के पांच अतिचार–"इहलोए परलोए०" इहलोगासंसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इस लोक संबंधी राजऋद्धिभोगादि की वांछा की। परलोक में देव देवेन्द्र चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने पर मरने की वांछा की। इत्यादि संलेषणा व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

तपाचार के बारह भेद–छ बाह्य छ अभ्यंतर। "अणसणमुणो अरिया०" अनशन—शक्ति के होते हुए पर्वतिथि को उपवास आदि तप न किया। ऊनोदरी–दो चार ग्रास कम न खाये। वृत्तिसंक्षेप–द्रव्य–खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया। रस–विगय त्याग न किया। कायक्लेश–लोच आदि कष्ट न किया। संलिनता–अंगोपांग का संकोच न किया। पच्चक्खाण तोड़ा। भोजन करते समय एकासणा

आयबिल प्रमुख मे चौकी, पटडा, अखला आदि हिलता ठीक न किया। पच्चक्खाण पारना भुलाया, बैठते नवकार न पढा। उठते पच्चक्खाण न किया। निवि, आयबिल उपवास आदि तप मे कच्चा पानी पिया। वमन हुआ। इत्यादि बाह्य तप सबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कड।

अभ्यतर तप—"पायाछित्त विणओ०" शुद्ध अत करण-पूर्वक गुरुमहाराज से आलोचना न ली। गुरु की दी हुई आलोचना सपूर्ण न की। देव, गुरु, सघ, सार्धमि का विनय न किया। बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, आदि की वेयावच्च न की। वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पाच प्रकार का स्वाध्याय न किया। धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं। आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। दु ख-क्षय कर्मक्षय निमित्त दश बीस लोगस्स का कायोत्सर्ग न किया। इत्यादि अभ्यतर तप सबधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कड।

वीर्याचार के तीन अतिचार—'अणिगूहिय बलविरिओ०' पढते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यमे मन, वचन, काया-

का वल वीर्य पराक्रम फोरा नहीं। विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वंदन की विधि भले प्रकार न की। अन्य चित्त निरादर से बैठा। देववंदन प्रतिक्रमण में जल्दी की इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

"नाणाई अट्ठ अइवय, सम संलेहरण परण पनर कम्मेसु।
बारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अईयारा।"

"पडिसिद्धाणं करणे०" प्रतिषेध—अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म, सामायिकादि छैः आवश्यक, विनयादिक अरिहंत की भक्ति प्रमुख, करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररूपणा की। तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य रति, अरति, परपरिवाद, माया-मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ये अठारह पापस्थान किये, कराये अनुमोदे। दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञासे विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया। इन चार प्रकार के अतिचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते

लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

एवंकारे श्रावकधर्म सम्यक्त्व मूल बारह व्रत सबधी एकसौ चौवीस अतिचारो मे से जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।।इति।।

सव्वस्स वि पक्खिअ दुच्चितिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इच्छ ! तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि, अहोकाय कायस-फास । खमणिज्जो मे किलामो । अप्पकिलताण बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कतो ? जत्ता मे ? जवणिज्ज च मे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाण पक्खिए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मि-च्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइ-आरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरि-हामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिए आसायणाए तित्तीसन्नयराऐ जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराऐ सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओ हं, अब्भितर * पक्खिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं पर-पत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे

* चउमासि प्रतिक्रमणमे "चउमासिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि। चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाण" इस तरह बोलना और संवच्छरी प्रतिक्रमणमें "संवच्छरीअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाण चउवीसण्हं पक्खाण, तिन्निसयसट्ठि राईदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

समासणो, अतरमासाए, उवरिमासाए, ज किंचि मज्झ विणय परिहीण सुहुम वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अह न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

(यहा प्रत्येक बधु से क्षमतक्षमणा करके दो वादना देना)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि अहोकाय कायसफास । खमणिज्जो मे किलामो । अप्पकिलताणं वहुसुभेण मे पक्खो वइक्कतो ? जत्ता भे !जवणिज्ज च भे?खामेमि खमासमणो! पक्खिअ वइक्कम्म । आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मरण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्वमिच्छोवया-राए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकाय कायसफास । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलताण वहुसुभेण मे पक्खो वइक्कतो ?जत्ता भे ?जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो! पक्खिअ वइक्कम्म पडिक्कमामि खमासमणाण पक्खिए

आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्क मणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

भगवन् देवसिअं आलोइय पडिक्कंता पक्खिअं पडिक्कमावेह 'इच्छं'।

करेमि भंते ! समाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं,

विसल्लीकरणेण, पावाण, कम्माण, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएण, छीएणं, जमाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, ममलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहि अंग-सचालेहि, सुहुमेहि खेल-संचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठि-सचालेहि एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताण भगवताणं णमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(अब यहा सब कायोत्सर्ग मे पक्खिसूत्र सुने और एक बधु खमासमणपूर्वक आदेश माग कर सूत्र प्रकट कहे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् [1]पक्खिसूत्र कढू ? 'इच्छं'

(ऐसे खमासमणपूर्वक आदेश माग कर, खडे होकर प्रगट तीन नवकार कह कर, साधु हो तो पक्खिसूत्र कहे और साधु न हो तो श्रावक वदित्तु सूत्र कहे)

वदित्तु—श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र ।

वदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।

१ चउमासी प्रतिक्रमणमे 'चउमासीसूत्र कढू' और सवच्छरी प्रतिक्रमण मे 'सवत्सरीसूत्र कढू' ऐसे बोलना चाहिये ।

इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइ-आरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे सक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ । आय-रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छवि-च्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडि-क्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिअवयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे,इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए

अणुव्वयमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे अ विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्च परदारगमणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणगवीवाहतिव्वअणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पचमम्मि, आयरिअमप्पसत्यमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसगेण ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढ अहे अ तिरिअ च । वुड्ढि सइअतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअ च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥ २१ ॥ इगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्म । वाणिज्ज चेव य दत-लक्खरस-केसविसविसय ॥ २२ ॥ एव खु जतपिल्लण-कम्म निल्लछण च दवदाण । सरदहतलायसोस, असईपोस च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजतग-तणकट्ठे मतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व॥२४॥ण्हाणुव्वट्टण वन्नग, विलेवणे

सद्दरूवरसगंधे। वत्थासरण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण-करणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्ना-कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं

उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विस कुट्ठगय, मतमूलविसारया। विज्जा हणति मतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं॥३८॥ एव अट्ठविह कम्म, रागदोसमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदतो, खिप्प हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य सभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, त निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिणे चउव्वीस ॥४३॥ जावति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइ ताइ वदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥४४॥ जावत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदडविरयाण ॥४५॥ चिरसचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ बोलतु मे दिअहा ॥४६॥मम मगलमरिहता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दितु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमण। असद्दहणे अ तहा, विवरीयप-

रूवणाए श्र ।४८।। खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ।।४६।। एव-महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।५०।।

(अब नमो अरिहंताण प्रकट कह कर सब काउस्सग्ग पारे और खड़े होकर बोलने वाला तीन नवकार गिन कर बैठ जाय। पीछे दाहिना घुटना खड़ा करके तीन नवकार, तीन करेमि भंते और इच्छामि पडिक्कमिउं कहकर वंदित्तु सूत्र कहे।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच णमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते समाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव-नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि पडिक्कमिउं । जो मे पक्खिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,पंचण्हमणुव्वयाणं,

तिण्ह गुणव्वयाणं, चउण्ह सिक्खावयाण, बारसविहस्स साव-गधम्मस्स, ज खडिअ ज विराहिअ तस्स मिच्छामि दुक्कट ।

वदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउ सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, त निंदे त च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥३॥ ज बद्धमिदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥४॥ सका कख विगिच्छा, पसस तह सथवो कुलिगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥६॥ छक्कायसमारभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव त निंदे ॥ ७ ॥ पचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाण च तिण्हमइयारे । सिक्खाण च चउण्ह, पडिक्कमे पक्खिअ सव्व ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयमि, थूलगपाणाइवाय-विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण॥६॥वह बध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडि-क्कमे पक्खिअ सव्व ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिअवयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसगेण ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।

बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवेअ विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्ग-हिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए,इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरि-माणे । दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत-लक्खरस-केसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं,असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए

वा,पडिक्कमे पक्खिअ सव्व॥२४॥ण्हाणुव्वट्टण वन्नग,विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥२५॥ कन्दप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते । दण्डम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही,पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्सजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण-करणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, त निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आससपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्ना-कसायदंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पाव समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥

तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिश्रावं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिश्रो विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं॥३८॥एवं श्रट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिश्रं । श्रालोश्रंतो श्र निदंतो, खिप्पं हणइ सुसावश्रो ॥३९॥ कय-पावो वि मणुस्सो, श्रालोइय निदिश्र गुरुसगासे । होइ श्रइरेगलहुश्रो, श्रोहरिश्रभरुव्व भारवहो ॥४०॥ श्रावस्सएण एएण, सावश्रो जइ वि बहुरश्रो होइ । दुक्खाणमंतकिरिश्रं, काही श्रचिरेण कालेण ॥४१॥ श्रालोश्रणा बहुविहा, न य संभरिश्रा पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, श्रब्भु-ट्ठिश्रोमि श्राराहणाए, विरश्रोमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइश्राइं, उड्ढे श्र श्रहे श्र तिरिश्रलोए श्र । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहा-विदेहे श्र । सव्वेसिं तेसिं पणश्रो, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ बोलंतु मे दिश्रहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुश्रं च धम्मो श्र । सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४८॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । श्रसद्दहणे श्र तहा,विवरीयप-

खवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एव-मह आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कमंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । मूलगुण-उत्तरगुण-अतिचार-शुद्धि निमित्त काउस्सग्ग करू ? इच्छं ।

(अब खड़े होकर बोले)

करेमि भंते समाइअं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव-नियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं,जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकर-णिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं,चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्म-स्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं,पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं

विसल्लीकरणेणं, पावणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं,अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो,जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(१२ बारह *लोगस्स का या ४८ अड़तालीस नवकार का कायोत्सर्ग करना । पारके प्रगट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।। १ ।। उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।। २ ।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।। ३ ।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।। ४ ।। एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-

*चौमासी प्रतिक्रमण मे वीस लोगस्स या अस्सा नवकार का कायोत्सर्ग करना और सवत्सरी प्रतिक्रमण मे ४० लोगस्स और एक नवकार का कायोत्सर्ग करना ।

वीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहि-लाभ, समाहिवरमुत्ताम दितु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥ ७ ॥

(अब बैठकर मुहपत्ति पडिलेहना और वादना दो देना।)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गह। निसीहि, अहोकाय कायसफास। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलताण बहुसुभेण भे पक्खो वइवकतो? जत्ता भे। जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइवकम्म,आवस्सिआए,पडिक्कमामि खमासमणाण, पक्खिए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवया-राए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गह। निसीहि अहोकाय कायसफास। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलताण बहुसुभेण भे पक्खो वइवकंतो? जत्ता भे? जवणिज्ज च भे? खामेमि खमासमणो।

४–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच-णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

(तीन वार कहे)

'इच्छं' इच्छामो अणुसट्ठि–पुण्यवंतो पाखी* के निमित्त एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, दो हजार सज्झाय करी एक उपवास की पेठ पूरना, और पक्खि के स्थान में देवसिय कहना ।

(यहां यथाशक्ति तप किया हो तो 'पइट्ठिय' कहना और जिन्होंने तप न किया वे 'तहत्ति' कहे । अब दैवसिक प्रतिक्रमण में वंदितुसूत्र कहने बाद जो विधि है इस माफिक कहना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्प किलंताणं बहुसुभेण भे

*चउमासिय मे इससे दूना अर्थात्––दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना और चार हजार सज्झाय करी दो उपवास की पेठ पूरना । संवच्छरिय मे तिगुना––तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ निवि बारह एकासना और छह हजार सज्झाय करी तीन उपवास की पेठ पूरना । इस प्रकार कहना ।

दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअ वइक्कम, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, ज किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि, अहोकाय कायसफास, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो ? जत्ता भे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअ वइक्कम्म, पडिक्कमामि खमासमणाण, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ हि, अब्भितर देवसिअ खामेउ ? इच्छ, खामेमि देवसिअ, ज किंचि

अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं वहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं, कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं, वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे! जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं

देवसिग्राए ग्रासायरगाए तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए, मरगदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माराए मायाए, लोभाए, सव्वकालिग्राए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमराए, ग्रासायणाए, जो मे ग्रइयारो कग्रो तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ग्रप्पाएं वोसिरामि ।

(ग्रब खडे होकर हाथ जोड के कहना चाहिए)

ग्रायरिग्र—उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे ग्र । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेरा खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसघस्स, भगवग्रो ग्रजलि करिग्र सीसे । सव्व खमा-वइत्ता, खमामि सव्वस्स ग्रहयपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरा-सिस्स, भावग्रो धम्मनिहिग्रनिग्रचित्तो । सव्व खमावइत्ता, खमामि सव्वस ग्रहयपि ॥३॥

करेमि भते समाइग्र, सावज्ज जोग पच्चक्खामि । जाव-नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेरा मरोण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि । तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ग्रप्पाएं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्ग, जो मे देवसिग्रो ग्रइयारो कग्रो काइग्रो वाइग्रो माणसिग्रो उस्सुत्तो उम्मग्गो ग्रकप्पो ग्रकरणिज्जो दुज्झाग्रो दुव्विचिंतिग्रो,ग्रणायारो ग्रणिच्छिग्रव्वो

असावग–पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स, सावग-धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्ताकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(दो लोगस्स का या आठ नवकार का कायोत्सर्ग करना । पारकर प्रगट लोगस्स कहना ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।। कुंथुं अरं च

मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च। वदामि रिट्ठनेमि, पास तह वद्धमाणं च॥ एव मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जरमरणा। चउवीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु॥ कित्तियवदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभ,समाहिवरमुत्तम दितु। चदेसु निम्मलयरा,आइच्चे सु अहिय पयासयरा। सागरवरगभीरा,सिद्धा सिद्धि मम दिसतु।

सव्वलोए अरिहतचेइआण करेमि काउस्सग्ग, वदण-वत्तिआए पुअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए,अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण खासिएण, छीएण, जभाइएण उड्डुएण, वायनिसग्गेण भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताण भगवताण नमुक्कारेण न पारेमि तावकाय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।

(एक लोगस्स का या चार नवकार का कायोत्सग करना)

पुक्खरवरदिवड्ढे, धायइसडे अ जबुदीवे अ। भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमसामि॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्ध स-णस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वदे, पप्फोडिअ-

मोहजालस्स ।।२।। जाई-जरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।। ३ ।। सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कम-च्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।४।। सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहि-लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक लोगस्स या चार नवकार का कायोत्सर्ग करना)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुव-गयाणं, नमो सयासव्वसिद्धाणं ।। जो देवाण वि देवो, जं

काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग करना पीछे "नमोऽर्हत्सिद्धा-चार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर सुअदेवया की स्तुति कहना)

कमलदल विपुलनयना कमलमुखी कमल गर्भ सम गौरी ।
कमलेस्थिता भगवती ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥

भुवनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निस्सग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर भुवनदेवता की स्तुति कहना)

ज्ञानादि-गुण-युतानां स्वाध्याय ध्यान संयमरतानाम् ।
विदधातु भुवन-देवी शिवं सदा सर्व साधूनाम् ॥ २ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव

अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर क्षेत्रदेवता की स्तुति कहना)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्र देवता नित्यं भूयान्न सुखदायिनी ॥ ३ ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

(अब बैठकर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना और बाद में दो वांदना देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं । आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइ-

आरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गह । निसीहि अहोकाय कायस-फास । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलताण बहुसुभेण भे-दिवसो वइक्कतो ? जत्ता मे ? जवणिज्ज च भे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअ वइक्कम्म । पडिक्कमामि खमासमणाए देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, ज किंचि मिच्छाए मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

"इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाण, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य "

(कहकर बाया घुटना खडाकर पुरुषवर्ग "नमोऽस्तुवर्द्धमानाय" कहे और स्त्रीवर्ग 'ससारदावा' की तीन स्तुति कहे)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा । तज्जयावाप्तमोक्षाय,परोक्षाय कुतीर्थिना।।१।।येषा विकचारविन्दराज्या ज्याय क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति सङगत प्रशस्य, कथित सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा ।।२।। कषायतापार्दितजन्तु-

निर्वृत्ति, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भव-वृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टि मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

संसारदावानल स्तुति

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणेसमीरं । माया-रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलि मालितानि । सम्पूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीर-पूराभिरामं, जीवाहिंसाऽविरललहरीसंगमागाहदेहं । चूला-वेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधि सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं,पुरिस वर-पुंडरीआणं पुरिस-वरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं लोग-हिअणं लोग-पईवाणं लोग-पज्जोअगराणं, अभय-दयाणं चक्खुदयाणं मग्ग-दयाणं सरण-दयाणं बोहिदयाणं, धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं धम्म-सारहीणं धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं विअट्टछउमाणं,जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खय

मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइनामधेय ठाण स'पत्ताण । नमो जिणाण जिअ-भयाण । जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्स ति णागए काले । स पइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! व दिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण व दामि । इच्छाकारेण स दिसह भगवन् स्तवन भणु ? इच्छ ।

(ऐसा कहकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर अजितशांति स्तवन कहे)

॥ अथ अजितशांति स्तवन ॥

अजिअ जिअ-सव्व भय, सति च पसत-सव्व गयपाव । जय-गुरु सति गुण करे, दो वि जिणवरे पणिवयामि॥१॥[गाहा] ववगय-मगुल भावे, तेऽह विउल-तवनिम्मल सहावे । निरुवम मह प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ [गाहा] सव्व-दुक्ख-प्पसंतीण, सव्वपावप्पसतिण । सया अजिअसतीण, नमो अजिअसतिण ॥३॥ [सिलोगो] अजिय जिण सुहपवत्तण, तव पुरिसुत्तम नाम-कित्तण । तह य धिइ मइप्पवत्तण, तव य जिणुत्तम सति कित्तण ॥ ४ ॥ [मागहिआ] किरिया-विहि सचिअ-कम्म किलेस विमुक्खयर, अजिअ निचिअ च गुणेहि महामुणि-सिद्धिगय । अजिअस्स य सति महामुणिणो-

वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ।। ५ ।। [आलिंगणयं]पुरिसा! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख कारणं। अजिअं संत्ति च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ।।६।। [मागहिआ] अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुर-असुर-गरुल-भुयगवइ-पयय-पणिवइयं। अजिअमहमवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविज-महिअं सययमुवणमे ।।७।। [संगययं] तं च जिणुत्तमसुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्ताम-तित्थयरं, संति मुणी मम संति-समाहि वरं दिसउ ।। ८ ।। [सोवाणयं] सावत्थि-पुव्वपत्थिवं च वर-हत्थि-मत्थय-पसत्थ-विच्छिथन्न-संथियं, थिर सरिच्छ वच्छं मयगल-लीलायमाण वर गंध हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथवारिहं। हत्थिहत्थ-बाहुं धंत-कणग-रुअग-निरुवहयपिंजरं पवर-लक्खणोवचिअ-सोम-चारु-रूवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परमरमणिज्ज-वर-देवदुंदुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ।। ९ ।। [वेड्ढओ] अजिअं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ।। १० ।। [रासालुद्धओ] कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमंतओ महाचक्कवट्टि-भोए महप्पभावो, जो बावत्तरि-पुरवर-सहस्स-वर-नगर-निगम-जणवय-वई, बत्तीसा-राय वर सहस्साणुआयमग्गो। चउदस-वर-रयण-नव-महानिहि चउसट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुंदरवई, चुलसी-हय-गय-रह-सयस-

हत्थि-सामी छण्णवइ-गाम-कोडि-सामी आसि जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ [वेड्ढओ] तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संति थुणामि जिणं, संति विहेउ मे ॥ १२ ॥ [रासानंदिअयं] इक्खाग विदेह-नरीसर नर-वसहा मुणि-वसहा, नव-सारय-ससि-सकलाणण विगयतमा विहुअरया । अजिउत्तम तेअगुणेहिं महा मुणि, अमिअबला विउल-कुला, पणमामि ते भव-भय-मूरण जग-सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ [चित्तलेहा] देव-दाणविंद-चंद-सूरविंद हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ- परम-लट्ठ-रूव धंत-रुप्प-पट्ट-सेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल-दंतपंति ! संति ! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर, दित्त-तेअ-वंद धेअ सव्व-लोअ-भाविअप्पभाव णेअ पइस मे समाहिं॥१४॥ [नारायओ] विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं तिअसवइ-गणाइरेअ-रूवं, धरणिधर-प्पवराइरेअ-सारं ॥१५॥ [कुसुमलया] सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ [भुअगपरिरिंगिअं] सोम-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी। रूव-गुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई,सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणिधर-वई ॥१७॥ [खिज्जिअयं] तित्थ वर-पवत्तयं तम-रय-रहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं । संति-सुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणयसिरिरइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो ।

अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा, गयणंगणवियरण-समुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोडिसय-संथुअं, समणसंघपरिवंदिअं॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं। अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविल-सिअं ॥ आगया वरविमाणदिव्वकणग—रहतुरयपहकर सएहिं हुलिअं । ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचल—कुंडलंगयतिरीड-सोहंतमउलिमाला ॥२२॥ वेड्ढओ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठुसु-विम्हियसव्वबलोघा । उत्तमकंचणरयणपरूवियभासुरभूसण-भासुरिअंगा, गायसमोणयभत्तिवसागय पंजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगु-णमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा पमुइआ सभवणाइ तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महा-मुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोह-वज्जियं । देवदाणव-नरिंदवंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरिणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं । पीण-सोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥२६॥ दीवयं॥ पीणनिरंतरथणभरविणमिअगायलयाहिं, मणिकंच-णपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं । वरखिंखिणिणेउर-सतिलयवलयविभूसणिआहिं, रईकरचउरमणोहरसुंदरदंसणि-

श्राहिं॥२७॥ चित्तक्खरा॥ देवसु दरीहिं पायवंदिश्राहिं वंदिश्रा य जस्स ते सुविक्कमा कमा, श्रप्पणो निडालएहिं मंडणो-ड्डणप्पगारएहिं केहिं केहि वि। श्रवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिश्रा पुणो पुणो॥ २८॥ नारायश्रो॥ तमहं जिणचंद, श्रजिश्रं जिश्रमोह। धुयसव्वकिलेस, पयश्रो पणमामि॥२६॥ नंदिश्रय॥ थुश्रवंदिश्रस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहूहिं पयश्रो पणमिश्रस्सा। जस्स जगुत्तमसासणश्रस्सा, भत्तिवसागयपिंडिश्रयाहिं, देववरच्छरसाबहुश्राहिं, सुरवर रइगुण पंडिश्रयाहिं॥३०॥ भासुरयं॥ वंसमद्दततितालमे-लिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए श्र, सुइसमाणणे श्र सुद्धसज्जगीयपायजालघंटिश्राहिं। वलयमेहलाकलावनेउराभि रामसद्दमीसए कए श्र, देवनट्टिश्राहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं, नच्चिऊण श्रंगहारएहिं वंदिश्रा य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं, तिलोयसव्वसत्त संतिकारयं, पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं॥३१॥नारायश्रो॥ छत्तचामरपडागजुश्रजव मंडिश्रा, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्द-मंदरदिसागयसोहिश्रा, सत्थिश्रवसहसीहरहचक्कवरंकिया॥३२॥ ललिश्रयं॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, श्रदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा॥ ३३॥ वाणवासिश्रा॥ ते तवेण धुश्रसव्वपावया, सव्वलोश्रहिश्रमूल-

पावया । संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥३४॥ अपरांतिका ॥ एवं तव बलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं,कुणउ अ परिसा वि अपसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं,पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसा वि अ सुहनंदिं मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओकालंपि अजिअसंतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्ति सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इच्छामि खमासमणो !वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । श्री आचार्यजी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । श्री उपाध्यायजी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । श्री सर्वसाधुजी मिश्र ।

(अब खड़े होकर बोलना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअ-पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं ! देवसिअ-पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं-अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं-खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं-दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करके प्रगट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥१॥उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंसवासुपुज्जं च । विमलमणंतंच जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥

कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् खुद्दोवद्दव उड्डावण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं-अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं-खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं-दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंसवासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-

जिरण च । वदामि रिट्ठनेमि, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एव मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवोहि-लाभ, समाहिवरमुत्तम दितु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् चैत्यवदन करु ? 'इच्छ' ।

श्री सेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्री-पूज्याभयदेवसूरिविबुधा-धीशैं समारोपित । स सिक्त स्तुतिभिर्जलै' शिवफल स्फुर्जत्फणापल्लव, पार्श्व कल्पतरु स मे प्रथयता, नित्य मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणि । पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत-नाथो नृणा श्रिये ॥ २ ॥

नमुत्थुण अरिहताण भगवताण, आइगराण तित्थय-राण सयसबुद्धाण । पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण पुरिसवर-पु डरीआण पुरिसवर-गधहत्थीण, लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहिआण लोगपईवाण लोगपज्जोअगराण, अभयदयाण चक्खुदयाण मग्गदयाण सरणदयाण, बोहिदयाण,धम्म-

दयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरूअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धि-गइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं। नमो जिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर-विसनिन्नासं,मंगलकल्लाण-आवासं॥१॥विसहर फुल्लिगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ

महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

जय वीयराय! जयगुरु!, होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

सिरि-थंभणय-ट्ठिय-पाससामिणो सेसं तित्थसामीणं । तित्थसमुन्नइकारणं सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ-निमित्तं ॥ २ ॥

(अब खड़े होकर बोलना चाहिये)

श्रीथंमण पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं-अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं-खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं-दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं,णमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पह सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासूपूज्जं च। विमलमणंतं च जि, णंधम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वय नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि।

श्रीचौरासी गच्छ शृंगारहार जगमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जंभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-सचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-सचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-सचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताण भगवंताण णमुक्कारेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।

(चार नवकार का कायोत्सर्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणदण च सुमइं च। पउमप्पह सुपास, जिण च चंदप्पह वंदे॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणत च जिण, धम्म संति च वंदामि॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिण च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाण च॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

श्रीचौरासी गच्छ शृङ्गारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी चारित्र चूड़ामणिजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार नवकार का कायोत्सर्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि

जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तम दितु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठकर बाया घुटना ऊँचा करके चैत्यवदन करें)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् चैत्यवदन करू ? 'इच्छ' ।

चउ-क्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु । सरस-पिअगु-वण्णु गय-गामिउ, जयउ पासु भुवण-त्तय-सामिउ ॥१॥ जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ, नं नव-जलहर-तडिल्लय-लछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वछिउ ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका, पञ्चैते परमेष्ठिन प्रतिदिन कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

नमुत्थुण अरिहताण भगवताण ॥ १ ॥ आइगराण, तित्थयराण, सय-सबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिस-सीहाण, पुरिस-वर-पुडरीआण, पुरिस-वर-गधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाण, लोग-नाहाण, लोग-हिआण, लोग-पईवाण, लोग-

पज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं; धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधराणं,विअट्ट-छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति; सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं । नमो जिणाणं, जिअ-भयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामर ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ॥५॥

(अब दोनो हाथ जोड़कर जयवीयराय कहना)

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भव-निव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल-सिद्धी ॥१॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण-पूआ परत्थकरण च । सुह-गुरु-जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखण्डा ॥२॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥ अथ बडी शांति ॥

भो भो भव्या शृणुत वचन प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्राया त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाज । तेषा शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वस-हेतु ॥१॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहस-म्भवाना समस्ततीर्थकृता जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपति सुघोषाघटाचालनानन्तर सकलसुरा-सुरेन्द्रै सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारक गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेक शान्तिमुद्घोषयति । ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गत. स पन्था. ।

इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा। ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोक्यपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः। ॐ श्रीकेवलज्ञानि-निर्वाणि-सागर-महायश-विमल-सर्वानुभूति-श्रीधर-दत्त-दामोदर-सुतेज-स्वामि-मुनिसुव्रत-सुमति-शिवगति-अस्ताग-नमीश्वर-अनिल-यशोधर-कृतार्घ-ज्जिनेश्वर-शुद्धमति-शिवकर-स्यन्दन-सम्प्रति इति एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थङ्कराः। ॐ श्रीऋषभ-अजित-सम्भव-अभिनन्दन- सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमान इति एते वर्त्तमान जिनाः। ॐ श्रीपद्मनाभ-शूरदेव-सुपार्श्व-स्वयंप्रभ-सर्वानुभूति-देवश्रुत-उदयपेढाल-पोट्टिल-शतकीर्ति-सुव्रत-अमम-निष्कषाय-निष्पुलाक-निर्मम-चित्रगुप्त-समाधि-संवर-यशोधर-विजय-मल्लि-देव-अनन्तवीर्य-भद्रंकर इति एते भावितीर्थङ्कराः। ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम्। ॐ श्रीनाभि-जितशत्रु-जितारि-संवर-मेघ-धर-प्रतिष्ठ-महसेन-सुग्रीव-दृढरथ-विष्णु-वासुपूज्य-कृतवर्म-सिंहसेन-भानु-विश्वसेन-सूर-सुदर्शन-कुम्भ-सुमित्र-विजय-

समुद्रविजय-अश्वसेन-सिद्धार्थं इति एते वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन-जनका । ॐश्रीमरुदेवा-विजया-सेना-सिद्धार्था-सुमङ्गला-सुसोमा-पृथिवीमाता-लक्ष्मणा-रामा-नन्दा-विष्णु-जया-श्यामा सुयशा-सुव्रता-अचिरा-श्री-देवी-प्रभावती-पद्मा-वप्रा-शिवा-वामा-त्रिशला इति एते वर्त्तमान जिन जनन्य । ॐ श्रीगोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षनायक-तुम्बरु-कुसुम-मातग-विजय-अजित ब्रह्मा-यक्षराज-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-गरुड-गन्धर्व-यक्षराज-कुबेर-वरुण-भृकुटि-गोमेध-पार्श्व ब्रह्मा शाति इति एते वर्तमान-जिन यक्षा । ॐ श्रीचक्रेश्वरी-अजितबला-दुरि-तारि-काली-महाकाली-श्यामा-शान्ता-भृकुटि-सुतारका-अशो-का-मानवी-चण्डा-विदिता-अकुशा-कन्दर्पा-निर्वाणी-बलाधारि-णी-धरणप्रिया-नरदत्ता-गान्धारी-अम्बिका-पद्मावती-सिद्धायि-का इति एते वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थङ्कर शासनदेव्य । ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति-कीर्ति-काति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवे-शन-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयतु ते जिनेन्द्रा। ॐरोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृखला-वज्राकुशी-चक्रेश्वरी-पुरुपदत्ता-काली-म-हाकाली-गौरी-गाधारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-मानवी-वैरोट्या-अछुप्ता-मानसी-महामानसी-एतापोडशविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा। ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसघ-स्य शातिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु, पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चद्र-सूर्यागारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतुसहिता सलो-

कपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा। ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृद्-स्वजन-सम्बंधि-बंधु-वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः। अस्मिश्च भूमण्डले आयतननिवासिनां साधु–साध्वी–श्रावक–श्राविकाणां रोगोपसर्गस्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवा भवन्तु सदा प्रादुर्भूतानि (दुरितानि) पापानि शाम्यन्तु शत्रव, पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा। श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्ति-विधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शांति दिशतु मे गुरुः। शांतिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट-दुष्ट-गृहगतिदुरस्वप्नदुर्निमित्तादि सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणं जयतु शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम्। गोष्ठिक-पुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमण-संघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजन-पदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज-सन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा। एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुम-

चन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुमा जलिसमेत' स्नात्रपीठे श्रीसंघ-समेत, शुचिशुचिवपु पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालकृत. पुष्पमालां कंठे कृत्वा शातिमुद्घोपयित्वा शान्तिपानीय मस्तके दातव्य-मिति । नृत्यन्ति नित्य मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठति मत्रान्, कल्याण-भाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अह तित्थयरमाया सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिव तुम्ह सिव असिवोवसम सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्वजगत परहित-निरता भवन्तु भूतगणा । दोषा प्रयान्तु नाश, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोक ॥ ३ ॥ उपसर्गा क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लय । मन प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥ सर्वमगलमागल्य, सर्वकल्याण कारणम् । प्रधान सर्वधर्माणा जैन जयति शासनम् ॥

(चौराग या बिजली का प्रकाश शरीर पर गिरा हो या कोई दोष लगा हो तो इरियावहिय कहकर पीछे सामयिक पारे, दोष न लगा हो तो इरियावहिय करने की आवश्यक्ता नही)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउ, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग, दग मट्टी मक्कडासताणा संकमणे, जे मे जीवा

विराहिआ, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तारीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-करणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं; जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविरा-हिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार लोगस्सका या सोलह नवकारका काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं, सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस-वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-

जिणं च । वंदामि, रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(पाक्षिक आदि प्रतिक्रमण करते समय यदि छींक हो जाय या बिल्ली आदि के अपशुकन हो जाय तो नीचे लिखे अनुसार काउस्सग्ग करके पीछे सामायिक पारे)।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'अपशुकन दुर्निमित्त उड्डावण निमित्त करेमि काउस्सग्ग' ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का कायोत्सर्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिनवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिमरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सामायिक पारने की विधि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहूँ ? इच्छं।

(यहां मुहपत्ति की पडिलेहन करे, पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारूं ? यथाशक्ति।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सामायिक पारेमि ? तहत्ति ।

(आधा अङ्ग झुकाकर खडे खडे तीन नवकार गिने । पीछे घुटने टेक कर सिर झुकाकर 'भयव दसण्णभद्दो' कहे) ।

भयव दसण्णभद्दो, सुदसणो थुलमद्द वइरो य । सफलीकयगिहचाया, साहू एवविहा हुति ॥ १ ॥ साहूण वदणेण, नासइ पाव असकिया भावा । फाहुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईण ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तापि सभरइ जीवो । ज च न सभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कड तस्स ॥ ३ ॥ जं ज मणेण चितिय-असुह वायाइ भासिय किंचि । असुह काएण कय, मिच्छा मि दुक्कड तस्स ॥ ४ ॥ सामाइयपोसह सठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो ससारफलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दस मन का, दस वचन का, बारह काया का, इन बत्तीस दूषणों मे जो कोई दूषण लगा हो, उन सबका मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कड ।

इति पक्खी प्रतिक्रमण विधि समाप्त ।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति ।

रुस्थली कल्पतरुः स जीयाद् युगप्रधानो श्री जिनदत्त सूरिः ॥ १ ॥

कुशलगुरु देव के दर्शन, मेरा दिल होत है परसन। गत में आप समा कोई, न देखा नयन भर जोई ॥ कु० ॥ १ ॥ वीरुद भूमण्डले छाजै, फरसता पाप सहु भाजे। पूजता संपदा पावे, अचिंती लक्ष्मी घर आवे ॥ कु० ॥ २ ॥ इक मुखे गुण कहुं केता, मुझे ज्ञान नहीं रहता। लालचंद की अरज सुन लीजे, चरण की शरण मोहि दीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति ॥

पौषध-विधि ।

ग्राठ प्रहर पौषध विधि–

पोसह के उपगरण लेकर उपाश्रय मे जावें । वहा गुरु महाराज का सयोग न हो तो सामायिक विधि के अनुसार स्थापनाचार्य को स्थापना करके विधि पूर्वक गुरुवदन करें । पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहिय' पढकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छ' ऐसा कहकर मुहपत्ति की पडिलेहना करे । बाद खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पोसह सदिसाहु ? इच्छ' फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण सदिसह भगवान् ! पोसह ठाउं ? इच्छ, कहकर खमासमण देकर खडे हो जाय और हाथ जोडकर, ग्राधा ग्रग नमाकर, तीन नवकार गिने । पीछे "इच्छाकारेण सदिसह भगवान् ! पसाय करी पोसह दडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर नीचे लिखा हुआ पोसह का पच्चक्खाण तीन बार बडे आदमी उच्चरावे या स्वय उचर ले ।

पोसह का पच्चक्खाण ।

करेमि भते ! पोसह, ग्राहार पोसहं, देसग्रो सव्वग्रो वा, सरीरसक्कार-पोसह । सव्वग्रो बम्भचेर-पोसह । सव्वग्रो

अव्वावार-पोसहं । सव्वओ चउव्विहे पोसहे । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं', कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहन करे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं ? इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक ठाउं ? इच्छं' कहकर खमासमण देकर, खड़े होकर तीन नवकार गिने । पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! सामायिक दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर 'करेमि भंते सामाइयं' का पाठ तीनवार उच्चरे, इसमें 'जाव नियमं' की जगह 'जाव पोसहं' बोले । यहां इरियावहियं न बोले पीछे 'इच्छामि० इच्छा० बेसणो संदिसाहुं ? इच्छं', 'इच्छामि० इच्छा० बेसणे ठाउं ? इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं', कहकर खमासमण देकर खड़े खड़े आठ नवकार गिने । पीछे शीत आदि परिसह निवारण के लिए वस्त्र की आवश्यकता हो

१ सिर्फ दिनका पौषध लेना हो तो 'जावदिवसं', दिन-रात का करना हो तो 'जावअहोरत्तिं' और सिर्फ रात का करना हो तो 'जाव सेस दिवसंरत्तिं' कहना चाहिये ।

तो 'इच्छामि० इच्छा० पगुरण संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० पगुरण पडिग्गाहु ? इच्छं' ऐसा कहकर वस्त्र ग्रहण करें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेल संदिसाहु ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेल करूं ? इच्छं', इस प्रकार पोषध लेकर राई प्रतिक्रमण पहले नहीं किया हो तो करें, किंतु इसमे चार स्तुति के देववंदन के बाद नमोऽत्थुणं कहकर खमासमण पूर्वक 'बहुवेल', का आदेश लेकर पीछे आचार्यजी मिश्र इत्यादि कहे। प्रतिक्रमण पूर्ण होने के बाद पडिलेहन नीचे लिखी विधि के अनुसार करें।

पडिलेहन विधि

खमासमण देकर इरियावहि, तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्सका कायोत्सर्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिहलेन संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं,' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहु ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करू ? इच्छं', कहकर धोती और कटीसूत्र (कदोरा) पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवान् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं' ऐसा कहकर स्थापनाचार्य की पडिलेहना 'शुद्धस्वरूप धारे' का पाठ पूर्वक करके ऊंचे स्थान पर रखे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति

पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेवे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन करूं ? इच्छं', कहकर कंबल, वस्त्र आदि सब पडिलेहे। पीछे पौषधशाला की प्रमार्जना करके कचरे को जयणा पूर्वक परठे । पीछे खमासमण देकर इरियावहि०, तस्स उत्तरी०, अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं, कहकर एक नवकार गिने। पीछे 'उपदेशमाला' की सज्झाय कहकर फिर एक नवकार गिने।

उपदेशमाला सज्झाय

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरितिलओ। एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभजिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो । इह विहरिया निरसणा, जए ज्जए ओवमाणेणं ॥ २ ॥ जइत्ता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स । इय जीयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो । उवस्सग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायगुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हियओ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइओ तं सिरेण

इच्छन्ति । इअ गुरुजण मुह भणिय, कयजली उडेहिं सोयव्व ॥ ६ ॥ जह सुरगणाण इदो, गहगण तारागणाण जह चदो । जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा । जं वा पुरओ काउं, विहरति मुणि तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरुवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरववको । गभीरो धिइमतो, उवएसपरो य आयरिओ ॥ ६ ॥अपरिस्सावि सोमो, सगहसीलो अभिग्गहमई य । अविकत्थणो अचवलो, पसतहियओ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामर पह दाउ । आयरिएहिं पवयण, धरिज्जइ सपय सयल ॥११॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वदेहिं । तहवि न करेइ माण, परियच्छइ त तवा नूण ॥ १२ ॥ दिणदिक्खियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचदणा अज्जा । नेच्छइ आसणगहण, सो विणओ सव्व अज्जाण ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहू । अभिगमण वदण नमसणेण, विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो । लोएवि पहू पुरिसो, किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ सवाहणस्स रण्णो, तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना सहस्स महियं, आसी किरस्ववतीण ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी, उलट्ट ती न ताइया ताहिं । उयरट्ठिएण इक्केण ताइया अगवीरेण ॥ १७ ॥

कडिक्कमे। पीछे धर्मध्यान करे, पढ़े गुने या व्याख्यान सुने। लघुनीति और वड़ीनोति परठनी हो तो पहले "अणुजाणह जस्स गो" कहे और पीछे से तीनवार "वोसिरे" कहे। और 'इरियावहियं' पडिक्कमे। जब पौन पोरसी (प्रहर) दिन चढ़ने पर उग्घाडा पोरसी या बहु पडिपुन्ना पोरसी भणावे। यथा–'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी? इच्छं' कहकर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करे। पीछे प्रकट लोगस्स कहकर, 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति संदिस्साहुं? इच्छं', 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं'। कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। उपधानवाही भोजनपात्र पडिलेही रखे। पीछे सज्झाय ध्यान करे। जब कालवेला हो तब मंदिर में या उपाश्रय में नीचे लिखी हुई विधि के अनुसार पांच शक्रस्तव से देववंदन करे।

देववंदन विधि

'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करू? इच्छं' कहकर चैत्यवंदन और नमोऽत्थुणं० कहे। बाद खमासमण देकर इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे

'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवदन करू ? इच्छं' कहकर चैत्य-वदन करे, बाद ज किंचि० नमोऽत्थुणं० कहकर खड़े हो जाय। पीछे अरिहत चेइआए० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करना, पीछे 'नमो अरिहताणं' कहता हुआ कायोत्सर्ग पारकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य' कहकर पहली स्तुति कहे। बाद लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करके दूसरी स्तुति कहे। पीछे 'पुक्खरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करके तीसरा स्तुति कहे। बाद सिद्धाण बुद्धाण० वेयावच्चगराण० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी स्तुति कहे। अब नीचे बैठकर 'नमोऽत्थुण०' कहे, बाद खड़े होकर फिर अरिहत चेइआए० अन्नत्थ० एक नवकार का कायोत्सर्ग पारकर नमोऽर्हत्० कहकर पहली स्तुति कहे बाद लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग कर दूसरी स्तुति कहे। पीछे पुक्खरवरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० एक नवकार का कायोत्सर्ग करके तीसरी स्तुति कहे। बाद सिद्धाण बुद्धाण० वेयावच्चगराण० अन्नत्थ० एक नवकार का कायोत्सर्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी स्तुति कहे। अब नीचे बैठकर नमोऽत्थुण० जावतिचेइआइं० जावत के वि साहू०

नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० या कोई स्तवन कहकर जय वीयराय० कहे। बाद नमोऽत्थुणं कहे ॥इति॥

ऊपर अनुसार देववंदन करने बाद सज्झाय ध्यान करे। जल आदि पीने की इच्छा हो तो नीचे लिखी विधि के अनुसार पच्चक्खाण पारकर जल आदि लेवे।

पच्चक्खाण पारने की विधि

खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करे। बाद प्रकट लोगस्स कहकर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारने की मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं'। कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारूं ? यथाशक्ति' कहकर, फिर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि ? तहत्ति' कहकर मुट्ठी बन्दकर एक नवकार गिने। पीछे जो पच्चक्खाण किया हो उस पक्खाण का नाम लेकर "पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छमि दुक्कडं" बोलकर एक नवकार गिने। बाद खमासमण देकर 'इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं' कहकर 'जयउ सामिय०' जं किंचि० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहु० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जयवीयराय० तक कहे। पीछे क्षणमात्र सज्झाय

ध्यान करके पानी पीवे। तथा उपधानवाही होवे तो पोरसी प्रमुख पच्चावखाण पारकर आहार करे। पीछे आसन बैठा हुआ ही 'दिवसचरिम' पच्चक्खे पीछे इरियावहिय कहकर चैत्यवदन करे (यह चैत्यवदन आहार सवरण निमित्त का है) ॥इति॥

यदि वाहिभूमि (स्थडिल) जाना हो तो आवस्सही कहकर उपयोग पूर्वक निर्जीव भूमि मे या स्थडिल के पात्र मे जावे। 'अणुजाणह जस्स गो' कहकर मलमूत्र परठे। प्राशुक जल से शुद्ध होकर तीन वार 'वोसरामि' कहकर मलमूत्र वोसरावे। पीछे पोषधशाला मे 'निसीहि' बोलते हुए आवे और खमासमण पूर्वक 'इरियावहिय' पडिक्कमे। बाद इच्छामि० इच्छा० गमणागमण आलाऊ ? इच्छ' कहकर गमणागमण इस प्रकार आलोवे—"आवस्सही करी, प्राशुक देशे जइ, सडाशा पूजी, पंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसरावो, निस्सोहि करी, पौषधशाला मे आया। आवति जतेहि ज खहियं, ज विराहिय, तस्स मिच्छामि दुक्कड" ऐसा कहकर बैठ जाय। और सज्झाय ध्यान करे। अब चौथे प्रहर मे सध्याकाल की पडिलेहन नीचे लिखी विधि से करे।

संध्याकालीन-पडिलेहन विधि

खमासमरण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडी पुन्ना पोरसी ? इच्छं' कहकर, खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं' इच्छामि० इच्छा० पौषधशाला प्रमार्जुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं। इच्छं' कहकर आसन, धोती, कटीसूत्र आदि पडिलेहे और पौषधशाला में से कचरा निकालकर जीवादि देखकर जयणा पूर्वक परठे। पीछे खमासमरण पूर्वक 'इरियावहियं' पडिक्कमे। बाद खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहन पडिलेहावोजी ? इच्छं' कहकर स्थापनाचार्यजी को 'शुद्धस्वरूपधारें' के पाठ पूर्वक पडिलेहन करके ऊच्च स्थानपर रक्खें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं' कहकर एक नवकार गिनकर उपदेशमाला की सज्झाय कहे।

बाद एक नवकार गिने । पीछे पच्चक्खाण करे। यदि उप-धानवाही ने आहार किया हो तो दो वादणा देकर पीछे पच्चक्खाण करे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपाधि थडिला पडिलेहन सदिसाहु ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थडिला पडिलेहन करू ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बेसणो सदिसाहु ? इच्छं' । इच्छामि० इच्छा० बेसणो ठाउ ? इच्छं', कहकर बैठ जाय और वस्त्र, कबल, चरवला आदि पडिलेहे और उपवासी यहा पर वस्त्रादि को पडिले-हना कर कटीसूत्र और धोती फिर पडिलेहे । पीछे उच्चार प्रश्रवण के २४ थडिला पडिलेहे ।

चौवीस थडिला पडिलेहण—पाठ

१ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । २ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे। ३ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे । ४ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे । ५ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे । ६ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे। ७ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे। ८ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहि-यासे । ९ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे । १० आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे । ११ आगाढे मज्झे

पासवणे अहियासे । १२ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे । १३ अणागढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । १४ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे । १५ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे । १६ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे । १७ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ १८ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे । १९ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे । २० अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे । २१ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे । २२ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे । २३ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे । २४ अणागाणे दूरे पासवणे अहियासे ।

इन चौवीस थंडिला में से ६ थंडिला शय्या के दो तरफ दक्षिण ओर ३ और बायीं ओर ३ पडिलेहे । ६ थंडिला दरवाजे के भीतर दक्षिण ३ और बायीं ३ पडिलेहे । ६ थंडिला दरवाजे के बाहर दोनों तरफ पडिलेहे और ६ थंडिला उच्चार प्रस्रवण की जगह हो वहां दोनों तरफ पडिलेहे ॥ इति ॥

अब प्रतिक्रमण का समय हो गया हो तो प्रतिक्रमण करे । प्रतिक्रमण में 'आजुणा चार प्रहर' पाठ की जगह नीचे लिखा हुआ ठाणेकमणे का पाठ बोले ।

पौषध सध्या अतिचार

ठाणेकमणे चकमणे, आउत्ते, अणाउत्ते, हरिवकाय सघट्टे बीयकाय सघट्टे, थावकाय सघट्टे, छप्पइया सघट्टे, सव्वस्स वि देवसिय, दुच्चिंतिय, दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

और खुद्दोवद्दव के कायोत्सर्ग के बाद 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय सदिसाहु ? इच्छं०' इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करू ? इच्छं' ऐसा कहकर बैठ कर तीन नवकार आदि सज्झाय करे। प्रतिक्रमण किये बाद गुरु आदि की वेयावच्च करे। प्रहर रात तक सज्झाय ध्यान करे। यदि लघु नीति आदि करना हो तो जयणा पूर्वक थंडिल के स्थान जाकर लघुशका निवारे। वापिस आकर 'भगवन् ! बहुपडिपुन्ना पोरसी ?' ऐसा बोलकर खमासमण पूर्वक इरिया-वहिय पडिक्कमे। पीछे रात्रि सथारा का समय हो तब नीचे लिखि विधि के अनुसार रात्रि सथारा करे।

रात्रि सथारा विधि

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? इच्छं' कहकर 'इच्छामि० इच्छा०

इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करना। बाद प्रकट लोगस्स कहना। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। बाद 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा संदिसाहुं ? इच्छं', इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा ठाउं ? इच्छं' कहे। फिर 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं' ऐसा कहकर चउक्कसाय० नमोऽत्थुणं० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जय वीयराय० तक चैत्यवन्दन करे। बाद भूमि प्रमार्जन करके संथारा बीछावे। पीछे शरीर प्रमार्जन करके संथारे पर बैठकर राइसंथारे का पाठ पढ़े।

राइसंथारा पौषध का पाठ

निसीहि निसीहि निसीहि णमो खमासमणाणं गोयमाइणं महामुणिणं।

(इतना पाठ कहकर तीन नवकार और तीन करेमि भंते कहे बाद नीचे का पाठ बोले)।

अणुजाणह जिट्ठिज्जा ! अणुजाणह परमगुरु ! गुणगण रयणेहिं मंडिअसरीरा। बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइसंथारए ठामि ॥ १॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेण। कुक्कुडिपायपसारणं अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥२॥ संकोइय

सडासं, उवट्ट ते अ कायपडिलेहा। दव्वाई उवओग, ऊसास निरु भणालोऐ ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए। आहार-मुवहिदेह, सव्व तिविहेण वोसरिय ॥ ४ ॥ आसव-कसाय-बंधण, कलहा-मक्खाण-परपरिवाओ। अरइरई पेसुन्न, मायामोस च मिच्छत्त ॥५॥ वोसिरिसु इमाइ, मुक्खमग्ग-ससग्ग-विग्घ-भूआइं। दुग्गइ-निबंधणाइं, अट्ठारसपाव-ठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि। एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणु-सासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसण संजुओ। सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग_लक्खणा ॥ ८ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा। तम्हा संयोगसबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो। जिणपन्नत्त तत्तं, ईअ सम्मत्त मए गहिय ॥ १० ॥ चत्तारि मगल—अरिहंता मगल, सिद्धा मंगल, साहू मगल, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगल। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरण पवज्जामि-अरिहंते सरण पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि, साहू सरण पवज्जामि, केवली पण्णत्तं धम्म सरण पवज्जामि। अरिहंता मंगल मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया। अरिहंता कित्तिअत्ताणं,

कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारेमि ? तहत्ति' कहकर दाहिना हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने। पीछे खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेवे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारू ? यथाशक्ति'। फिर 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारेमि ? तहत्ति' कहकर खमासमण पूर्वक आधा अंग नमाकर तीन नवकार गिने। पीछे घुटने टेक कर सिर नमाकर दाहिना हाथ नीचे रखकर 'भयवंदसण्ण भद्दो' का पाठ बोले। इस प्रकार पौषध पारकर पौषध के उपगरण लेकर, देवदर्शन करके घर आकर अतिथिसंविभाग व्रत आचरण करता हुआ आहार करे। इति आठ प्रहर पौषध विधि।

दिन संबंधी चउपुहरी पौषध विधि

आगे जो आठ प्रहर पौषध लेने की विधि लिखी है उसी प्रकार चार प्रहर पौषध लेने की विधि है, किन्तु पौषध दंडक उच्चरते समय 'जा अहोरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ है, उसी जगह 'जावदिवसं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोलना चाहिये। बाद पूर्ववत् सामायिक ले। यदि प्रतिक्रमण गुरु के साथ न किया हो तो गुरु के पास आकर के पौषध और सामायिक की पूर्ववत् सब विधि करे। पीछे आलोयण खामरणादि निमित्ते मुहपत्ति पडिलेहे और दो वांदना दे।

बादमें 'इच्छा० स० भं० राइग्र आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ अइआरो०' इत्यादि पाठसे राइ आलोवे। फिर एक खमासमण देकर 'इच्छा' का० स० भ० अब्भुट्ठिओमि अब्भितर राइग्र खामेउं ? इच्छ खामेमि राइग्र ज किंचि०' इत्यादि पाठ से राई खामे अर्थात् विधि पूर्वक गुरुवदन करे। पीछे गुरु समक्ष उपवास आदि का पच्चक्खाण करे। बाद दो खमासमण से बहुवेल सदिसरावे। पडिलेहन पहले किया हो तो भी आदेश लेना–'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन सदिसाहु, ? इच्छ' 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ?' इच्छ' कहकर मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे फिर 'इच्छामि० इच्छा० अगपडिलेहन सदिसाहु ? इच्छ इच्छामि० इच्छा० अगपडिलेहन करू ? इच्छ' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण सदिसह भगवन् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहवोजी ? इच्छ'। बाद 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहु ? इच्छ' कहकर कोई वस्त्र विना पडिलेहण रखा हो तो पडिलेहे, नहीं तो फिर एक आसन पडिलेहे। बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय सदिसाहु और सज्झाय करूं कहकर उपदेश-माला की सज्झाय कहे। और पिछले प्रहर पच्चक्खाण करने के बाद दो खमासमण पूर्वक उपधि पडिलेहन सदिसाहु ? और उपधि पडिलेहन करू ? ऐसा कहकर पडिलेहन करे,

परंतु थंडिला पद न कहे और थंडिला पडिलेहे भी नहीं। बाकी सब विधि आठ प्रहर पौषध की तरह समझना ।।इति।।

रात्रि संबंधी चउपुहरी पौषध विधि

जिसने दिन का चउपुहरी पौषध लिया है, उसको यदि रात्रि पौषध का भाव हुआ तो वह संध्या का पडिलेहन और पच्चक्खाण करने के बाद, दो खमासमण पूर्वक पोसहमुहपत्ति पडिलेह कर, दो खमासमण पूर्वक पौषध का आदेश मांग-कर, तीन नवकार गिनकर तीनवार पोसह-दंडक उच्चरें, इसमें 'जावअहोरत्तं पज्जुवासामि' पाठके ठिकाने 'जावरत्ति पज्जुवासामि' ऐसा पाठ उच्चरें। बाद सामायिक मुहपत्ति पडिलेह कर जो पहले विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करें।

यदि कारण विशेष दिन का पौषध न कर सके और रात्रि का पौषध लेनेकी इच्छा हुई हो तो–पहले सब उपग-रण का पडिलेहन कर इरियावहियं पडिक्कमे। पीछे चउवि-हाहार पच्चक्खाण करके दो खमासमण पूर्वक पोसहमुहपत्ति पडिलेहे। बाद दो खमासमण पूर्वक पौषध का आदेश मांगकर, तीन नवकार गिनकर तीनवार पौषध–दंडक उच्चरें। इसमें संध्या समय हो तो 'जावरत्ति पज्जुवासामि' पाठ बोले और दिवस शेष रहा हो तो 'जाव दिवससेसं रत्ति

पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोले। बाद सामायिक मुहपत्ति पडिलेह कर जो पहले विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे। अंत मे पडिलेहन का आदेश मागने के बाद स्थानक शून्यता मिटाने के लिए फक्त एक आसन पडिलेहे, परन्तु पहले पडिलेहन न किया हो तो सब उपधि पडिलेहे। और उच्चार प्रस्रवण के चौवीस थंडिला भी पडिलेहे। बाकी सब विधि पहले की तरह समझना ॥ इति ॥

देसावगासिक लेने और पारने की विधि

देसावगासिक लेनेकी विधि पौषध लेने की विधि के अनुसार है। परंतु पौषध लेने के आदेश मे देसावगासिक का आदेश लेना चाहिये, जैसे—"देसावगासिक मुहपत्ति पडिलेहु ? देसावगासिक संदिसाहु ? देसावगासिक ठाउ ? देसावगासिक दंडक उच्चरावोजी ?" इस प्रकार खमासमण पूर्वक आदेश मागकर 'करेमि भंते ? पोसहं०' यहा पौषध के पच्चक्खाण के बदले नीचे लिखा हुआ देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन बार कहना चाहिये।

देसावगासिक का पच्चक्खाण

अहं णं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं देसावगा-

सियं, खित्तश्रोणं इत्थ वा, अन्नत्थ वा, कालश्रो णं जाव धारणा, भावश्रो णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अन्नेण केणवि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवडइ ताव अभिग्गहो, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ।

इस प्रकार देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन वार उच्चरें। और इसमें बहुवेल का आदेश नहीं लेवें। देसावगासिक जघन्य से तीन सामायिक और उत्कृष्ट से १५ सामायिक का होता है।

देसावगासिक पारने की विधि पौषध पारने की विधि के अनुसार समझना। जैसे —'देसावगासिक पारूं ? पारेमि ?' इत्यादि दो खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर पारने का सूत्र 'भयवं दसण्णभद्दो०' के पाठ में 'सामाइय पोसह संठियस्स' की जगह 'सामाइय देसावगासियं संठियस्स' इत्यादि पाठ कहे ॥ इति ॥

अथ मांगलिक सप्त स्मरणानि



(१) प्रथम श्री बृहदजितशान्तिस्मरणम् ।

अजिअ जिअ-सव्व-भय, संति च पसंत-सव्व-गय-पाव । जय-गुरु-संति-गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ॥ ववगय-मंगुल-भावे, तेहं विउल-तव-निम्मल सहावे । निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतिणं । सया अजिय-संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) ॥ अजिय ! जिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम-कित्तणं । तह य धिइमइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ (मागहिया) ॥ किरिआ-विहि-संचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि-सिद्धि-गयं । अजिअस्स य संति-महा-मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) ॥ पुरिसा ! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ (मागहिआ) ॥ अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरय-जर-मरणं, सुर-असुर गरुल-

भुअगवइ-पयय-पणिवइअं । अजिअमहमवि अ सुनय-नय-निउ-णमभयकरं,सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज्ज-महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ (संगययं) ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति विमुत्ति-समाहि-निहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, संति-मुणी मम संति समाहि-वरं दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं) सावत्थि-पुव्व-पत्थिवं च वर-हत्थि मत्थय-पसत्थ-वित्थिन्न-संथिअं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलायमाण-वर-गंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथवारिहं । हत्थि-हत्थ-बाहु-धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं, पवर-लक्खणोव-चिअसोम-चारु-रुवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परम-रमणिज्ज-वर-देव-दुन्दुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥ ९ ॥ (वेड्ढओ) ॥ अजिअं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं । पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए मह-प्पभावो, जो बावत्तरि-पुर-वर सहस्स-वर-णगर-णिगम-जणवय-वई, बत्तीसा-रायवर-सहस्साणुयाय-मग्गो, चउदस-वर-रयण-नव-महानिहि-चउसट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुन्दर-वई,चुलसी-हय-गय-रहसय-सहस्स-सामी, छन्नवइ-गाम-कोडि-सामी आसिज्जो भारहम्मि भयवं ॥११॥(वेड्ढओ)॥तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्व-भया । संति थुणामि जिणं,संतिं विहेउ मे॥१२॥ (रासानंदिययं) ॥ इक्खाग-विदेह-नरीसर !

नर-वसहा! मुणि-वसहा! ,नव-सारय ससि सकलाणण! विगय-तमा ! विहुअ-रया ! । अजिउत्तम–तेअ–गुणेहिं महा-मुणि-अमिय-बला ! विउल-कुला !, पणमामि ते भव-भय-मूरण ! जग-सरणा ! मम सरण ॥ १३ ॥ (चित्तलेहा) ॥ देव-दाणविंद-चंद-सूर-वंद ! हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ-परम, लट्ठ-रूव ! धंत-रुप्प-पट्ट-सेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल, दंत-पंति ! संति ! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर !, दित्त-तेअ-वंद-धेअ । सव्व-लोअ-भाविअ-प्पभाव-णेय । पइस मे समाहिं ॥१४॥ (नारायओ) ॥ विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर–सूर-कराइरेअ-तेअं । तियसवइ-गणाइरेअ-रूव,धरणिधरपवरा-इरेअ-सार ॥१५॥ (कुसुमलया) ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तव-संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ (भुअगपरिरिंगिय) ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव–सरय-रवी । रूव गुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई, सार गुणेहिं पावइन तं धरणि-धर-वई ॥१७॥ (खज्जिअय)॥तित्थ-वर-पवत्तय तम-रय-रहिअ, धीर जण-थुअच्चिअ–चुअकाले-कलुस । संति-सुह-प्पवत्तय ति गरण-पयओ,संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअय) ॥ विणओणय सिरि-रइअजलि रिसि-गण संथुअ थिमिअं,विबुहाहिव-धणवइ नरवइ-

थुअ-महिअंच्चियं बहुसो । अइरुग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगणविअरण-समुइय-चारण-वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला) ॥ असुर-गरुल-परिवंदिअं, किन्नरोरग-णमंसिअं । देव-कोडि-सय-संथुअं, समण-संघ-परिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयओ पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं) ॥ आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं । ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहंत-मउलि-माला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा वेर-विउत्ता, भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसि-असंभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा । उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणय-भत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सोस-पणामा ॥२३॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमि-ऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ स-भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, राग-दोष-भय-मोह-वज्जिअं । देव-दाणवनरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तम-महातवं नमे ॥२५॥ (खित्तयं) ॥ अंबरंतर-वियारणिआहिं, ललिअ-हंस-वहू-गामिणिआहिं । पीण-सोणि-थण-सालिणिआहिं, सकल-कमल-दल-लोअणिआहिं ॥२६॥ (दीवयं) ॥ पीण-निरंतर-

थरा-भर-विणमिश्र-गाय-लयाहि, मणि-कञ्चरण पसि-ढिल मेहल-सोहिम्र-सोणि-तडाहिं । वर खिखिणि-नेउर-सतिलय वलय-विभूसणियाहिं,रइकर-चउर-मणोहर-सुन्दर दसणिम्राहिं ॥२७॥ (चित्तखरा) ॥ देव सुन्दरीहिं पाय-वदम्राहिं वदम्रा य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मडणोड्डण पगारएहिं केहिं केहि वि अवग-तिलय पत्त लेह-नामएहिं चिल्लएहिं सगय-गयाहिं, भत्ति-सन्निविट्ठ-वंदणा गयाहि हुँति ते वदिम्रा पुणो पुणो ॥२८॥ (नारायम्रो) ॥ तमह जिणचव, अजिम्र जिम्र-मोह । धुम्र-सव्व-किलेस, पयम्रो पणमामि ॥२६॥ (नदिम्रयं) ॥ थुम्र-वदिम्रस्सा रिसि-गण-देव गरोहि, तो देव-वहूहि पयम्रो पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तम-सासणम्रस्सा, भत्ति वसागय पिंडिम्रम्राहिं । देव-वरच्छरसा-बहुम्राहि, सुर-वर-रइ-गुण पडिम्रम्राहि ॥३०॥ (भासुरय)॥वस-सह्-तति-ताल-मेलिए, तिउ-क्खराभिराम-नह्-मीसए कए अ, सुइ-समाणणे अ सुद्ध सज्ज-गीम्र पाय-जाल-घटिम्राहिं, वलय-मेहला-कलाव-नेउरा-भिराम-सह्-मी-सए कए य देव-नट्टिम्राहिं, हाव-भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, नच्चिऊण अ ग-हारएहिं वदिम्रा य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तय तिलोय-सव्व सत्त-सति-कारय, पसत-सव्व पाव-दोसमेस हं नमामि सतिमुत्तम जिणं ॥३१॥ (नारायओ) ॥ छत्त-

चामर-पडाग-जूअ-जव-मंडिआ, झय-वर-मगर-तुरय-सिरिव-च्छ-सुलंछणा। दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया॥३२॥ (ललिअयं)॥ सहावलट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ-सव्व–पावया, सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया। संथुआ अजिय-संति पायया, हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥३४॥ (अपरान्तिका) ॥ एवं-तव-बल–विउलं, थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं। ववगय-कम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं, मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ (गाहा)॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग–निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ-कालं पि अजिय-संति-थयं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम-पयं, अहवा कित्ति सुवित्थडं भुवणे। ता तेलु-क्कुद्धरणे, जिण-वयणे आयरं कुणह ॥४०॥ इति श्रीबृह-दजितशान्तिस्तवनं प्रथमं स्मरणम् ॥ १ ॥

(२) द्वितीय लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ।

उल्लासि-क्कम णक्ख-णिग्गय-पहा दण्ड च्छलेणंगिए, वंदारूण दिसतइव्व पयड निव्वाणमग्गावलिं । कु दिंदुज्जल-दलकंति मिसओ नीहत-नाणंकुर-क्केरे दोवि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमंकरे ॥१॥ चरम जलहि नीरंजो मिणिज्जज-लीहिं, खय-समय-समीर जो जिणिज्जा गईए । सयल-नहयल वा लंघए जो पर्एहिं, अजियमहव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥२॥ तहवि हु बहु माणुल्लासि-भत्ति ब्भरेण, गुणकणमिव कित्तेहामि चिंतामणि व्व । अलमहव अचिंताणंत सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्व वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥ सयल-जय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-दोघट्ठ-थट्ठं । नमिर-सुर किरीडुग्घिट्ठ-पायारविंदे, सययम-जिअ-संती ते जिणंदेभिवंदे ॥४॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परम तित्ती होइ संसार छित्ती, जिण जुअ पय-भत्ती ही अचिं-तोरु सत्ती ॥ ५ ॥ ललिअ-पय-पयार भूरि-दिव्वग-हार, फुड-घण-रस-भावोदार-सिंगार सारं । अणिमिस-रमणीजंद्द सण च्छेअ भीया, इव पणमण मंदा कासि-नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअ संती ते कया सेस-संतो, कणय रय-पिसंगा छज्जए जाणि मुत्ती । सरभस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी,

घण-थण-घुसिणिक्कुप्पंक-पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविह-नय-भंग वत्थु णिच्च अणिच्चं, सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं। इय कुनय-विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसि, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंधयारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त-छण्णं। फुरइ फुड-फलं ताणत-णाणंसु-पूरो, पयड-मजिअ-संतीज्झाण-सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि-करि-हरि-तिण्हुण्हबु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारीरुद्द-खुद्दोवसग्गा। पल-यमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निविडतर-तमोहा भक्खरालुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअ-दुरिअ-दारु-द्दित्त-झाणग्गि-जाला, परिगयमिव गोरं चिंतिअं जाण रूवं। कणय-निहसरेहा-कंति-चोरं करिज्जा, चिर-थिरमिह लच्छिं गाढ-संथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडवि-निवडियाणं पत्थि-वुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-ट्ठियाणं। जलिअ-जलण-जाला-लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संति-नाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि-करि-परिकिण्णं पक्क-पाइक्क-पुन्नं, सयल पुहवि रज्जं छड्डिउं आण-सज्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति-मग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-नित्तुप्पलाहिं, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहिं। ललिअ-भुअ-लयाहिं पीण-सोणि-त्थलाहिं, सइ सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस-किडिम-कुट्ठ-गंठि-कासाइसार-खय-जर-

वण लूआ सास-सोसोदराणि । नह मुह दसणच्छी-कुच्छि-कण्णाइ-रोगे, मह जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु दुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग-थुत्त वच्छरे वा पवित्त । पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअ-सत्तु-पुत्त ! सिरि-अजिअ-जिणेसर !, तह अइरा विस-सेण-तणय ! पचम-चक्कीसर ! । तित्थकर ! सोलसम ! संति ! जिण-वल्लह-संथुअ !, कुरु मंगल मम हरसु दुरियमखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघु अजितशान्तिस्तवन द्वितीय स्मरणम् ॥ २ ॥

(३) नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय-सुर-गण-चूडामणि-किरण रंजिअ मुणिणो । चलण-जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय-कर-चरण नह-मुह-निबुड्ड-नासा विवन्नला-यण्णा । कुट्ठ-महा-रोगानल-फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण सलिलंजलि–सेअ–वुड्ढिअ-च्छाया । वण दव दड्ढा गिरि पायवव्व पत्ता पुणो लच्छि ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे । संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्क वावारे ॥ ४ ॥ अविदलि

यजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पास जिण चलण जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुय वणदव-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे । डज्झंत-मुद्ध मिय-वहु, भीसण-रव-भीसणम्मि वणे ॥६॥ जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल-तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोग भीसण,—फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं । उग्ग-भुअंगं नव-जलय, सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिसं, दूर परिच्छूढ विसम विस वेगा । तुह नामक्खर फुड सिद्ध मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ६ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर पुलिंद-सद्दूल-सद्द-भीमासु । भय विहलवुन्न कायर उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहव-सारा, तुह नाह ! पणाम-मत्तवावारा । ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनल-नयणं, दूर विआरिय-मुहं महाकायं । नह-कुलिस-घायविअलिअ-गइंद-कुम्भ-त्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय-ससंभम पत्थिव, नह मणि-माणिक्क-पडिअ-पडिमस्स । तुह वयण-पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि धवल दंत मुसलं, दीह करुल्लाल वड्ढिउच्छाहं । महु-पिंग नयण जुअलं, ससलिल नव-जलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महा गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलण-जुअलं मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥१८॥ समरम्मि तिक्ख-

खग्गा-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कवंधे । कुंत विणिभिन्नकरि-कलह मुक्क सिक्कार पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जय-दप्पुद्धररिउ-नरिंद-निवहा भडा जस धवलं । पावंति पावपसमिण! पास-जिण! तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल-जलण विसहर-चोरारि-मइन्द-गय-रण भयाइ । पास जिणनाम संकित्तणेण पसमेंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एव महाभयहर, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं । भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाण ॥ १९ ॥ राय-भय-जक्ख-रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्ख-पीडासु । सञ्झासु दोसु पथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माण-तुंगस्स । पासो पाव पसमेउ, सयल-भुवणच्चिअ-चलणो ॥२१॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवन तृतीय स्मरणम् ।

(४) गणधरदेव-स्तुतिरूप चतुर्थं स्मरणम् ।

त जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त संताण-सुह-जणयं ॥१॥ नासिय-सयल-किलेसा, निहय कुलेसा पसत्थ-सुह-लेस्सा । सिरिवद्ध-माण-तित्थस्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥२॥ निद्दड्ढकम्म-बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा । सिद्धा ति-जय-पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता, पंच-पयार सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय-

कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सिअवाय-वायगा वाए। पवयण-पडणीय-कए-ऽवणितु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण-साहणुज्जय-साहूणं जणिय-सव्व-साहज्जा। तित्थ-प्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ। तित्थस्स दंसणं तं, मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग-भव्वंगि-वग्ग-कय-सम्मो। गुण-सुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ भव्व-सत्त-सिव-सम्मो। नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-संघस्स ॥ ९ ॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव-सुह-मइणो कुणंतु तित्थस्स। सिरि-वद्धमाण-पहु-पयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायंग-गयमुह-पमुक्खा। सिरि-बंभसंति-सहिआ, कय नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिंआ; सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स। चक्केसरि-वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा-देवीउ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं। अच्छुत्ता-सहिआओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ समं ॥ १३ ॥ जिण-सासणं-कय-रक्खा, जक्खा चउवीस-सासण-सुरावि। सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासंतु ॥ १४॥ जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे।

वेयावच्चकरावि अ, तित्थस्स हवतु संतिकरा ॥ १५ ॥
जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय साहज्जो ।
गोयरई गोअजसो, सपरिवारो सिव दिसउ ॥ १६ ॥ गिह-
गुत्त खित्त-जल-थल-वण पव्वयवासी देव-देवीओ । जिणसासण
ट्ठिआण, दुहाणि सव्वाणि निहणतु ॥ १७ ॥ दस-दिसि-
पाला स-खित्तपालया नव ग्गहा स-नक्खत्ता । जोइणि-राहु-
-गह-काल-पास-कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह काल-कटएहिं
सविट्ठि-वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुह, दिसतु
सव्वस्स सघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ वाणमतर, जोइस वेमा
णिआ य जे देवा । धरणिद-सक्क सहिआ, दलतु दुरियाइ
तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्क जस्स जलत, गच्छइ पुरओ पणा
सिय-तमोह । त तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स
॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्जवि सासण जए
जयइ । सिद्धि-पह-सासण कुपह-नासण सव्व-भय-महणं ॥२२॥
सिरि-उसभसेण-पमुहा, हय-भय-निवहा दिसतु तित्थस्स ।
सव्व जिणाण गणहारिणोऽणह वछिय सव्व ॥२३॥ सिरि-
वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थ समप्पिय जस्स । सम्म सुहम्म-
सामी, दिसउ सुह सयल सघस्स ॥२४॥ पयईए भद्दिया जे,
भद्दाणि दिसतु सयल-सघस्स । इयर-सुरा वि हु सम्म, जिण
गणहर-कहिय-कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझ,

दुसमज्झं तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताणाए ठिश्रो, सुनिट्ठि-श्रट्ठो सुही होई ॥२६॥ इति श्रीगणधरदेवस्तुति-नामकं चतुर्थं स्मरणम् ॥४॥

(५) गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चम स्मरणम् ।

मयरहियं गुण-गण-रयण,-सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥१॥ निम्म-हिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा। पणयंगि-वग्ग दाविश्र-सुह-संदोहा सुगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा, समत्त-पर-तित्थ-जणिय-संखोहा। पडिभग्ग-लोह-जोहा, दं-सिअ-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिश्र-सत्य-वाहा, हय-दुहदाहा सिवंव-तरु-साहा। संपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहि-णुव्व अग्गाहा ॥४॥ सुगुण-जण-जणिय-पुज्जा, सज्जो निर-वज्ज-गहिय-पव्वज्जा। सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गुरु-गिरि-चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-प्पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहिश्र-महा। ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥६॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिश्रो दुरंत-भवहारी। सिरि-नेमिचंद-सूरी उज्जोअण-सूरिणो सुगुरू ॥ ७ ॥ सिरि वद्ध-माणसूरी, पयडीकय-सूरि-मंत माहप्पो। पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससंकुव्व सुह-जणश्रो ॥ ८ ॥

सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि ।
जुगपवर-सुद्ध-सिद्धं त-जाण ओ पणय-सुगुण-जणो ॥ ९ ॥
पुरओ दुल्लह-महिव,–ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का
विआरिऊण, सीहेण व दव्वलिंगि-गया ॥१०॥ दसमच्छेरय-
निसि-विप्फुरत-सच्छन्द-सूरिमय-तिमिरं । सूरेण व सूरि जिणो,–
सरेण हय-महिअ-दोसेण ॥११॥ सुकइत्त-पत्त-कित्ती, पयडिअ-
गुत्ती पसत-सुह-सुत्ती । पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचंद-जईसरो
मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ-नवग-सुत्तत्थ,—रयणकोसो पण-
सिअ-पओसो । नवमीअ-भविअ-जण-मण, कय-संतोसो विगय
दोसो ॥१३॥ जुग-पवरागम-सार—प्परूवणा-करण-बन्धुरो
धणिअं । सिरि-अभयदेव सूरी, मुणि-पवरो परम-पसम-धरो
॥ १४ ॥ कम-सावय-सत्तासो, हरिव्व सारंग-भग्ग-संदेहो ।
गयसमयदप्प-दलणो, आसाइय-पवर-कव्व-रसो ॥ १५ ॥
भीमभव-काणणम्मि अ, दसिअ-गुरु-वयण रयण-संदोहो ।
नीसेस सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥
उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणुओग-प्पहाण-सचरणो । असम-
मयराय महणो, उड्ढ-मुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दसिअ-
निम्मल-निच्चल,-दंत गणोगणिअ-सावओत्थ-भओ । गुरु-
गिरि गुरुओ सरहुव्व सूरी जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥
जुग-पवरागम-पीऊस-पाण-पीणिय मणा कया भव्वा ।

जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फु-रिय-पवर-पवयण,–सिरोमणी वूढ-दुव्वह-खमो य । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण-महीणं, सुगुरूणं पारतंतमुव्वहइ । जयइ जिणदत्त-सूरी, सिरि-निलओ पणय-मुणि-तिलओ ॥२१॥ इति श्रीगुरूपार-तन्त्र्यनामकं पंचमं स्मरणम् ॥५॥

(६) षष्ठं 'सिग्घमवहरउ' स्मरणम्

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण-वीराणाणुगामि-संघस्स । सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥१॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा । सिरि-वद्धमाण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥२॥ सक्काइणो सुरा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति । अवहरिय विग्घ-संघा, हवंतु ते संघ-संतिकरा ॥३॥ सिरिथंभणय-ट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीणं । निद्दलिय-दुरिय-विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥४॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहय-पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते । कय-सगुण-संघ-रक्खा, हवंतु संपत्त-सिव-सुक्खा ॥५॥ अप्पडिचक्का-पमुहा, जिण-सासण-देवया य जण-पणया । सिद्धाइया-समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥६॥ सक्काएसा सच्चउर-पुरट्ठिओ वद्ध-

माण-जिण-मत्तो । सिरि-वभसति-जक्खो, रक्खउ सघ पय-
रोण ॥७॥ खित्त-गुह-गुत्त-सताण-देस देवाहिदेवया ताओ ।
निव्वुइ-पुर-पहिआण, भव्वाण कुणतु सुक्खाणि ॥८॥
चक्केसरि-चक्कधरा, विहि पहरिउच्छिण्ण-कधरा धणिय ।
सिविसरणि-लग्ग-सघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥९॥
तित्थवइवद्धमाणो, जिणेसरो सगओ सुसघेण । जिणचदोऽ-
भयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहू मं ॥१०॥ सो जयउ
वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हय तिमिरो । जिणचदाऽ-
भयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥११॥ गुरु-जिणवल्लह-
पाए,-ऽभयदेवपहुत्त-दायगे वदे । जिणचद-जिणेसर-वद्धमाण-
तित्थस्स वुड्ढि-कए ॥१२॥ जिणदत्ताण सम्म, मन्नति कुणति
जे य कारिति । मणसा वयसा वउसा, जयतु साहम्मिओ ते वि
॥१३॥ जिणदत्त-गुणे नाणाइणो सया जे धरिति धारति ।
दसिअ सिअवाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥१४॥
इति षष्ठ स्मरणम् ॥६॥

(७) उवसग्गहरनामकं सप्तम स्मरणम्

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्म-घण मुक्क । विसहर-विस-निन्नास, मगल कल्लाण आवास ॥ १ ॥ विसहर
फुलिग-मत, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-

मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंता-मणि-कप्प-पायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस !, भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥७॥

स्तुति स्तवन संग्रह

द्वितीया की स्तुति ।

मन शुद्ध वदो भावे भवियण श्रीसीमधर रायाजी, पाचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचन वरणी कायाजी। श्रेयास नरपति सत्यकि नन्दन वृषभ लंछन सुखदायाजी, विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥१॥ काल अतीत जे जिनवर हुआ, होस्ये जेह अनन्ताजी, सप्रतिकाले पचविदेहे वरते वीस विख्याताजी । अतिशयवत अनन्त गुणाकर जगबंध जगत्राताजी, ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे, पावे शिव सुख शाताजी ॥२॥ अरथे श्री अरिहत प्रकाशी सूत्रे गणधरआणीजी, मोह मिथ्यात्व तिमिर भर नाशन अभिनव सूर समाणीजी । भवोदधि तरणी मोक्षनी-सरणी नयनिक्षेप सोहाणीजी, ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भवि प्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपचागुली माईजी, विघन विडारिणी सपत्ति कारिणी, सेवक जन सुपदाईजी । त्रिभुवनमोहिनी अतरयामिनी जग जन ज्योति सवाईजी, सानिध्यकारो सघ ने होज्यो श्रजिनहर्ष सुहाईजी ॥४॥

पंचमी की स्तुति

निज तत्त्वप्रकाशक, तारक भव्य समाज
अतिशय गुणधारक, वीतराग जिनराज
पंचम गतिगामी, पंचम ज्ञान प्रकाश
तीरथ पति पंचम, वन्दू भावोल्लास ॥ १ ॥

अट्ठकोडी उपर, छप्पन लाख विचार
सत्ताणु सहसवर, जिन मन्दिर शतचार
ऊर्ध्व अध तिर्यग, तीनों लोक मझार
सवि तीरथ प्रणमो, पावो भवजल पार ॥ २ ॥

अनुयोगावश्यक, नन्दी सूत्र प्रधान
मतिश्रुत अवधि मन, पर्यव केवल ज्ञान
चउ मूक स्वरूपी, भाषक श्री श्रुतज्ञान
निज पर उपकारक, सेवो चतुर सुजान ॥ ३ ॥

सिद्धायिका देवी, जिन शासन रखवाल
सहु संघना संकट, दूर करो तत्काल
सुखसागर सुवरण, कोमल पद परधान
शुभ ज्ञान सहायक, पावन दे वरदान ॥ ४ ॥

अष्टमी की स्तुति

चउवीशे जिनवर प्रणमु हूँ नितमेव, आठम दिन करिये चन्द्रप्रभुजीनी सेव । मूरति मन मोहे जाणे पूनमचन्द, दीठा दु ख जावे पामे परमानद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इन्द्र पूजे प्रभुजीना पाय, इन्द्राणी अपच्छरा कर जोडी गुण गाय । नदीसर द्वीपे मिल सुरवरनी कोड, अट्ठाई महोच्छव करता होडा होड ॥२॥ शत्रुञ्जय शिखरे जाणी लाभ अपार, चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियणने तारें देई धरम उपदेश, दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेष ॥३॥ पोसह पडिक्कमणो करिये व्रत पच्चक्खाण, आठम तप करता आठ करमनी हाण । आठ मगल थाये दिन दिन कोड कल्याण, जिनसुखसूरि कहे शासनदेवी सुजाण ॥४॥

आयविल की स्तुति

निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिव गतिगामीजी,
करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ॥
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रगे जी,
ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर सगेजी ॥१॥

अरिहन्त सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंताजी,
दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नव-पद जग जयवंताजी ॥
एहनु ध्यान धरंतां लहिये, अविचल पद अविनाशी जी,
ते सघला जिननायक नमिये, जिणए नीति प्रकाशीजी ॥२॥
आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशेजी ॥
उजवाली सातमथी करिये, नव आंबिल नव दिवसेजी ॥
तेर सहस वलि गुणियें गुणणु, नवपद केरो सारोजी ॥
इण परि निर्मलतप आदरिये, आगम साख उदारोजी ॥३॥
विमल कमलदल लोयण सुन्दर, श्री चक्केसरि देवीजी ॥
नवपद सेवक भविजन केरा, विघ्न हरो सुर सेवीजी ॥
श्रीखरतर गच्छनायक सद्गुरु, श्री जिनभक्ति सुरिंदाजी॥
तासु पसाये इणपरि पभणे, श्रीजिनलाभसूरिंदाजी ॥४॥

श्री नेमिनाथजी की स्तुति

सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोभितं, घन-सघनश्याम शरीर सुन्दर शंख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरवर शिखर वंदूं, नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥१॥ अष्टापदें श्री आदि जिनवर, वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा,

नेमि रेवयगिरि वरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर, मुगति पहुता मुनिवरु, चउवीस जिणवर नित्य वदू सयल सघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अग उपाग बारे दश पयन्ना जाणियें, छच्छेद ग्रन्थ पसत्थ अत्था चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोगद्वार उदार नदीसूत्र जिनमत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी भाष्य पैंतालीश आगम ध्याइए ॥ ३ ॥ वुहुँ दिसें बालक वोय जेहने सदा भवियण सुखकरू, दुख हरे अम्बा लुम्ब सुन्दर दुरिय दोहग अपहरु ॥ गिरनार मडण नेमि जिनवर चरणपकज सेविये, श्री सघसहुने सदा मगल करो अम्बा देविये ॥४॥ इति गिरनारमडण श्रीनेमि० ॥

पर्युषण की स्तुति

वलि वलि हुँ ध्याऊ, गाउँ जिनवर वीर। जिनपर्व पजुसण, दाख्या धर्मनी सीर। आषाढ चौमासे हुतोदिन पच्चास। पडिक्कमणु सवच्छरी, करिये अण उपवास ॥१॥ चउवीसे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावे भरिये पुण्य भडार। वलि चैत्यप्रवाडे फिरता लाभ अनत, इम परव पजुसण सहुमे महिमावत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनाये वचाय, श्री कल्पसूत्र जिहा सुणता पाप

पुलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी परव पजुसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवच्छल करिये वारं वार, केई भावना भावे केई तपसी शीलधार । अड दीह पजुसण एम सेवंत आणंद, सुयदेवी सानिध्य कहे जिनलाभसूरिंद ॥४॥

दूज का स्तवन

सुगुण सनेही साजना, श्री सीमंधर स्वाम
अर्ज सुणो एक जगगुरु, मुझ आशा विसराम
पूर्व विदेहे विजय भली, पुष्कला वई नाम
जिहां विचरे जिनवरजी, धन ते नयरी गाम । सुगुण ॥१॥
धन ते लोक सुणे जे, जोजन गामिनी वाण
धन ते महियल चरणधरे, जिहां जिनवर भाण
धन ते भविजन जे रहे, प्रभु ताहरे परसंग
वदन कमल निरखी नित, माने उत्सव अंग । सुगुण ॥२॥
सुगुरु मुखे प्रभु सुजश तुम्हीनो, सांभल कान
मिलवाने उलसे मन माहरुं, धरुं एक ध्यान
भगति जुगति करवानी छे, मुझ सबली जोड
पण प्रभु लग पहुंचीजे, तेह नहीं पग दोड । सुगुण ॥३॥

आडा डूंगर अति घणा, विच वहे नदिया पूर
किम मुझथी अवराये, प्रभुजी एटली दूर
आँखलडी उलझोकरे, जोयवा मुख जिनराज
पाखलडी पाई नहीं तो विन किम सरे काज । सुगुण ॥४॥

वाटलडी वह तो कोई, न मिले संगू साथ
कागलियो लिख आयू हूँ, जिम तेह ने हाथ
जाणू शशीहर साथे, कहूँ सदेशा जेह
पण अलगो थई, उपरि वाटे निकले तेह । सुगुण ॥५॥

जो कोई रीते प्रभुजी, तुमथी एथ अवाय
तो इण भरतना वासी, भविजन पावन थाय
साहिबनी तो सुनजर, सघले सरिखी होय
पण पोतानी प्राप्तिसारु, फल प्रति जोय । सुगुण ॥६॥

अलगो छू पण माहरे, तुमसु साचो प्रीत
गुण गुणवतना आवे, हियडे खिण-खिण चित्त
हू छु सेवक तु छे माहरो, आतमराम
नहींय विसारू जीवु ज्या लग ताहरु नाम । सुगुण ॥७॥

साचे दिलथी मुझशु, धरजो धर्म सनेह
करुणा कर प्रभु करजो, मोपरि महेर अछेह

दूषम काल तणो दुःख, टालो दीन दयाल
पालो विरुद संभालो, निज सेवकशु कृपाल। सुगुण ॥८॥
आशा विलुद्धा अलग थकी पण करू अरदास
पण मोटानी महिर छतां, नवी थाय निराश
कोई वसे प्रभु पासे, केई वसे छे दूर
राज महिरनी रीते, सकल ते जाणे हजूर। सुगुण ॥६॥
शिवसुख दायक नायक, लायक स्वामी सुरंग
ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आतम उमंग
सहिजे एक पलक जो थाये प्रभु तुझ संग,
लाभ उदय जिनचन्द्र लहे नित प्रेम अभंग। सुगुण ॥१०॥

अष्टमी का स्तवन

आठम जिन वन्दन करिये, आठम तप विधि आदरिये
निज आठ परम गुण वरिये, आठम तप विधि आदरिये ॥टेर॥
आठ कर्म कलंक निवारे, आठ मंगल घर विस्तारे
आठ सिद्धि अनुपम वरिये० ॥ आठम ॥ १ ॥
शठ आठ महा, सद टारी, अध्यातम रूप विचारी
पूजा आठ प्रकार से करिये० ॥ आठम ॥ २ ॥

तप आतम बल उपजावे, मोह राज का ताप मिटावे
तप उपशम युत चित्त धरिये० ॥ आठम ॥ ३ ॥
शुभ योग अवचक धारी, निज आतम कर अविकारी
जिन आज्ञाको अनुसरिये० ॥ आठम ॥ ४ ॥
धर्म शुकल सुध्यान के आठ, भेद ध्यावो सदा होय ठाठ
आर्त्त रौद्र कुध्यान न धरिये० ॥ आठम ॥ ५ ॥
देववन्दन गुण समारा, प्रतिक्रमण विना अतिचारा
शिव साधन पथ विहरिये० ॥ आठम ॥ ६ ॥
षट साखे कर पचखाण, चढिये क्रमश गुणठाणा
ब्रह्मचर्य सुगुण आचरिये० ॥ आठम ॥ ७ ॥
आठमास करो आठवर्ष, शुभ भाव सहित तप हर्ष
सुदर शिव रमणी वरिये० ॥ आठम ॥ ८ ॥
पूरण तप पुण्य विलासा, चढते चित्त अति उल्लासा
उद्यापन उत्सव करिये० ॥ आठम ॥ ९ ॥
सुखसागर श्री भगवाना, हरि पूज्य सुपुज्य प्रधाना
पद पा नहीं मोह से डरिये० ॥ आठम ॥ १० ॥
तप निर्मलता गुणहेतु, भवसागर तारक सेतु
कीरति सुकवीन्द्र उचरिये० ॥ आठम ॥ ११ ॥

पंचमी का बड़ा स्तवन

प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल ज्ञान उपाय । पंचमी तप भणूं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥१॥ चउवीसमो जिनचंद, केवलज्ञान दिणंद । त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ ज्ञान वडूं संसार, ज्ञान मुगति दातार । ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो सद्दह्यो ए ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश । ज्ञान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण भगवती सूत्र प्रमाण । ज्ञानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास । नारकीने सही ए, कोड वरस कही ए ॥ ६ ॥ ज्ञान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार । किरिया छै सही ए, पण पाछे कही ए ॥७॥ किरिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान । सोनाने सूरो ए, शंख दूधे भर्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पंचमी अक्षर सार । भगवंत भाखियो ए, गणधर साखियो ए ॥६॥

ढाल दूसरी—कालहरा की देशी

पचमी तपविधि सामलो, जिम पामो भव पारोरे। श्री अरिहत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ प० ॥ ॥१॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे। इण षट मासे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरु शाखो रे ॥ प० ॥२॥ देव जुहारी देहरे, गीतारथ गुरु वदीरे। पोथी पूजो ज्ञाननी, सगति, हुवे तो नवीरे ॥ प० ॥ ३ ॥ बेकर जोड़ी मावसु', गुरुमुख करो उपवासा रे। पचमी पडिक्कमणो करो, पढो पडित गुरु पासो रे ॥प०॥४॥ जिण दिन पचमी तप करो, तिण दिन आरभ टालो रे । पचमी स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचारिज पिण पालो रे ॥ प० ॥ ५ ॥ पाच मास लघु पचमी, जीवजीव उत्कृष्टी रे। पाच वरस पाच मासनी, पचमी करो शुभ दृष्टि रे ॥प०॥६॥

ढाल तीसरी—उल्लालेकी देशी

हुवे भवियण रे पचमी ऊजमणो सुणो, घर सारु रे वारू धन खरचो घणो। ए अवसर रे आवता वलि

दोहिलो, पुण्य जोगे रे धन पामंता सोहिलो ॥ (उल्लालो) सोहिलो वलिय धन पामंता परण धर्मकाज किहां वली, पंचमी दिन गुरु पास आवो कीजिये काउस्सग रली, त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीको देई पुस्तक पूजिये, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजिये ॥ १ ॥ (ढाल)— सिद्धान्तनी रे पाँच परत वींटांगणां, पाँच पूठारे मुखमल सूत्र प्रमुख तणां। पाँच डोरारे लेखण पाँच मजीसणा, वासकूंपारे कांबी वारूवतरणा ॥ (उल्लालो)—वतरणा वारू वलि य कमली पाँच झिलमिल अतिभली, स्थापनाचारिज पाँच ठवणी मुहपत्ती पडपाटली। पटसूत्र पाटी पंच कोथली पंच नवकार-वालियाँ, इण परे श्रावक करे पंचमी ऊजमणुं उजवालियाँ ॥२॥ (ढाल)—वलि देहरेरे स्नात्र महोत्सव कीजिये, घर सारूरे दान वलि तिहाँ दीजिए। प्रतिमाजीनेरे आगल ढोवणुं ढोइए, पूजानाँरे जे जे उपगरण जोइये ॥ (उल्लालो)—जोइये उपकरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरती मंगल थाल दीवो धूपधाणुं सार ए। घनसार केशर अगर सुखड अंगलूहणो दीसए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ (ढाल)—पंचमीतारे साहम्मी सर्व जिमाडियें,

रात्रि जोगेरे गीत रसाल गवाडिये । इण करणीरे करता ज्ञान आराधिये, ज्ञान दरिसणरे उत्तम मारग साधिये ॥ (उल्लालो)—साधिये मारग एह करणी ज्ञान लहिये निरमलो, सुरलोक ने नरलोकमांहि ज्ञानवंत ते आगलो । अनुक्रमे केवलज्ञान पामी शाश्वता सुख जे लहे, जे करे पंचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥४॥ (कलश) एम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान जिणेसरो, मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत अतुल बल अलवेसरो । जयवंत श्री जिनचन्दसूरिज सकलचंद नमसियो । वाचनाचारिज समयसुन्दर भगति भाव प्रशंसियो ॥ ५ ॥

॥ एकादशी का वड़ा स्तवन ॥

समवरण बैठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्री अरिहंत । बारे परषदा बैठी जुडी, मिगसिर शुदि इग्यारस वडी ॥१॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवलज्ञान । अर दीक्षा लीधी रूचडी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनु केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान । ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुवे तिमहीज । पचासनी संख्या परगडी

॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसो कल्याणक थाये तेम । कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी ॥मि० ॥५॥ अनन्त चोवीसी इणपरें गिणो, लाभ अनन्त उपवासाँ तणो । ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मौनपणे रह्या श्री मल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ। मौनतणी प्रवृत्ति इम पडी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसह लीजिये, चोविहार विधिसुं कीजिये । पण परमाद न कीजे घडी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजे उपवास, जावज्जीव पण अधिक उलहास । ए तिथि मोक्ष तणी पावडी ॥ मि० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यारे इग्यार । करो काउस्सग गुरु पाये पडी ॥ मि० ॥ ॥१०॥ देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजीजे मनरली । मुगतिपुरी कीजे ढुकडी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व । व्रत पच्चक्खाण करो आखडी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहु मन गमे; समयसुन्दर कहे करो घ्यावडी ॥ मि० ॥१३॥

श्रीवीरजिन विनतिरूप—श्रमावस का स्तवन ॥

वीर सुणो मोरी विनती, कर जोडी हो कहु मननी वात । बालकनी परे विनवु, मोरा स्वामी हो तुमे त्रिभुवन तात ॥ वीर० ॥ १ ॥ तुम दरशण विण हु भम्यो, भवामाहेहो स्वामी समुद्र मझार । दु ख श्रनता मै सह्या, ते कहेता हो किम श्रावे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपकारी तू प्रभु, दु ख भाजे हो जग दीनदयाल । तिण तोरे चरणे हु श्रावीयो, स्वामी मुजने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ६ ॥ श्रपराधी पिण उद्धर्या, तें कीधी हो करुणा मोरा स्वाम । परम भगत हु ताहरो, तेने तारो हो नहीं ढीलनो काम ॥ वी० ॥४॥ शूलपाणि प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझने उपसर्ग । डक दीयो चण्डकोसीये, तें दीधो हो तसु श्राठमो स्वर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशालो गुण हीनडो, जीणे बोल्या हो तोरा श्रवरणवाद । ते बलतो तें राखियो, शीतल लेश्या हो मूकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छे इन्द्रजालीयो, इम कहिता हो श्रायो तुम तीर । ते गौतमने तें कीयो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, जे झगड्या हो तुझ साथ जमाल । तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥

॥८॥ ऐमतो ऋषि जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटोनी पाल । तिरती मूकी काचली, तें तार्यो हो तेहने ततकाल ॥ वी० ॥ ६ ॥ मेघकुमर ऋषि दुहव्यो, चित्त चूको हो चारित्रथी अपार । एकावतारी तेहने तें कीधो हो करुणा-भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ वारे वरस वेश्या घरे रह्यो, मूकी हो संयमनो भार । नंदिषेण पिण उद्धर्यो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वसियो वरस चौवीस । ते पण आर्द्रकुमारने, तें तार्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥१२॥ राय श्रेणिक, राणी चेलणा, रूप देखी हो चित्त चूका जेह । समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ व्रत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसह हो नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिक रायने ते कीधो हो स्वामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उद्धर्या, कहुं तोरा हो केता अवदात । सार करो हवे माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी बात ॥वी०॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले, नहीं तेहवो हो मुझ दरसन नाण । पिण आधार छ एटलो, एक तोरो हो धरूं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥१६॥ मेह महीतल वरसतो, नवि जोवे हो सम विषमी ठाम । गिरुआ सहिजे गुणकरे,

स्वामी सारो हो मोरा वाछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामे सुखसपदा, तुम नामे हो दुख जावे दूर । तुम नामे वाछित फले, तुम नामे हो मुझ आणदपूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ (कलश)—इम नगर जेसलमेर मडण तीर्थंकर चौवीसमो, शासनाधीश्वर सिंह लछन सेवता सुरतरु समा । जिनचन्द त्रिशला मात नन्दन सकलचन्द कलानिलो, वाचनाचारिज समयसुन्दर सथुण्यो त्रिभुवनतिलो ॥१६॥

पूर्णिमा का स्तवन ॥

श्रीसिद्धाचल मडण स्वामीरे, जगजीवन अतरजामीरे । एतो प्रणमु हु शिरनामी, जात्रीडा जाणा नवाणु करियेरे- एतो करिये तो भवजल तरिये ॥ जा० ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेश्वर रायारे, जिहा पूर्व नवाणु आयारे । प्रभु समवसर्या सुखदाया ॥ जा० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणु रे, पाच कोडीसु पुण्डरीक जाणु रे । जे पाम्या पद निरवाणु ॥जा० ॥३॥ नमि विनमि राजा सुरा साते रे, बे बे कोडी साधु सघातेरे । एतो पहोता पद लोकाते ॥जा० ॥४॥ काति पूनमे कर्मने तोडीरे, जिहा सिद्धा मुनि दश कोडीरे । ते तो वदो बे कर जोडो ॥ जा० ॥५॥ इम भरतेसरने पाटेरे, असख्याता मुनि

थिर थाटेरे। पाम्या मुगति रमणी ए वाटे ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवाररे, थावच्चासुत सुखकाररे। सयपंच सैलग अणगार ॥ जा० ॥७॥ वली देवकी सुत सुजगीसरे, सिद्धा बहु जादव वंशरे। ते प्रणमुं रे मन हंस ॥ जा० ८॥ पांचे पांडव एणे गिरि आयारे, सिद्धा नव नारद ऋषि रायारे। वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जा० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंतरे, जिहां सिद्धा साधु अनन्तरे। इम भाषे श्रीभगवंत ॥ जा० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नहीं कोयरे, तीरथ सघला मैं जोयरें। जे फरस्यां पावन होय ॥जा० ॥११॥ एकल आहारी सचित्त परिहारीरे, पदचारी ने भूमिसंथारीरे। शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ जा० ॥१२॥ एम छहरी जे नर पालेरे, बहु दान सुपात्रे आलेरे। ते जनम मरण भय टाले ॥ जा० ॥१३॥ धन धन ते नर ने नारीरे, भेटे विमलाचल एक तारीरे। जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जा० ॥ १४ ॥ श्री जिनचन्दसूरि सुपसायेरे, जिनहर्ष हिए हुलसायेरे। इम विमलाचल गुण गाये ॥ जा० ॥१५॥

गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी का स्तवन ॥

कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजे ॥ अ० ॥ ऐसी भाति करो मेरे सद्गुरु, ज्यु मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अजिल भर पीजे। सुरतरु सम दरिसण विन देख्या, कहो नयण किम रिझे॥ कु०॥२॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजे। परम भगत गुरुराज तुम्हारो, अपनो कर जाणीजे ॥कु०॥३॥

॥ श्री गौतमस्वामीजी का रास ॥

वीर जिनेसर चरणकमल, कमला कय वासो, पणमवि पभणिसु सामीसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥१॥ जंबुदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण, मगह देस सेणिय नरेस, रिऊ दल वल खंडण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहा गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥२॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रुव,

नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥३॥ नयण वयण कर चरण जिणवि, पंकज जल पाडिय, तेजहि तारा चन्द्र सूर, आकाश समाडिय । रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥४॥ पेक्खवि निरूवम रूव जास, जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय । अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गंग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करिय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥६॥वस्तु॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुवहि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥७॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण

दीठे मिथ्यामति छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बइठा, ततखिरण मोह दिगत पइट्ठा ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा। देवदुदुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि विरचे तिहा देवा, चउसठ इन्द्रज मागे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रुवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसता, ओजन वारिग वखारग करता । जाणवि वद्धमारग जिरण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कत समोहिय जलहलकता, गयरण विमारगहि ररगरगकता । पेवखवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवते ॥ १३ ॥ तीर तरडक जिम ते वहुता, समवसरण पुहुता गहगहता । तो अभिमाने गोयम जपे, इरण अवसर कोपे तणु कपे ॥१४॥ मुढा लोक अजाण्यू बोले, सुर जाणता इम काइ डोले । मो आगल कोइ जाण भरणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिरणवर वीर जिरणवर नारण सपन्न, पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह ससार तारण, तिहि देवहि निम्महिय, समवसरण वहु सुक्ख कारण, जिरणवर उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार, सिंहासरण सामो ठव्यो, हुओ सुजय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो

थिर थाटेरे। पाम्या मुगति रमणी ए वाटे ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवाररे, थावच्चासुत सुखकाररे। सयपंच सैलग अणगार ॥ जा० ॥७॥ वली देवकी सुत सुजगीसरे, सिद्धा बहु जादव वंशरे। ते प्रणमुं रे मन हंस ॥ जा० ८॥ पांचे पांडव एणे गिरि आयारे, सिद्धा नव नारद ऋषि रायारे। वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जा० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंतरे, जिहां सिद्धा साधु अनन्तरे। इम भाखे श्रीभगवंत ॥ जा० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नहीं कोयरे, तीरथ सघला मैं जोयरे। जे फरस्यां पावन होय ॥जा० ॥११॥ एकल आहारी सचित्त परिहारीरे, पदचारी ने भूमिसंथारीरे। शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ जा० ॥१२॥ एम छहरी जे नर पालेरे, बहु दान सुपात्रे आलेरे। ते जनम मरण भय टाले ॥ जा० ॥१३॥ धन धन ते नर ने नारीरे, भेटे विमलाचल एक तारीरे। जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जा० ॥ १४ ॥ श्री जिनचन्दसूरि सुपसायेरे, जिनहर्ष हिए हुलसायेरे। इम विमलाचल गुण गाये ॥ जा० ॥१५॥

गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी का स्तवन ॥

कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजे ॥ अ० ॥ ऐसी भांति करो मेरे सद्गुरु, ज्यु मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजिल भर पीजे। सुरतरु सम दरिसण विन देख्या, कहो नयण किम रिझे ॥ कु०॥२॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजे। परम भगत गुरुराज तुम्हारो, अपनो कर जाणीजे ॥कु०॥३॥

॥ श्री गौतमस्वामीजी का रास ॥

वीर जिनेसर चरणकमल, कमला कय वासो, पणमवि पभणिसु सामीसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकत करिवि, निसुणहु भो नविया, जिम निवसे तुम देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥१॥ जंवुदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण, मगह देस सेणिय नरेस, रिऊ दल वल खंडण। धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहा गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥२॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रुय,

नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥३॥ नयण वयण कर चरण जिणवि, पंकज जल पाडिय, तेजहि तारा चन्द्र सूर, आकाश भमाडिय । रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥४॥ पेक्खवि निरूवम रुव जास, जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय । अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गंग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करिय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्या-मति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसो-हिय ॥६॥वस्तु॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुवहि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥७॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण

दीठे मिथ्यामति छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बइठा, ततखिण मोह दिगत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा। देवदु दुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि विरचे तिहा देवा, चउसठ इन्द्रज मागे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसता, जोजन वाणि वखाण करता । जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कत समोहिय जलहलकता, गयण विमाणहि रणरणकता । पेखवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवते ॥ १३ ॥ तीर तरडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता । तो अभिमानें गोयम जपे, इण अवसर कोपे तणु कपे ॥१४॥ मुढा लोक अजाण्यू बोले, सुर जाणता इम काइ डोले । मो आगल कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण सपन्न, पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह ससार तारण, तिहिं देवहि निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिणवर उज्जोय करें, तेजहि कर दिनकार, सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ सुजय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो

घणमान गजे, इन्दभूइ भूदेव तो, हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो। जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो, दह दिस देखे विबुध बधू, आवंती सुररम्भ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्रातिहारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणि राय तो, चित्त चमक्किय चिंतवे ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस-किरण सम वीरजिण, पेखिअ रूप विशाल तो, एह असंभव संभवे ए, साचो ए इन्द्रजाल तो। तो बोलावइ त्रिजग-गुरु, इन्द्रभूइ नामेण तो, श्रीमुख संशय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥१६॥ मान मेलि मद ठेलि करी, भगतेंहि नाम्यो सीस तो, पंचसयांसु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो। बंधव संजम सुणिवि करी, अगनिभूइ आवेय तो, नाम लेंई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेसे भुवन गुरु, संयम सुं व्रत बार तो। बिहुं उपवासे पारणो ए, आपण पे विहरंत तो, गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो

तुरतो, जे जे ससासामि सवे, चरमनाह फेडे फुरत तो, बोधिबीज सज्झाय मने, गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय सपत्त ॥२२॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो। दीठा गोयम साम, जो निय नयणे अमियभरो। समवसरण मझार, जे जे समा ऊपजे ए, ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो॥ २३॥ जिहा जिहा दीजें दीख, तिहा तीहा केवल ऊपजे ए, आप कनें अणहूँत, गोयम दीजें दान इम। गुरु ऊपर गुरू भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय, इणि छल केवलनाण, रागज राखे रग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद सेल, वदे चढि चउवीस जिण। आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सो य मुनि। इय देसणा निसुणेइ गोयम गणहर सचरिय, तापस पन्नरसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तप सोसिय निय अग, अम्हा सगति न ऊपजे ए। किमचढसे दढसे दढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए। गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवेए। तो मुनि चढियो वेग, आलवबि दिनकर किरण॥ २६॥ कचण मणि निप्फन्न दडकलश धजवड सहिय, पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरहेसर महिय। निय निय काय प्रमाण, चिहुँ दिसि सठिय जिणह बिंब, पणमवि

मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥ वयर—सामीनो जीव, तिर्यक्जृंभक देव तिहां, प्रतिबोध्या पुंडरीक, कंडरीक अध्ययन भणी। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खांड घृत आण, अमिय बूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे। साचा गुरु संयोग, कवल ते केवलरूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह; समवसरण प्राकारत्रय। पेखवि केवलनाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम। जिणवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥३०॥वस्तु॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण सम्पन्न, पन्नरह सय परिवरिय। हरिय-दुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव। छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास॥ सामियो ए वीर जिणिन्द, पुनमचन्द जिम उल्लसिय, विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस बहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय, आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए

गोयम सामि, देवसर्मा प्रतिबोध करे, आपणो ए तिसला देवि, नदन पुहतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए, तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥३३॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासु टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिमलु ए किधलु सामि, जाण्यु केवल मागसे ए, चिन्तव्यु ए वालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥३४॥ हु किम ए वीर जिणिंद, भगतिहि भोले भोलव्यो ए, आपणो ए उचलो नेह, नाह न सपइ साचव्यो ए। साचो ए वितराग, नेह न हेजें लालियो ए, तिण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतु ए जो उल्लट्ठ, रहितु रागे साहियु ए, केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज ऊमाहियुं ए। तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए। गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सवसिय, तीस वरस सयम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमसिय। राजगृहो नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाउ। सामो गोयम गुणनीलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥३७॥ भास ॥ जिम

सहकारे कोयल टहुकें, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चंदन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहियाँ लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥३८॥ जिय मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरू वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव वने। जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल घनें ॥३९॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहस करो। पंचानन जिमि गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिनमन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥४१॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज कामकुम्भ सहु वशि हुआए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणववखर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजें, श्रीमती सोभा संभवे ए। देवह धूरि अरिहंत नमीजे, विनयपहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥४३॥ परघर वसतां कांई करीजे,

देस-देसातर वाई ममीजे, कवण काज आयास करो । प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहा घरे ए ॥ ४४ ॥ चउदह सय वारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो । आदिहिं मगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए । विनयवत विद्या भडार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए । गोयम सामीनो रास भणीजे, चउविह सघ रलियाइत कीजे रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४६॥ कुकुम चदन छडा दिवराओ, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए । तिहा, वेसी गुरु देशना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित नित मगल उदय करो ॥ ४७ ॥ समाप्त ॥

जैन तिथि मन्तव्य

पूज्यपाद श्रीमद्हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराज कृत तत्त्वतरगिणी ग्रन्थ मा तथा श्रीउमास्वातिजी महाराज कृत आचारवल्लभादि ग्रन्थो मा यह फरमान है —

तिहि पड़णे पुव्वा तिहि । कायव्वा जुत्त धम्म कज्जेव ।
चाउद्दसी विलोवे । पुण्णमिश्रं पक्खिपडिक्कमणं ॥ १ ॥

अर्थः—तिथि का क्षय हो तो पूर्व तिथि मे धर्मकार्य करना युक्त है, चौदस का क्षय हो तो पूर्णिमा को पक्खी प्रतिक्रमण करना चाहिये ।

व्याख्या—तिथि मात्र मे से कोई तिथि का क्षय हो तो उस तिथि सम्बन्धी धर्मकृत्य उसकी पूर्व तिथि में करना योग्य है; परन्तु यदि चतुर्दशी का क्षय हो तो पूर्णिमा या अमावस्या मे पाक्षिक प्रतिक्रमण करना चाहिये, कारण कि समीप मे रही हुई पर्व तिथि में **(पूर्णिमा—अमावस्या)**को छोड़कर अपर्व तिथि में पर्व तिथि का आराधना करना युक्त नहीं है ।

कदाचित यहां पर कोई महानुभाव यह प्रश्न करे कि यदि पर्वतिथि का आराधना अपर्वतिथि में नहीं करना तो अष्टमी आदि के क्षय होनेपर तत्सम्बन्धी धर्मकृत्य सप्तमी आदिको करना कैसे उचित हो सकेगा ?

उतरः—प्रिय सज्जनवरो ! हमको पर्वतिथि का कृत्य पर्वतिथि में ही इष्ट है; परन्तु अनन्तर पर्वतिथि का योग न होने से पूर्व में रही हुई सप्तमी आदि में ही करना योग्य है; मगर नौमी आदि मे करना उचित नही ।

पर्वतिथि का क्षय हो तो समीप मे रही हुई पर्वतिथि मे तत्सम्बन्धी धर्मकृत्य करना इस ही नियम के अनुसार होता है। सांवत्सरिक पर्व की चौथ का क्षय हो तो पचमी को सावत्सरिक प्रतिक्रमण करना, मगर तीजको नहीं यह कथन क्षयतिथि सबन्धी हुआ।

तिहि वुढ्ढिए पुव्वा गहिया । पडिपुन्नभोगसजुत्ता ॥
इयरा वि माणणिज्जा । पर थोवात्ति न तत्तुला ॥ १ ॥

तिथि की वृद्धि हो तो पूर्वतिथि में धर्मकृत्य करना उचित है दूसरी तिथि भी पर्वरूप मानी जाती है, परन्तु अल्परूप मे नतु पूर्व सदृश।

व्याख्या—पन्द्रह तिथियो मे कोई तिथि बढे तो उस सम्बन्धी धर्मकृत्य पूर्व तिथि मे करना, कारण कि समीप की पर्वतिथि को छोड़कर दूरवर्तिनी पर्वतिथि को ग्रहण करना यह तत्व दृष्टि से अमान्य है।

कोई महोदय यहा पर ऐसा बोलें कि सूर्योदय तिथि अपने तो मान्य है, फिर दूसरी मानने मे क्या बाधा है ?

उत्तर —जिज्ञासु महाशयो ! आप स्वय विचार कर सकते है कि सूर्योदय व अस्त दोनो टाइम मे रही हुई पूर्ण तिथि को छोड़-कर अल्प समयवर्तिनी द्वितीय तिथि को मानना कहाँ तक ठीक हो सकता है ? पण्डित जन विचारें।

(विशेष विचार)

मास प्रतिवद्ध जितने पर्व है वे सव मास की वृद्धि में कृष्णपक्ष सम्वन्धी प्रथम मास मे व शुक्लपक्ष संवन्धी द्वितीय मास में आराधन करना चाहिये, यह शास्त्रसम्मत व वृद्ध परपरानुसार मान्य है।

पर्युषणपर्व दिनप्रतिवद्ध होने से आषाढ़ चौमासी से पचासवे दिन करना ही शास्त्रसम्मत व युक्तियुक्त है।

सूतकविचार

पुत्र जन्म होनेसे दिन १० दस सूतक। पुत्रीजन्म होने से दिवस ११ ग्यारह सूतक। जिस स्त्रीके पुत्र पुत्री हो उसके एक महीने तक सूतक। गाय, भैंस, घोड़ी, साँढ़ आदि अपने घर मे व्यावे तो दिन एक सूतक। अपने निश्रा में रहे हुवे दास दासो के पुत्र पौत्रादि का जन्म व मरण हो तो दिन ३ तीन सूतक। जितने महीने का गर्भ गिरे उतने दिन का सूतक।

मृत्यु होनेसे दिन १२ बारह सूतक। पुत्र होते ही मृत्यु पावे तो दिन १ सूतक। परदेश में मृत्यु हो तो दिन १ सूतक। गाय, भैंस, घोड़ा-ऊंट वगैरह का मृतक कलेवर जहाँ तक बाहर नही ले जाय वहां तक सूतक।

जिसके घर जन्म मरण का सूतक हो वह बारह दिन देवपूजा न करे। मृतक के घर का जो मूल खाधिया हो वह १० दिन और

अन्य घर का ३ दिन देवपूजा न करे। जो मृतक को छुआ हो तो चौवीस प्रहर प्रतिक्रमण न करे। यदि सदा का अखड नियम हो तो समता भाव से सवर मे रहे, परन्तु मुख से नवकार मन्त्र का भी उच्चारण नही करे। स्थापनाचार्यजीको हाथ न लगावे। जो मृतक को नही छुआ हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे। अगर किसी को न छुआ हो तो स्नान से शुद्ध होकर करे।

भस के बच्चा हो तब १५ पन्द्रह दिन पीछे दूध पीना कल्पे। गायके बच्चा हो तब १७ सतरा दिन पीछे दूध पीना कल्पे। बकरी के जब बच्चा हो तब ८ आठ दिन पीछे दूध पीना कल्पे।

ऋतुवती स्त्री चार दिन भाडादिको नही छुवे, चार दिन प्रतिक्रमण न करे, पाच दिन देवपूजा न करे।

रोगादि के कारण कोई स्त्री को तीन दिन पीछे रक्त बहता दिखे तो असझाय नही विवेकपूर्वक पवित्र होकर ४ पाच दिन पीछे स्थापना पुस्तक छुवे जिन दर्शन करे, अग्रपूजा करे परन्तु अगपूजा न करे, साधु को पडिलाभे।

ऋतुवती तपस्या करे सो सफल होती है परन्तु जिनपूजा, प्रतिक्रमणादि क्रिया सफल नही होती, ऐसा 'चचरी' ग्रन्थ मे कहा है।

जिसके घर मे जन्म मरणका सूतर हो वहा, १२ दिन साधु आहार पाणी न वहरे—सूतकवाले के घर के जलमे १२ बारह दिन

तक देवपूजा न करे-निशीथ सूत्र के सोलमें उद्देश्य में सूतकवाले का घर दुर्गमनीय कहा है ।

गाय के मूत्रों मे २४ प्रहर पीछे, भैसके मूत्र मे १७ प्रहर पीछे, गाडर, गधेडी, घोड़ी के, मूत्र में ८ प्रहर और नर-नारी के मूत्र मे अन्तरमुहुर्त पीछे संमुर्छिम जीव उत्पन्न होते हैं—विशेष ग्रंथान्तर से जानना ।

अथ सज्झाय संग्रह

॥ निंदावारक सज्झाय ॥

॥ निंदा म करजो कोईनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा-पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करताँ न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥१॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मैंलमां धोयाँ लूगडाँ रे, कहो केम ऊजलाँ होय रे ॥ निं० ॥ आप संभालो सहुको आपणोरे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुण सहु भर्या रे, केहनाँ नलीयाँ चुए केहनाँ नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदाकरो तो करजो आपणी रे, जेम

छुटकवारो थाय रे, ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहूको तणो रे, जेहमाँ देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरे सुख पामशो रे, समयसुन्दर सुखकारे ॥ नि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अनाथी ऋषि की सज्झाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढयो, पेखियो मुनि एकत ॥ वर रूप-कान्ते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतत ॥१॥ श्रेणिकराय हु रे अनाथी निग्र थ ॥ तिणमे लिधो रे साधुजीनो पथ ॥ श्रे० ॥ ए आकणी ॥ इण कोसबी नगरी वसे, मुझ पिता परिगल धन्न ॥ परवार पूरें परवरयो हु छु, तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुझ वेदना, उपनी ते न खमाय ॥ माल पिता सहु झुरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय॥श्रे०॥३॥ गोरडी गुण मणि ओरडी, छोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा मे सही, नहीं कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥४॥ बहुराजवैद्य बुलाईया, कीधला कोडी उपाय ॥ बावन चदन चरचीया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥५॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउ सजमभार ॥ इम चितवता वेदना गई, व्रत लीवो रे हरष अपार ॥श्रे०॥ ॥६॥ जगमाहे को केहनो नहि, ते भणी हु रे अनाथ ॥

वीतरागनो धरम वाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अणगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वाँदी पहुंचे रे नगर मझार ॥ श्रे० ॥८॥ मुनिवर अनाथी गुण गावताँ, कर्मनीतूटे कोडि ॥ गणि समयसुन्दर तेहना, पाय वाँदे रे वे कर जोडि ॥ श्रे० ॥९॥ इति ॥

॥ श्री समकित की सज्झाय ॥

समकित नवि लह्यु रे, एतो रुल्यो चतुर्गतिमांहे ॥ त्रसथावरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ॥ तीन-काल सामायिक करतां सुध उपयोग न साध्यो ॥ समकित० ॥१॥ झूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरीकोपण त्यागी ॥ व्यावहारादिक महानिपुण भयो पण, अंतरदृष्टि न जागी ॥ समकित० ॥२॥ उरधभुजा करी उंधो लटके, भसमी लगाय धूम गटके ॥ जटा जूट सिर मूंडे जूठो, बिन श्रद्धा भव भटके ॥ समकित० ॥ ३ ॥ निजपरनारी त्यागज करके, ब्रह्मचर्य व्रत लीधो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सिधो ॥समकित०॥४॥ बाह्य क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्यलिंग धर लीनो ॥ देवचन्द्र कहे या विध तो हम बहुत वार कर लीनो ॥ समकित० ॥५॥